(2)

सन्धान—4

(मैथिली कथा पर केन्द्रित)

सन्धान-कथा पुरस्कार

योजना

तीस वर्ष सँ कम बएसक कथाकार लोकनि सँ अनुरोध जे 31-3-99 धरि सन्धान पुरस्कार योजना मे अपन मैथिली कथा पठाबी । निर्णायक मण्डल द्वारा चयनित कथाके प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार देल जायत । नगद राशिक संग तीनू कथा सन्धान—4 मे छपत ।

विशेष विवरण लेल सन्धान-3 देखू।

सम्पादक

संधान

2



मिथिला समाजक प्रगतिशील चेतनाक जरूरी पोथी

सन्धान

सम्पादक

अशोक

मुद्रक एवं प्रकाशक : मित्रम् प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, भिखना पहाड़ी, नयाटोला, पटना–4

सम्पादकीय सम्पर्क: सी–407, आफिसर्स फ्लैट बेली रोड, पटना–800001, दूरभाष : 230 144

मूल्य : 20 टाका

प्रकाशन, संचालन एवं सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक

सन्धान - 2

सन्धान-2

वर्ष 2 अंक 2 दिसम्बर 1998

सम्पादकीय

अस्मिताक बात

अस्मिता संकट के बात एखन रहरहां कएल जा रहल अछि। खासक' के मैथिल अस्मिताक सन्दर्भ मे । ओना अस्मिताक संकट एहीठाम टा उपस्थित नहि भेल अछि। आनो क्षेत्र, प्रान्त आ देश मे उठि रहल अछि । उठाओल जा रहल अछि । ई राजनीतिक प्रश्न बनि गेल अछि । सांस्कृतिक प्रश्न सँ बेशी । आब एहि आधार पर राज्य आ प्रान्त बटि रहल अछि । आर्थिक विकास के सांस्कृतिक विकासक संग जोड़ि क' देखल जा रहल अछि। ध्यान देला पर ज्ञात होइत अछि जे अस्मिताक सम्बन्ध क्षेत्र विशेष सँ जोड़ल अछि । ओहि क्षेत्र विशेषक अस्मिता ओहिठामक मूल निवासी, आदिवासीक जीवन शैली आ जीवनक प्रति ओकर दृष्टिकोण पर आधारित अछि । मुदा ई क्षेत्रीय अस्मिताक प्रति जागरण सए-दू सए वर्ष सँ लगातार चलैत रहल अछि। कतोक ठाम अहूँ सँ बेशी दिन सँ । एहि आधार पर ओहि क्षेत्रक सभ जाति-वर्ग आ धर्मक लोक एकजुट होइत रहल अछि। मुदा मैथिल अस्मिताक संग से बात नहि अछि। तैं एकैसम शताब्दीक द्वारि पर ठाढ़ हमरा लोकनि किछु किंकर्तव्यविमूढ़ सन भ' गेल छी।

अस्मिता संकट के बातक एक दोसर सन्दर्भ सेहो अछि । ई सन्दर्भ अछि वैश्वीकरणक । वैश्वीकरणक विहाड़ि सँ सेहो अपन परिचिति उधियाइत सन बुझाइये। विश्वबाजार आ विश्वग्रामक बढ़ैत थाप अपन केवाड़ पर स्पष्टतया सुनल जा सकैए। लगैए जेना केवाड़ चरमरा के टूटि जायत । घर, परिवार, समाज, व्यक्ति सभ के लगातार खण्डित करबाक साजिश चलैत रहलए । सभ मे सहस्त्रो छेद भ' चुकल अछि । वास्तव मे ई साजिश मनुक्ख कँ ओकर सम्पूर्ण परिवेश सँ काटि क' ओकरा मात्र हाड़-मांसक यन्त्र बनब' चाहैत अछि । मनुष्य के भविष्य मे सुखी बनेबाक नाम पर आइ ओकर सौन्दर्य-प्रेम के कोनो ने कोनो बहाने थकुचि देब' चाहैत अछि । किएक त' ई स्थिति वैश्वीकरणक अनुकूल होयत । मनुक्ख बजारक समक्ष आत्म समर्पण क' देत ।

वैश्वीकरणक आक्टोपस सँ पूर्व उपनिवेशवादक डायनासोर सेहो हमरा लोकनिक लग संकट उपस्थित केने छल । वास्तव मे ई अस्मिताक संकट ओकरे देन थिक । उपनिवेशवाद मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिता के विस्मृति के अन्धकार मे ढकेलि देबाक पूरा प्रयत्न केलक । बहुत अंश मे ओ सफलो भ' गेल। उपनिवेशवाद के एहि मे सहयोग केलक ओकर देशी एजेंट-सामन्तवाद । ई दूनू मीलि लोकक पराभव के आर बढ़ौलक। दयनीय आर्थिक स्थिति आ अनवरत बढ़ैत शोषण सँ ध्यान हटेबाक लेल 'पूर्व जन्मक पापक भोग'के उपस्थित केलक । ई अकारण नहि अछि जे जाहि मैथिली साहित्य मे पाँच सए वर्ष धरि 'राम' छिटफुट एकाधठाम छोड़ि कत्तहु नहि दृष्टिगोचर होइत छथि से महराज लक्ष्मीश्वर सिंहक आदेश सँ कविश्वर चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायण' मे अवतरित भेलाह । ई वैह महराज लक्ष्मीश्वर सिंह छथि जे मैथिली के कान पकड़ि अपन राज-काज सँ हटा देने छलाह । जिनकर शिक्षा-दीक्षा 1860 ई० मे कोरट लागि गेलाक कारणे अंग्रेज प्रभुक द्वारा सम्पन्न भेल छल ।

मिथिलाक आधुनिक इतिहास लिखल जेबाक खगता सेहो एखन नीक जकाँ अनुभव कएल जा रहल अछि । अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक मिथिलाक इतिहास दृष्टि सम्पन्नताक संग जँ लिखल जाय त' स्पष्ट भ' सकत जे गड़बड़ी कत' भेल। गड़बड़ी एहि पछिला पचास वर्ष मे सेहो भेल अछि । कने बेसिए भेल अछि । मुदा से गड़बड़ी अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक नींव पर ठाढ़ छल । ओकर सभ दुर्गुण ओ कमजोरी के लदने । ई बात आब क्रमशः निर्विवाद भेल जा रहल अछि, जे जाहिकाल मे आनठाम (अपन सटले बंगाल मे) अंग्रेज-अंग्रेजीक प्रभावें पुनर्जागरण भ' रहल छल। बंगाली के अपन अस्मिता सँ जोड़ि क' देखब प्रारम्भ भ' गेल छल । अपन-अपन मातृभाषा मे शिक्षाक व्यवस्था भ' रहल छल । आधुनिक वोधक रूप मे समानताक बात कएल जा रहल छल । हमरा सभ आर बेसी कूपमण्डूक आ रूढ़िवादी बनौल जा रहल छलहुँ । परम्परानिष्ठ बनबाकक अहंकार मे संस्कृत के आर चिहुटि के पकड़ि रहल छलहुँ । एतबे नहि राष्ट्रीयताक नाम पर कृत्रिम हिन्दुस्तानी भाषा सेहो हमरा सभ पर लादल जा रहल छल । ई शिक्षाक प्रति वितृष्णा उत्पन्न क' रहल छल । जखन सभठाम मातृभाषा मे शिक्षाक अनिवार्यता के बूझल जा रहल छल । व्यक्तित्व निर्माण मे मातृभाषाक महत्व अकानल जा रहल रहए । मातृभाषाक माध्यमे अपन संस्कृति, अपन अस्मिता लोक के फरीछ भ' रहल छल । हमरा सभके आत्म-विस्मृति क गर्त्त

मे धकेलल जा रहल रहए । एक सए वर्ष पाछू ठेलल जा रहल छल । ओहीकाल मे हम सभ अपन व्यक्तित्व पर अन्हरजाली लगा रहल छलहुँ । जे क्रमशः व्यक्तित्वहीनता मे पहुँचा देलक । ई व्यक्तित्त्वहीनते हमरा सभके सामूहिक अस्मिता बोध सँ विछिन्न केलक। सौन्दर्यवोध के दूरि केलक ।

मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिता कथी ल' के छल ? एहि विषय पर अध्ययन होयब जरूरी अछि । कर्म पर आधारित जीवन कोना केवल शास्त्र केन्द्रित होइत गेल सेहो विचारब जरूरी अछि । संस्कृतिक समग्रता क्रमशः कोना कृतिके महत्व मे छिन्न-भिन्न भ' गेल ? अन्ततः कृति केन्द्रित सँ कृतिकार केन्द्रित कोना भेल ? भाषा-टीका कएनिहारक नाम हमरा सभके मोन रहल आ समस्त विश्व मे एकाधिकारात्मक वर्चस्व रखनिहार मिथिलाक कलात्मक औद्योगिक परम्परा के विसरि गेलहुँ । एहन विस्मृति कोना भेल ?

की हमरा लोकनिक अस्मिता क्रियाशील जीवन सँ जुड़ल नहि छल ? हाथ आ दिमागक समन्वयक परम्परा मिथिला समाज मे नहि रहल अछि ? कृषि कर्म आ हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा जीविकाक साधन छल । समाजबन्ध एहन मजबूत छल जे कतेको आततायी आएल-गेल । हमरा लोकनिक किछु नहि बिगाडि सकल । अपन विभिन्न नदीक माध्यमे व्यापार-व्यवसाय करैत रहलहुँ । आर्थिक मजबूतिए क आधार पर न्याय आ मीमांसा, आध्यात्मिक चिन्तनक पताका फहराइत रहल । महाकवि विद्यापतिक गीत, सलहेश, लोरिक, दीनाभद्री, नैकबनिजाराक गाथा गबैत, अपन तमाम लोकगीत मे जीवनक प्रति जीवन मे शृंगारक प्रति, प्रेमक प्रति, गुणक प्रति आदर-उल्लास व्यक्त करैत हमरा लोकनि अपन संघर्षशील जीवनी शक्ति के बचाक' रखलहुँ। कतेक रास वस्तु के ग्रहण केलहुँ कतेक वस्तुक त्याग करैत रहलहुँ। हमरा ओहिठाम त' कृष्ण-राधा, शिव-पार्वती, दुर्गा-काली-तारा सभ अपन सर-सम्बन्धिक जकाँ भाए-बहीन, माए जकाँ रहल छथि । सीताकेँ कहियो हमरा सभ देबी नहि मानलहुँ। अपन गामक सुआसीन मानैत रहलहुँ । राम के जमाय बुझैत रहलहुँ । शिव-पार्वती एकदम पारिवारिक-सामाजिक छथि। जीवन मे प्रेम आ श्रृंगारक अभिव्यक्ति लेल कृष्ण आ राधा मात्र एक माध्यम छलथि । ई सभ एहि कारणे छल जे हमरा लोकनि सार्थक, श्रम पर आधारित जीवन के अंगेजने छलहुँ । मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भ होयबा सँ पूर्वहिं सभ किछु टूटि-फूटि गेल । अपन परिचिति पर हम सभ श्रम आ फूसि के

ओहार लगा देलहुँ। ई एहि दुआरे भेल जे विवेक आ उदारता पर आधारित जीवन दर्शन मे अविवेक आ क्षुद्रताक प्रवेश भ' गेल । हमरा लोकनिक (खासक' के मिथिलाक संभ्रान्तवर्ग मं) व्यक्तित्व मे क्षुद्रता आ संकुचन अपन स्थान बनबैत चल गेल । ई सभ भोगवादी दृष्टि सँ उपजल छल जे समाजक मुँह पुरूष लोकनिक राजसत्ता सँ जुड़बाक कारणे भेल । धनक प्रति बढ़ैत लिप्साक कारणे भेल। सामुदायिक, सामूहिक जीवन टुटबाक कारणे भेल । क्रमशः हमरा लोकनि विवेकान्ध होइत गेलहुँ । सुविधा आ भोगवाद जे जमीन्दारी आ सामंती जीवनक कारणे उत्पन्न भेल, समाज के बाँटिक' राखि देलक। जमीनक स्थायी बन्दोवस्ती एकर जड़ि मे छल । जे समाज के वर्ग मे विभाजित क' देलक । जमीन्दार, जेठ रैयत, रैयत, किसान-मजूर मे बँटल समाज मे कमजोर वर्ग पर पराभवक पहाड़ टूटि पड़ल । धार्मिक आ आर्थिक शोषणक चक्र चलैत रहल। धनीक आर धनीक आ गरीब आर गरीब होइत गेल । जमीन से अन्ततः खण्ड-खण्ड मे बँटि गेल । अनुत्पादक होइत गेल। हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा नष्ट क' देल गेल । असमानता आ विषमता बढ़ैत गेल । स्वतंत्रताक वादो एहि सभ मे कोनो कमी नहि आएल । कोनो परिवर्त्तन नहि भेल । समाज मे वैमनस्य आर बढ़िते गेल अछि। एही मे मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिता कतहु हेरा-भोतिया गेल ।

मिथिला आ मैथिलीक बात बहुत विलम्ब सँ आएल । अयबो कएल त' विकलांग भ' क' आएल । सामन्ती जीवन सँ जुड़ल जातिक माध्यम सँ आएल । जेकरा समाज मे बाबू-भैया कहल जाइत छल । जकरा प्रति समाज मे कोनो आदर भाव नहि रहि गेल छल । जकरा लोक अपन पराभव लेल उत्तरदायी मानैत छल। जिनकर जीवन मे विलासिता आ सुविधा-परस्ती, व्यक्तित्वहीनता जड़ि जमा चुकल छल तिनकर मुँह सँ मिथिला-मैथिलीक गप्प सामान्य लोक मे कोनो सुगबुगी नहि अनलक । ई फराक बात अछि जे मिथिला-मैथिलीक आन्दोलन मे किछु विवेकशील आ उदारलोक सभ सेहो छलाह । जिनका यथार्थक सम्यक ज्ञान छलनि। मुदा बहुलांश मे एहने लोक छलाह जे मिथिला-मैथिलीक उपयोग अपन हितक लेल करए चाहैत छलाह । राजा, जमीन्दार के प्रसन्न रखबाक लेल करैत छलाह । हुनका लोकनिक अविवेक आ क्षुद्रता सँ मिथिला-मैथिलीक सार्थक आन्दोलन मिथिलाक सम्पूर्ण समाज के जोड़ि नहि सकल। ओकरा संग सामान्य लोक अपन तादात्म्य स्थापित नहि क' सकल । सामान्य लोकक अस्मिता सँ नहि जुड़ि सकबाक यथार्थ मिथिला-मैथिली आन्दोलनक सभ सँ त्रासद

यथार्थ थिक । मैथिली भाषिक आन्दोलनक स्वर जखन विद्यापति पर्वक माध्यम सँ अभिव्यक्त होयब प्रारम्भ भेल आ संस्थागत रूप पकड़लक त' यैह संकुचित, अविवेकी, क्षुद्र लोकनिक कारणे ओ फेर भोतिया गेल । एक जाति विशेषक संग ओकर भाग्य-दुर्भाग्य जुड़ि गेल । तैं आइ मिथिला-मैथिलीक गप्प खाली ब्राह्मणक गप्प बुझाइत अछि ।

वैश्वीकरणक आक्टोपस सँ युद्ध लेल हमरा लोकनि के विस्मृति के अन्धकार सँ बाहर निकल' पड़त । मिथिला समाजक सामूहिक अस्मिताक तत्व सभके ताकि-हेरि के निकाल' पड़त। आवश्यकतानुसार ओकरा झाड़ि-पोछि के चमकाब' पड़त । जाहि सँ हमर संघर्षक शक्ति आर मजगूत हुअए । हमरा भीतर सुन्दर जीवनक यथार्थ उतरि जाय । मिथिला समाजक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक मूल परम्परा पैघ आ उदार रहल अछि । एहि मे मिथिला समाजक सभ जाति-धर्म-वर्गक योगदान रहल अछि । एहि मे श्रमजीवी लोकनिक पसीनाक सुगन्धि मिलल अछि । जे नित्य सभ विकार आ विकृतिके धो देबाक क्षमता रखैत अछि । क्रियाशील जीवनक यैह सौन्दर्य बोध आ मनुक्खक शुद्ध जीजीविषा वैश्वीकरणक मुखौटा धारण कएने पुनः चल अबैत उपनिवेशवादीक कुत्सित षड़यन्त्र सँ संघर्ष क' सकत । ओकरा पछाड़ि सकत । एहि काज लेल हम पुनः मिथिला समाजक सभ दृष्टि सम्पन्न, उदार आ इमानदार वृद्धिजीवीक, इतिहासज्ञक अर्थशास्त्री, लेखक-रचनाकारक, समाजशास्त्री-मानवविज्ञानीक आह्वान करैत छी ।

x x x

एहि वर्ष हमरा लोकनिक बीच सँ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आ प्रभास कुमार चौधरी अपन शरीर त्यागि अमरत्व मे लीन भ' गेलाह । प्रभास कुमार चौधरी पर सन्धानक एक विशेष अंक एहि अंकक वाद लगले सन्धान-3क रूप मे आबि रहल अछि। यात्रीक अमर कृति 'बलचनमा'क एक सामाजिक-ऐतिहासिक अध्ययन एहि अंक मे हुनका प्रति श्रद्धा निवेदित करैत प्रस्तुत अछि । मैथिलीक दूनू महान रचनाकार के सन्धान क श्रद्धान्जलि!!

—अशोक



पाठकक पन्ना

भाषा, विद्या सँ अधिक अस्मिताक खोज थिक

सन्धान देखि गेलहुँ । अभिजात्य वर्ग कें जन साधारणक एहेन चिन्ता हो जे प्रगतिशील हुअए ई स्पष्ट क' रहल छी । श्री हेतुकर झाक सुझाव मान्य थिक जे मिथिलाक दुइ सांस्कृतिक मूल्य विद्या आ व्यक्तित्त्व ग्रहणीय । जखन अयाचीक छापक दर्शन गांधी मे होयत तँ मिथिला बुझना जायत । अर्थात ताहि दिन सँ मिथिला आइधरि व्यक्तित्त्व विहिन रहल अछि । ई व्यक्तित्त्व कोनो विद्या नहि बना सकैछ यद्यपि अयाची विद्वान छलाह तँ गांधी क की कहबैक ? तें भाषा, विद्या सँ अधिक अस्मिताक खोज थिक। व्यक्तिक गहन अन्तरात्म जे जन संकुल के प्रेरित-सिंचित करैछ । एहि लेल खोज थिक ओहि आधारक जे मिथिला के अद्यावधि जीबैत राखलक । निस्सन्देह एकर विद्या थिक आध्यात्मिक चिन्तन जे भूतकाल कें तँ गौरवान्वित केने अछि आ आब भविष्योक निर्माण करय चाहैत अछि ।

दयानन्द झा, सहरसा

मैथिली मरती त' कविराजे लोकनिक कारणें

रचना सभक फर्स्ट रीडिंग द' गेलों । हमरा त' आशा छल ज्वारि उठतै । मुदा एकरा त' वेभ के कहय रिप्ल सेहो कहैत संकोच । जे. से. इ त' बहुत निगेटिभ ढंग सँ विचार भेल जकरा अंग्रेजी मे Putting Cart before the horse कहै छै, तेहेन लागल। ओना बात पर विचार प्रारंभ भेल, सएह बड़का बात । विचारणीय ई जे तखनि? की कएल जाय ?

कविराज लोकनिक विषादपूर्ण निर्णयक उपरान्ते संजय आ धीरेन्द्र कुमारक कविता छनि । न्नः, के कहत मैथिली मरि जेती ? जँ मरती त' कविराजे लोकनिक कारणे।

धूमकेतु, कोइलख, मधुबनी

भाषा आ समाज विषयक चिन्तन सँ भरल अंक

सम्पादकीय मे जाहि 'मिथिलाक खोज' कएल गेल अछि वएह यथार्थ अछि, जकरा दिस बहुत पुर्वहि सँ उपेक्षा-भाव रहैत अएलनि अछि-पैघ लोक सभक । सामाजिक आ वैचारिक

सामञ्जस्यक अभाव मे सांस्कृतिक आ व्यवहारिक सामञ्जस्यक कल्पना आ भाषिक उत्थान संभव नहि भ' सकैछ । बहुत रास नीक वस्तु प्रभावितें नहि, अन्तर कें छुबियो सकल । 'मीनाक्षी'क पुनर्मुद्रणक यथार्थ उचित बूझना गेल । श्री राजमोहन बाबूक साक्षात्कार बहुत किछु जानए-सीखए लेल प्रेरित कएलक । 'तीन कविक तीन-तीन कविता' तीन रंगक अनुभव सिक्त शब्द व्यंजन मे साम्प्रतिक सामाजिक सत्यक स्वाद दए कए जागृत कएलक । भाषा आ समाज विषयक चिन्तन सँ भरल ई अंक प्रवेशांक रहितहुँ विशेषांकक सुख देलक ।

डा० नरेन्द्र झा, राँची

आइयो 'डीही वर्गक' लोक मैथिली के अक्षुण्ण रखने छथि

डा० हेतुकर झा अपन लेख मे एहि बातक चर्चा केलनि अछि जे कोना स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद फराक मिथिला राज्यक लेल आन्दोलनक प्रारम्भ भेल । कमोबेस आइयो फराक मिथिला राज्यक लेल कसमसाहटि अछि । लेखकक अनुसार कलकत्ता, पटना आदि मे एकरा हेतु आइयो प्रयास जारी अछि मुदा ओहि तेवरक नितान्त अभाव अछि जे झारखण्ड, उत्तराखण्डक लेल भछि । हम बेर-बेर अपन गौरव के मोन पाड़ि नोर बहबैत छी परन्तु आइ की भ' रहल अछि । ओहि पर भरिसके सोचैत छी । हमरा सभके काल्हुक आइना मे आइ के आन' पड़त तखने सफलताक आशा कएल जा सकैत अछि ।

पं० गोविन्द झा मैथिलीक भविष्य पर अपन चिन्ता व्यक्त केलनि अछि । ओ सोचैत छथि जे अगिला सौ-पचास वर्ष मे मैथिली के हिन्दी और उर्दू भाषा गीड़ि जायत आ फेर हिन्दी के सेहो अंग्रेजी उदरस्थ क' लेत । हुनका एकरो डर छनि जे मैथिली भाषी शहरक जलवायु सँ प्रभावित भ' कए क्रमशः हिन्दी दिस झुकि रहल छथि । ओ अपन विश्लेषण मे कहैत छथि जे डीही वर्गक लोक अदौ सँ मिथिला मे रहि रहल छथि और पाहीवर्गक लोक बाहर सँ आबिक' मिथिला मे बसलाह अछि जेकरा पछिमा कहैत छै । हुनका आश्चर्य छनि जे बंगाल, हैदरावाद, केरल आदि मे जत' कतेको मुसलमान संस्कृत आ ब्राह्मण लोकनि फारसी आ उर्दूक अध्ययन केलनि ओत' मिथिला मे एहेन किछु नहि भेल और मैथिली उपेक्षित रहल । पं० गोविन्द झाक चिन्ता स्वाभाविक अछि । परन्तु एहि समस्या पर विस्तार सँ विचार करबाक आवश्यकता छैक ।

हम कतेको वर्ष धरि मिथिला क्षेत्र मे रहि चुकल छी और अनेकों तरहक लोक सँ गप्प भेल अछि । ग्रामीण आ विद्वान लोकनि सँ स्थानीय समस्या पर विचार-विमर्श क' चुकल छी । हमरा एहन लागल जे मैथिली भाषी विशेष रूप सँ प्रबृद्ध जातिक लोक नहि चाहैत छथि जे हुनकर भाषायी दुर्ग मे अन्य व्यक्ति प्रवेश करए । दोसर भाषाक बजनिहार हुनका लेल त्याज्य छथि । यदि कोनो व्यक्ति जे मिथिलाक नहि रहलो पर नीक मैथिली बजैत छथि तकरा ओ अपन नहि बना सकैत छथि । एहि जड़ता के दूर क' उदारता देखाब' पड़त । तखने गोविन्द झाजीक सपना सत्य होयत ।

ई ठीक अछि जे सौ-पचास वर्ष मे मैथिलीए नहि अनेक भाषा लुप्त प्राय भ' जायत और सम्भव अछि जे किछु नव भाषा प्रकाश मे सेहो आबए, किछु भाषा पर दोसर भाषाक असरि सेहो आबि जायत। एकरा कियो रोकि नहि सकैत अछि। ई त' प्रकृतिक नियम थिक। परिवर्त्तन स्वभाव थिक। एकठामक लोक जीविकाक लेल दोसरठाम जाइत छथि त' भाषायी आदान-प्रदान स्वाभाविक अछि। दोसरभाषा आ रहन-सहनक असरि सेहो स्वाभाविक अछि। हम त' ई पौलहुँ अछि जे आइयो 'डीही वर्गक' लोक मैथिली के अक्षुण्ण रखने छथि आ पढ़ल-लिखल लोक ओकरा पाछू छोड़ने जा रहल छथि। कोनो भाषा तखने समृद्ध होयत जखन आन भाषाक नीक वस्तु अपनाओत। मैथिली ने ककरो किछु देब' चाहैत अछि आ ने किछु लेब' चाहैत अछि। ई प्रश्न विचारणीय अछि।

कत्ते दिन जीयत मैथिली ? ई चिन्ता किएक अछि ? गाछक हरीतिमा बनल रहय, पुष्पित, पल्लवित हो ई चिन्ता किएक ने अछि ? आइ भाषायी दुनियाँक प्रसार काफी भ' गेल अछि। मैथिलीक किछु लोक हिन्दीके शत्रु मानैत छथि। किएक? की हिन्दी, मैथिलीक विकास मे बाधा पहुँचौलक अछि ? विद्यापति के त' हिन्दी भाषी लोकनि शीर्षस्थान देने छथि।

डा० चतुर्भुज, पटना

[डा० चतुर्भुजक मूल हिन्दी मे लिखल पत्रक मैथिली अनुवाद प्रस्तुत कएल गेल अछि–सम्पादक]

कविता सभ प्रभावित कयलक

तीन दिन मे आद्योपान्त पढ़ि गेलहुँ 'सन्धान' के। नीक लागल। सामग्रीक चयन उच्च स्तरक अछि। कविता सभ प्रभावित कयलक। खास क' नारायणजीक 'उपज' आ 'जल', संजय कुन्दनक 'ओकर स्वप्न मे जेबा सँ पहिने' तथा धीरेन्द्र कुमार झाक 'इन्द्रधनुष'। हमरा मोन पड़ैत अछि जे 'ओकर स्वप्न मे.... 'संभवतः पुर्वहुँ मे कोनो पत्रिका मे प्रकाशित छैक।' 'आरम्भ' मे त' नहि ?... ओना इ कविता ततेक नीक छैक जे पुनमुर्द्रण सँ कोनो क्षति नहि! कथा सभ मे 'मीनाक्षी' सभ सँ बेसी प्रभावित कयलक। चारू निवन्ध खूब ज्ञानवर्द्धक आ विचारोत्तेजक अछि।

कुमार मनीष अरविन्द, डाल्टेनगंज

'सिनुरहार' लेल श्रीनिवासकें बहुत-बहुत वधाइ

हमरा मोन अछि (अहूँ प्रायः बिसरल नहि होयब) जे मैथिली मे एकटा गम्भीर प्रकृतिक पत्रिकाक प्रकाशनक खगताक सम्बन्ध मे हमरा सभक बीच एकाधिक बेर चर्च भेल छल। सन्धान (१) सङ्ग अहाँ एहि खगताक पूर्तिक दिशा मे डेग बढ़ा देल अछि, ई हर्ष आ संतोषक गप्प थीक।

'सन्धान' (१) पर अहाँक परिश्रमक बेछप छाप पड़ल अछि। मिथिला, मैथिली ओ

मैथिलक चिन्ता सङ्ग जुटाओल लेख सभ पाठक वर्ग के वौद्धिक दण्ड प्राणायम सङ्ग आत्म-निरीक्षण लेल निश्चित रूप सँ विवश करतनि। रचना सभक संकलन तथा स्तम्भ सभक निर्धारण मे अहाँक सम्पादकीय सुरुचि रेखाङ्कित भेल अछि।

शिवशंकर श्रीनिवासक कथा 'सिनुरहार' पर्याप्त अपेक्षा सङ्ग पढ़लहुँ आ तुष्ट भेलहुँ। ओना कथा पढ़ैतकाल हम एहि कथाक जेहन अन्त सोचैत रही, एकर अन्त तत्त्वतः लगभग ओहने होइतो रूपतः किछु भिन्न अछि। हम एहि कथाक अन्त मे राजकमलक कथा 'कोपड़'क 'पढ़ुआ काका' सन पुरान पीढ़ीक कोनो सधवा नारी-चरित्रक उपस्थितिक कल्पना करैत रही। धर्म कि धार्मिक आ लौकिक आचार-व्यवहार पर साम्प्रतिक सोच सङ्ग विचारक संदर्भ मे ई कथा सराहल जयबाक चाही। एहि कथा पर मोहन भारद्वाजक टिप्पणी व्यवस्थित मुदा किछु 'एकेडेमिक' लागल, जाहि सँ श्री भारद्वाज अखन धरि बचैत अयलाह अछि। 'सिनुरहार' लेल श्रीनिवासकें बहुत-बहुत बधाइ !

भाइ साहेब (राजमोहन झा) सङ्ग अहाँक अन्तरंग वार्त्ता हुनक व्यक्तित्त्व आ रचनाकारिताक सम्बन्ध मे फरीछ धारणा बनयबा मे निश्चित रूप सँ लोकक मदति करत।

कुलानन्द मिश्र, पटना

'सिनुरहार' मैथिलीक श्रेष्ठ कथा थिक

'सिनुरहार' मैथिलीक श्रेष्ठ कथा थिक। एहिमे मिथिलाक एकटा जाति विशेषक, एकटा सम्पूर्ण मैथिल संस्कृति, परिवेश, समस्या, स्वर आ निदान अत्यन्त धैर्य आ कुशलता सँ सोझाँ अबैत अछि। कथाक चरम-कथ्य कोनो आदर्श नहि बखानैत अछि, अपितु एकटा प्रगतिशील डेग उठबैत अछि जे हमरा अहाँक चिन्तन आ चेतना कें मूर्त करैत अछि।

शिवशंकर जी कथा मे जेना कहबाक प्रवृत्ति कें विकसित कयलनि अछि से हुनका ककरो सँ विशिष्ट बनबैत छनि।

नारायणजी।

सभ सँ वेशी नीक अछि अन्तरंगवार्त्ता

वस्तुतः ई 'प्रगतिशील चेतनाक पोथी' अछि। सभ वस्तु नीक लागल। निवन्ध, कविता ओ कथा त' नीक अछिये। सभ सँ वेशी नीक अछि अन्तरंग वार्त्ता'। भाइ राजमोहन जी सँ भरिपोख गप्प कहियो ने भेल अछि तैं, ओ कतेक गहीर जा क' वस्तु सभकें देखैत छथि, तेकर अन्दाज आबे भ' रहल अछि। अनुज हरेकृष्ण जी नीक लिखैत छथि। अनुवादो नीक करैत छथि मुदा जखन अनीता देसाइक 'संगतिया' पढ़लहुँ त' हमर ई मानव बेशी पुष्ट भेल। मैथिलीक आजुक स्थिति पर दूनू निवन्ध जोरगर अछि। व्यक्तिगत स्तर पर हमरो सदिखन इएह बुझाइत अछि जे 'कत्ते दिन जीयत मैथिली' ?

प्रो० महेन्द्र नारायण कर्ण, शिलांग

'मीनाक्षी' एहि अंकक उपलब्धि थिक

'मीनाक्षी' एहि अंकक उपलब्धि थिक । उपलब्धि त' चारू निबन्ध सेहो थिक, मुदा 'मीनाक्षी'क जे बात छै, से फराक छै । मनमोहन झा कें ई कथा दोसरो ढंग सँ सोचबाक लेल बाध्य करैए । तीनू कवि अपन-अपन कविता मे अपन व्यक्तित्त्वक अनुरूपें प्रस्तुत भेल छथि । खास क' कए धीरेन्द्रजी । समीक्षा खण्ड मे की हर्ज जे एके-दू पोथी के राखल जाय। समीक्षा पढ़ैत लगैत रहल जे ई परिचय आ समीक्षाक बीचक वस्तु भ' कए रहि गेलए । कतहु-कतहु व्यंग सेहो लागल ।

शिवशंकरक कथाक मादे कह 'चाहब जे सिनुरहार' ततेक विशिष्ट नहि थीक, जतेक मोहन भारद्वाज कहलनि अछि । कथा विस्तार मंगैत अछि, मुदा कथाकार हड़बड़ी मे लगैत छथि । हुनकर एकमात्र लक्ष्य बुझाइत अछि, सिनुरहारक दृश्यकें अंकित करब। हँ, एतंबा त' जरूर स्वीकार करय पड़त जे शिवशंकरक कथा-संसारक ई 'बेस्ट' थीक। मोहन भारद्वाज तकरा मार्क्सवादी लेखक ताल्सतॉयक वक्तव्यक फरमा मे अँटाक' विस्तृत फलक प्रदान केलनि अछि, सेहो हुनका लेल 'प्लस प्वाइंट' बनि जाइत अछि । नीक कथा, पवित्र कथा लेल कथाकार के साधुवाद !

मुदा, सम्पादकीय म जे मैथिली-मिथिला कें ब्राह्मण-कायस्थक घेरा सँ निकालबाक बात उठौलहुँ अछि, तकर खंडन की उक्त कथाक परिवेश, संस्कार वा पात्र नहि करैत अछि? मोहन भारद्वाज के सेहो ब्राह्मण परिवारक कथा छठि परमेसरी ये मोन पड़लनि । एना किए?

विभूति आनन्द, पण्डौल, मधुबनी

प्रवेशांक प्रमुदित केलक

सन्धानक प्रवेशांक प्रमुदित केलक, सभ दृष्टिएँ विलक्षण अछि । पत्रिका लोकप्रिय हो, संगहि दीर्घजीवी बनय-से कामना !

डा० अरविन्द कुमार सिंह झा, चनौर, दरभंगा

सुरुचिपूर्ण एवं स्तरीय प्रकाशन

सन्धान देखल । सुरूचिपूर्ण एवं स्तरीय प्रकाशन भेल अछि । एकर प्रत्येक रचना, मुख्यत: सम्पादकीय अत्यन्त उच्चकोटिक अछि ।

जीतेन्द्र नारायण झा, राजे, दरभंगा

सन्धान लेल वधाइ

सन्धान भेटल । आरम्भ केर स्मृति दिया देल । बधाइ !

विभारानी, बम्बई

नीक आलोचनापरक लेखक अभाव खटकल

सन्धानक अंक भेटल । वधाइ । पत्रिका नीक लागल । एकटा उच्च स्तरीय साहित्यिक पत्रिका मे जे किछु हेबाक चाही से सन्धान मे अछि । ओना पत्रिकाके निखारबाक लेल आ बहुत किछु कयल जा सकैत अछि । हम मैथिली आलोचना सँ बहुत बेसी परिचित नहि छी । ओना सन्धान मे हमरा नीक आलोचनापरक लेखक अभाव खटकल । हमरा विचार सँ आधुनिक मैथिली साहित्यक कोनो एक विधाक टेंड पर एकटा व्यापक परिचर्चा कएल जा सकैत अछि । अर्थात् एकटा वैचारिक आदान-प्रदान बहसक शुरुआत हो ।

संजय कुन्दन

एको पृष्ठ तिरहुता लिपि मे रहबाक चाही

कहय चाहैत छी जे सन्धान मे एक्को पृष्ठ तिरहुता लिपि मे किछु रहबाक चाही कारण मिथिला सँ ई अपना सभक लिपि समाप्त भ' रहल अछि ।

अवधेश आनन्द, महिषी, सहरसा

मूल्य २० टाका कने बेसी बुझना गेल

मधुबनी मे बुकस्टॉल पर सन्धान देखबा मे आएल । खरीदक' पढ़लहुँ । मूल्य २० टाका कने बेसी बुझना गेल । पत्रिका वार्षिक वा संग्रहक रूप मे अछि से स्पष्ट नहि बुझना जाइत अछि । अगिलो अंक प्रकाशित भेल अछि वा प्रकाशित होयबाक उमीद अछि ?

नवोनाथ झा 'विवेक', जयनगर मधुबनी

नव कथाकार के आमंत्रित करबैक कि नहि ?

सन्धान देखलहुँ । बड्ड नीक लागल । अहि मे जे कथा सभ अछि से सराहनीय अछि। अहि मे कथाक कि सभ नियम छै ? की नव कथाकार के आमंत्रित करबैक कि नहि ?

शैलेन्द्रमणि झा, दिल्ली

संजय कुन्दन बाजी मारि लेलनि अछि

संधानक पहिल अंक सहजहि मोनकेँ आकर्षित कयलक । संपादकीय मे जाहि व्यापक आ गहन चिन्ताकेँ व्यक्त कयल गेल अछि, से सोचबा लेल आ तदनुकूल करबा लेल विवश करैत अछि । मैथिलीक भविष्यक विषय मे भाषाशास्त्री आ विचारक लोकनिक टिप्पणी अत्यन्त प्रासंगिक अछि मुदा हुनका लोकनिक तर्क सँ सम्पूर्णत: सहमत नहि भेल जा सकैछ । तीनू कविक कविता प्रथम बाचन-पठन मे आकर्षित करैत अछि मुदा कवि संजय कुन्दन बाजी मारि लेलनि अछि । हमर वधाइ कवि धरि पठाओल जानि । सिनुरहार कथा नव बात कहैत अछि । उत्कृष्ठ कथा लेल कथाकार केँ बधाइ आ तहिना हरेकृष्णजी केँ उत्कृष्ट अनुवाद लेल सेहो । मोहन भारद्वाजजीक समीक्षा सम्पूर्ण कथा केँ अत्यन्त नियोजित ढंग सँ फड़िछबैत अछि । अशोकजीक अन्तरंग वार्त्ता अनेक अर्थ मे महत्त्वपूर्ण बुझायल । जतेक आवश्यक, अन्तरंग ओ कथाकार राजमोहनजी सँ प्रश्न कयलनि अछि, तेहने उत्तरो भेटलनि अछि । प्राय: राजमोहनजीक ई श्रेष्ठ साक्षात्कार मे सँ एक, अनेक अर्थ मे विशिष्ट सिद्ध होयत । मनमोहनबाबूक मीनाक्षी पढ़बाक सुअवसर संधाने देलक अछि हमरा । हम एहू लेल 'सन्धान आ एकर संपूर्ण परिवारक आभारी भेल छी ।

केदार कानन, सुपौल

मातृभाषा मात्र लोकक विश्रामस्थल रहतैक

मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्र मे सन्धान अपना ढंगक विलक्षण पत्रिका अछि । एहिमे मिथिला एवं मैथिलीक विषय मे विद्वान लोकनिक अनुभव अधिक अनुसन्धान कम देखलहुँ । आरम्भ मे सम्पादकीय बड़ सोझरायल अछि जाहि मे मिथिलाक विभिन्न समस्याक चर्चा कएल गेल अछि एवं पत्रिकाक उद्देश्य स्पष्ट कएल गेल अछि ।

पं० गोविन्द झा मैथिलीक भविष्य पर टिप्पणी करैत कहैत छथि ''कोन भाषा जीयत तकर निर्णायक होइत अछि मात्स्य न्याय ।'' एकटा एहेन कथन जे विचारोत्तेजक तँ अछि, मुदा लेखकक प्रति पूर्ण सम्मान रहितो हुनकर एहि मतक प्रति सहमत नै भ' पाबि रहल छी जे 'अगिला पीढ़ी मे आबि मैथिलीक पोठीकेँ हिन्दीक भाकुर गीड़ि लेतैक आ मैथिली समाज एक भाषी भ' जायत ।'' पुन: ओ ईहो जनबैत छथि जे हिन्दी सेहो लुप्त भ' जायत आ अंगरेजीक एकछत्र साम्राज्य हेतैक । पं० झा मैथिलीक प्रसङ्ग जाहि दुर्बलताक चर्चा करैत छथि सएह ओकर बल छिऐक । हिन्दी वा अंगरेजी अपन-अपन बहुआयामी रूप मे ततेक ओझरा गेल छैक जे मातृभाषा मात्र लोकक विश्रामस्थल रहतैक, आ तैं सन्दर्भ मे मैथिलीएटा नहि, बंगाली, असमिया, कन्नड़, तेलुगु आदि क्षेत्रीय भाषाक भविष्य विशेष उज्जवल अछि ।

श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क आलेख 'कत्ते दिन जीयत मैथिली' विचारपूर्ण अछि तथा लेखकक ई उक्ति 'जँ ई सभ सदर्थक काज कएल गेल तँ मैथिलीकेँ विकट भविष्य मे कोनो तेहन खतरा नहि अछि, चाहे संवैधानिक स्वीकृति भेटै वा नहि ।' समीचीन लगैत अछि ।

एहि प्रसङ्ग हमरा ई कहब अछि जे भाषा केँ राजनैतिक कुचक्र नष्ट नहि क' सकैत छैक । हजारो लोकगीत जकर संकलन डा० अणिमा सिंह, श्रीमती कामेश्वरी देवी, श्रीमती मोहिनी देवी आदि महिला द्वारा भेल अछि, एखनहुँ श्रीमती पूर्णिमा देवी द्वारा संग्रहीत लोकगीत संग्रह शीघ्र प्रकाश्य अछि, स्व० मणिपद्म एवं अनेक लेखक द्वारा लोकगाथाक प्रकाशन भेल अछि आ मिथिलाक लोककंठ मे अप्रकाशित प्रतिश्रुत अछि, तकरा कोन राजनैतिक संरक्षण भेटलैक ? एतबे नहि, मैथिलीक सैकड़ो कवि आ लेखक केँ कोन संरक्षण वा सम्मान भेटैत छनि ? मुदा, एहि सभसँ मैथिलीक अस्मिता पर कोनो वाधक प्रभाव नहि पड़लैक अछि ।

आओर कथा विशेष पर परिचर्चा प्रासंगिक ओ रोचक रहल अछि । आदरणीय भाइ साहेब (श्री राजमोहन झा) केँ सेहो मैथिली मे सैकड़ों कथा लिखबाक श्रेय, साहित्य अकादमीक पुरस्कार प्राप्त कयलाक बाद आब हिन्दी मे आ अंग्रेजी मे (आइ लव यू)क प्रचलित शब्द समूहक मैथिली अनुवादक बाट नै भेटि रहल छनि अजगुत, अनटोटल ।

ओना, ई पत्रिका जाहि प्रकारक प्रकारक विषयक चर्चा परिचर्चा सँ पूर्ण अछि से सामयिक, प्रासङ्गिक ओ रोचक अछि ।

नीरजा रेणु, इलाहाबाद

दलित वर्गक छात्र सेहो मैथिली पढ़ैत छथि

बहुत अधिक प्रसन्नता भेल ई देखि जे अहाँ मिथिलाक एहि प्रतिनिधि पत्रिका मे 'मीनाक्षी' केँ पुनर्जीवन देल अछि । मीनाक्षी सँ अधिक नीक लागल ओहि कथाक प्रति अहाँक उद्गार । वास्तव मे मीनाक्षी लिखबाकाल हमर हृदयक जे भावना छल से अहाँक टिप्पणी सँ स्पष्ट भ' जाइछ ।

सन्धानक सब लेख स्तरीय अछि । लेखकीय विवरण सँ कतहु-कतहु हमर अपन विचार सामञ्जस्य नहि स्थापित कए सकल से आन बात भेल । यथा मैथिलीक आयु निर्धारण पचास वर्ष । जखन मैथिलीक पाठक संख्या नगण्य छलैक, पुस्तकक मुद्रण व्यवस्था नहि छलैक तहुखन आइ सँ पाँच सौ वर्ष पूर्वहिंक मैथिलीक साहित्य रचना भेटैत अछि । पूर्वकाल मे निश्चित रूपें मैथिल ब्राह्मण तथा कर्ण कायस्थ लोकनि एकर लेखक तथा पाठक छलाह । आइ से समस्या नहि अछि । विद्यालय तथा विश्वविद्यालय सबमे सहस्र-सहस्र अन्य जातिक लोक एकर अध्ययन अध्यापन कए

रहल छथि । ओ० बी०सी० जातिक कोन कथा दलित वर्गक छात्र सेहो मैथिली पढ़ैत छथि । एम० ए० मैथिलीक अध्ययन करैत दश पाँचटा दलित छात्र सँ हमरा परिचय अछि । तखन मैथिलीक अल्पायु होयबाक की लक्षण ? संगहि जे वर्ग मैथिलीकेँ अद्यावधि जीयाके रखलन्हि तनिक सन्तान सब किछु भ्रमित रहितहुँ मातृभाषा सँ बड़ अरूचि नहि रखैत छथि । हम त इएह बूझैत छी जे मैथिलीक अल्पोह्रास लेखककेँ मैथिलीक हेतु हुनक अधिक स्नेहक कारणे एहन भावनाकेँ हुनक हृदय मे जागृत केलक ।

शिवशंकर श्रीनिवासक सिनुरहार तथा अनूदित 'संगतिया' विलक्षण लागल ।

मनमोहन झा, सरिसब, मधुबनी

मैथिली आन्दोलन के सामाजिक-आर्थिक मुद्दा सँ जोड़ब आवश्यक छैक

सन्धानक पहिल अंक मे आदरणीय गोविन्द बाबूक ई कहब हमरा ठीक बुझाइत अछि जे मैथिली पचास बरसक भीतर मरि जायत । कोनो भाखा जे जीबैए से दू टा बल पर । जनबल अथवा सत्ताबल । मैथिली के दू मे सँ कोनो बल नहि छैक । मैथिलीकेँ आइये नहि सत्ताबल कहियो नहि रहैक । कियो राजनेता मैथिलीक सम्पोषक नहि छथि अथवा ने रहथि । सभके अपन-अपन स्वार्थ रहनि । अपन-अपन राजनीति, कूटीचालि रहनि । मैथिली के आइधरि जे किछु भेटलैक से किछु एहन राजनेता लोकनिक द्वारा जनिका मेथोड़-बहुत विवेक रहनि आ अपन राजनीतिक हित छोड़ियो के अपन कुरसी हिलबाक रिस्क लइयो क' ओ कोनो निर्णय क' सकैत छलाह । मतलब विवेक प्रेरित निर्णय । एहन नेता आब बीतल युगक जीव भ' गेलाह अछि । इहो दुर्भाग्य अछि मिथिलाक कि विवेक-प्रेरित निर्णय ल' सकनिहार राजनेता आधुनिक युग मे ई नहि जनमा सकल। रहल जनबल । कत' छै जनबल ? एखन हालेक बात थिक । कोंकणीक लेल गोआ मे आन्दोलन भेलैक । स्मरण करु जे कोना सौंसे प्रान्त अशान्त भ' गेल। आ से ता धरि रहलैक, जा धरि कि कोंकणी के राजभाषाक दरजा नहि भेटलैक । आब त' संविधान मे अछि । मैथिलीक लेल जे आन्दोलन भेल अछि से जेना टेस्ट बदलबाक लेल । थोड़ेक दिन हुल....ले....ले....भ' जाय आ तखन लागी अपन-अपन काज मे । एकर कारण अछि । आन्दोलन कर'बला जे लोक सभ छथि से आत्म विश्वास सँ शून्य छथि । आन्दोलने नहि मैथिली सँ जुड़ल जतेक जे लोक छथि, किनकहुँ मे ई विश्वास नहि छनि जे मैथिली जीबत । मैथिली बढ़त । मैथिली पल्लवित-पुष्पित होयत। हम लड़ि रहल छी, मुदा विश्वास नहि अछि जें हम जीतब । केहेन हेतै ओ लड़ाइ? ई विश्वास एहि दुआरे नहि छैक जे मैथिलीक लेल लड़ब मैथिलीक बात करब एकटा भावुकता थिकैक, लड़निहारक जीवनक संबल नहि थिकैक । ओहि मे ओकर टोटल इन्वालमेंट नहि छैक ।

ई बात आब साफ भ गेलए जे मात्र मैथिलीक सवाल पर एहिठाम कोनो आन्दोलन नहि भ' सकैए । छुच्छ भाषाक नाम पर मिथिला मे कोनो आन्दोलन नहि भ' सकैए। कारण एतुका लोक वंगाली जकाँ सांस्कृतिक चरित्रक नहि अछि । आन्दोलन के सामाजिक-आर्थिक मुद्दा सँ जोड़ब आवश्यक छैक । भाषाकेँ एकटा छोट विन्दु मात्र रखबाक काज छैक । मैथिली-मैथिली नहि चिकड़ू । विकास-विकास गोहराबू । आन्दोलनकारी लोकनिकेँ अपन समझ सेहो साफ करबाक प्रयोजन छनि । भारत मे जत' कतहु भाषाइ आन्दोलन भेलैए, सभठाम आन्दोलनकारी लोकनि लेखक सभके आदर देलनि अछि । आ सामंजस्य बनौने रखलाह अछि । एहिठाम त' दोसरे ताल। लेखक सभके जे जत्ते गरियाबय से ततेक पैघ क्रान्तिकारी । किए औ बाबू तँ लेखक लोकनि अपने मे टर्र छथि । से नै, हम पूछै छी आइ जे मैथिली जीबि रहल अछि से ककरा बल पर ? आन्दोलनी लोकनिक बल पर ? एत' धरि मैथिली के के अनलक? लेखके लोकनि ने । विद्यापति सँ ल' कए अरविन्द ठाकुर धरि । की एहि सोच आ समझ केँ साफ करबाक प्रयोजन नहि छैक ? सभक बीच सामंजस्य स्थापित हेबाक प्रयोजन नहि छैक ?

दोसर सभ सँ महत्त्वपूर्ण बात ई छैक जे एहिठामक जे बहुसंख्यक जनता अछि, तकरा मैथिली ब्राह्मणक प्रति हार्दिक सहानुभूति नहि छैक । ब्राह्मण लोकनि साधिकार ई सिद्ध करैत रहलाह अछि जे मैथिली हुनके भाषा, हुनके संस्कृति थिकनि। मैथिलीक मंच पर जे प्रस्तुत होइत छैक ताहि मे दलित वर्गक संस्कृतिक स्पर्शो नहि रहैत छैक । तखन बहुसंख्यक लोक मैथिली के कोना अपन बूझत ? एखन जे मिथिलाक दलित वर्ग अछि से निरक्षर अछि । चेतनाक अभाव मे अछि । जागरण जे भ' रहल छैक तकर गति मद्धिम छैक । ई वर्ग जखन चेतत तखन एकर संस्कृति बदलि गेल रहतैक । संगहि भाखा बाजब अलग बात थिक आ तकर चेतना होयब, तकरा लेल लड़ब अलग बात । शिक्षाक बिना चेतना नहि औतैक । जहिया चेतना एतै तहिया धरि सभ किछु बदलि गेल रहत । पूराक पूरा सांस्कृतिक परिदृश्य बदलि गेल रहत। हिन्दी जाहि तरहें अपन पंजा कसने जा रहल अछि, स्पष्ट अछि जे दलित वर्गक भाखा हिन्दी होयत आ संस्कृति अंग्रेजी । मिथिलाक बहुसंख्यक वर्ग अर्थात् दलित आदिक सहभागिताक बिना मिथिला मे कोनो आन्दोलन सफल नहि भ' सकैत अछि । आ ई वर्ग जहिया पढ़ि-लीखि जागृत होयत । मैथिली संस्कृति, मैथिली भाषा सँ दूर चल गेल रहत । तखन आन्दोलन के करतैक ? ब्राह्मणो लोकनि अपन धिया-पूताकेँ अंग्रेजीक माध्यम सँ शिक्षा दिआ रहल छथि । पश्चिमी संस्कृति मे रँगि रहल छथि । तखन मैथिली के के पूछैए ? मैथिली कोना जीबत ? ठीक कहैत छथि गोविन्द बाबू ।

डा० तारानन्द वियोगी, साहेबगंज

❑

काञ्चीनाथ झा 'किरण'

मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक आरम्भ

[एक समीक्षात्मक विचार]

[किरण जीक रचना संसार असीम अछि । मुदा 1987 क बाढ़ि, 1988 क भूकम्प मे घरखस्सी आ चोरि मे सम्पूर्ण रचनाकेँ ब ाखाक राति मे बाहर फेंकि देला सँ ओ छिन्न-भिन्न भ' गेल । किरण जी 1987 सँ अपन जीर्ण स्वास्थ्यक कारणे ओकरा पुनः सम्बद्ध नहि क' सकलाह । सन्धानक अनुरोध पर हुनक योग्य पुत्रद्वय प्रो. कैलास नाथजी ओ प्रो. केदारनाथजी बेस परिश्रम पूर्वक ताकि-हेरि एवं संगठित, सम्बद्ध क' ई निबन्धउपलब्ध करौलनि । ई निबन्ध 1977 ई मे लिखल अछि । सन्धान एहि महत्वपूर्ण निबन्ध के प्रकाशित करैत प्रसन्नताक अनुभव क' रहल अछि । संगहि एहि हेतु प्रो. कैलास नाथ ओ प्रो. केदार नाथक संगहि शिवशंकर श्रीनिवासक सेहो आभारी अछि—सम्पादक]

"परम्परा एवं आधुनिक मैथिली कविता" एहि शीर्षक सँ हमरा बूझि पड़ैत अछि जे परम्परा ओ आधुनिकता मे विरोध छैक । परम्पराक अर्थ थिक पाँती, श्रृंखला। प्रत्येक व्यक्ति आदि पुरुष सँ आरम्भ भेल श्रृंखलाक एक कड़ी रहैत अछि । परंच साधारण लोहक कड़ीक अपेक्षा लोकक कड़ी विलक्षण रहैछ । लोकक जन्म माय ओ बापक दू कड़ीक सहयोग सँ होइछ । अतः दू भिन्न श्रृंखलाक कड़ी व्यक्ति रहैछ।

बापो केँ माय-बाप, मायो केँ माय-बाप एवं प्रकारें व्यक्ति वस्तुतः असंख्य श्रृंखलाक एक कड़ीक रूप मे अवतीर्ण होइत अछि । ई जन्म सम्बन्धी श्रृंखला भेल। एकर संग-संग एकटा श्रृंखला ओ होइछ जकर सम्बन्ध व्यक्तिक शिक्षा-दीक्षा, आचार-विचार एवं सभ्यता-संस्कृति सँ रहैछ ।

अतएब सामाजिक जीवन मे आबद्ध व्यक्ति भौतिक जगतक तत्त्वक समान नहि, यौगिक पदार्थक अणु समान थिक जकर फारमूलाक निरूपण करब असम्भव अछि।

जे ज्ञान, आचार, व्यवहार, माय, बाप, पितामह, मतामह आदिक श्रृंखलाक द्वारा भेटैत अछि सैह परम्परा सँ प्राप्त कहबैत अछि ।

अधुनाक अर्थ थिक वर्त्तमानकाल-ताहिसँ विशेषण होइछ वर्त्तमान कालिक आ ताहि सँ भाववाचक नाम आधुनिकता होइछ जकरा सामयिकता कहब बेजाय नहि ।

परम्परा सँ अबैत प्रत्येक विचार व्यवहार आदि समय सँ प्रभावित होइत रहैछ तेँ उसनल-पुसनल कन्द-मूल विविध प्रकारक मसाला सँ भिन्न-भिन्न तीमन-तरकारीक रूप मे आनन्ददायक भ' रहल अछि । हरिणक छालक स्थान मे जोलही ततमी कपड़ा बनैत आजुक नयनाभिराम बस्त्रक युग मे पहुँचल अछि ।

काव्य साहित्य तँ सकल साधारणक वस्तु नहि थिक । अतः एहि मे सामयिकता कविक चिन्तन, अनुभूति ओ नैतिक साहस पर निर्भर रहैछ ।

भारतवर्ष मे ऐतिहासिक युग राजा-महाराजाक युग रहैत आयल । राजा-सामन्तक द्वारा साहित्यकारक पोषण होइत रहल । राजदरबारक रूपमे परिवर्त्तन साधारण लोक जकाँ नहि आबि सकैत छैक । अतएव परम्परा जड़वत रहय लागल ।

तकर पश्चात विदेशी अन्य धर्म्मालम्बीक शासन स्थापित भेल । भारतीय समाजकेँ एक सर्वथा भिन्न समाज मे परिवर्त्तित भय जेबाक खतरा उपस्थित भेल तेँ विद्वत समाज अपन परम्परागत व्यवहार विचार केँ चिहुटि क' पकड़लनि । ई स्थिति परम्पराकेँ आरो जड़ बना देलक । तेँ आजुक युग मे परम्परा रूढ़िक समान मानल जा रहल अछि।

परंच सभ पण्डित आन्हर नहि भ गेल रहथि तकर प्रमाण संस्कृते पण्डित द्वारा प्रवर्त्तित मैथिलीक काव्य धारा थिक ।

संस्कृत भाषाकेँ छोड़ि, प्राकृत, अवहट्ठो सँ आगूक भाषामे काव्यक रचना साधारण साहसक बात नहि भेल ।

1923 ई० धरि मैथिली काव्य-कविता ओ गद्य संस्कृते पंडितक द्वारा पोसल पालल गेल मुदा जीवन झा, यदुवरजी, कमलनाथ चौधरी आदिक काव्य सामयिकता सँ सरस होबय लागल जे प्रवृत्ति दिनानुदिन बढ़िते गेल । एहना स्थिति मे मैथिली कविता मे आधुनिकता के आनल ? एहि प्रश्नक उत्तर मे कोनो एक व्यक्तिक नामक उल्लेख क' देब संगत नहि बोध होइछ ।

भाषाक क्षेत्रमे आधुनिकताक अर्थ अन्यान्य भारतीय भाषा मे मानल गेल अछि—" अंगरेज जाति जकाँ अपन मातृभाषा केँ पवित्र मानब अपन समस्त भाव विचारक माध्यम बनायब आ अपन भूमिक स्वाधीनताक लेल जीवन अर्पित करबाक भावनाकेँ प्रज्वलित करब-राखब ।" एहि आधुनिकताकेँ कविताक शिल्पक संग कोनो सम्बन्ध नहि छलैक । "वन्देमातरम्" गीते थिक, जे गाने करबाक लेल रचल गेल छल । स्वाधीनताक आन्दोलनक समय मे बहुत कविता लिखल गेल गानेक लेल । जयशङ्कर

प्रसादक ''हिमाद्रितुंगश्रृंग से'' कविता खूब गाओल जाइत रहय । अत: आधुनिक बंगभाषा साहित्यक पिता कहौनिहार स्वनामधन्य वंकिमचन्द्रेक साहित्य मे देशक स्वाधीनता-संग्रामक बीज मन्त्र 'वन्दे मातरम्'' क उद्घोष भ' गेल ।

देशक समस्त समाजकें प्रबुद्ध शिक्षित करबाक भावना सँ मातृभाषाक उन्नति करबाक लेल साहित्यकार प्रवृत्त होइछ । समस्त समाज कें प्रबुद्ध करय चाहत तँ दृष्टि व्यापक होयबे करतैक । समस्त समाजक सुख-दुखक समस्या नजरि पर पड़बे करतैक। अत: साहित्यक विषय-वस्तुक क्षेत्रक विस्तार अनिवार्य छैक ।

मुदा कवि साहित्यकारों तँ मनुष्ये थिक । ओकरो शिक्षा, परिवार, परिस्थितिक अनुसारे प्रवृत्ति बनल रहैत छैक । प्रवृत्तिक अनूकूले दृष्टि होइत छैक आ दृष्टिक अनुकूल रचना हेतैक । आदरणीय बन्धु मधुपजी कतेक शृंगारिक गीत एहि युग मे रचलनि अछि? की ओ आधुनिक काव्य नहि थिक ? हमर दृष्टिएँ असल आधुनिक काव्य थिक । वंकिम बाबूक जे दृष्टिकोण रहनि तदनुकूले ओ लिखल गेल अछि । ओकर मूल उद्देश्य अछि मैथिलीक घर मे जमिक' बैसल आन भाषाक गीतकें उखाड़ि फेकब, अपन भाषाक मधुरिमा सँ समाजकें मोहि क' बस मे करब ।

कहबाक अभिप्राय जे भारतीय लोकभाषाक साहित्य मे एक विशेष अर्थ ल' क' आधुनिक विशेषण आयल अछि । ओ एक दृष्टि मात्र थिक । मैथिली साहित्यक इतिहास विषयक लेख लिखनिहारक दृष्टि पर 'आधुनिक' शब्दक विशेष अर्थ नहि अयलनि । बंग आदि भाषाक अध्ययन बिनु कयने अपने मन सँ 'आधुनिकता'क किछु अर्थ मानि लेलनि । तें डा० जयकान्त मिश्र चन्दा झा कें आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रवर्त्तक मानि लेलनि मुदा चन्दाझाक छिटपुट, टूटल फुटल हिन्दी भाषाक रचने सिद्ध करैछ जे ओ एक मात्र मैथिली भाषाकें साहित्यक माध्यम नहि मानैत रहथि । मैथिली भाषाकें 'गोग्रास' जकाँ किछुक' द' देबाक परिपाटीकें ज्योतिरीश्वरे चला देलनि । चन्दाझा नव बात की कयलनि जाहिसँ आधुनिक युगक आरम्भकर्त्ता मानल गेलाह ? इतिहासमे एकर स्पष्टीकरण आवश्यक ।

स्व० बंकिम बाबू लोकनि जाहि दृष्टि सँ बंग साहित्यकें समृद्ध करब आरम्भ कयल-ओएह दृष्टि पकड़ि लेने छल ''मिथिला-मोद' । एहि दृष्टिक लेखक मे अग्रगण्य छलाह म० म० मुरलीधर झा, शिवानन्द चौधरी, यदुनाथ झा 'युदवर', कविवर सीताराम झा, म० म० उमेश मिश्र आदि । मुक्तक, खण्डकाव्य,कथा, नाटक, उपन्यास आदि काव्येक विद्या सभ धरि सीमित नहि छल, नीतिशास्त्र, हितोपदेश, अलंकारशास्त्र, इतिहास, जीवनचरित्र, स्वास्थ्य शास्त्र, ज्योतिष, आदि विषयोक रचना अछि 'मिथिलामोद' मे । शिवानन्द चौधरी तँ बंकिम बाबूक लेखक उद्धरण दैत लिखने छथि जे मैथिली भाषी समाजकें सभशास्त्र अपन भाषा मे भेंटेक तदर्थ प्रयत्न होयब आवश्यक ।

आ एहि दृष्टिक बीज-बपन कयल गेल जयपुरक स्वनामधन्य पं० मधुसूदन झा द्वारा 'मैथिली-हित-साधन'' नामक पत्रिकाक प्रकाशन सँ । मैथिली जातिक हित, मैथिली भाषाएक उन्नति सँ होयतैक से दृष्टि तँ ओएह देलक । यदि मिथिलास्थ समाजक एको गोटेक ध्यान ताहि पर गेल रहैत तँ मैथिलीक पहिल पत्रक प्रकाशनक प्रयत्न दरभंगहि सँ होइत ।

'बादहु मे ''मिथिला-मोद' ओ तकर बाद ''मिथिला-मिहिर'' हिन्दीए भाषा मे बहराएल छल । मुदा किछु दिनक बादे म० म० मुरलीधर झा अपन गलतीक अनुभव कयलनि आ 'मोद'क भाषाकें विशुद्ध रूपें मैथिली बना देलनि ।

हमर विचारें मैथिलीक लेल युग प्रवर्त्तनक संकेत देलनि चिरस्मरणीय सर जौर्ज ग्रियर्सन । कारण भारतक आन-आन प्रान्तक भाषा भर्नाक्यूलरक रूप मे स्वीकृत भ' शिक्षा पद्धति मे स्थान पाबि चुकल छल मुदा मिथिलाक भाषा मैथिली स्वतंत्र भाषा नहि मानल गेल, तें शिक्षा पद्धति मे स्थान नहि देल गेलैक ।

मैथिल समाज चेतनाहीन छल ! ओकरा लेखे धन्नसन । गाइयो बेस बड़दबो बेस । कोनो प्रतिक्रिया नहि । ग्रियर्सन मैथिली भाषाकें स्वतन्त्र भाषा सिद्ध कए, शिक्षा पद्धति मे स्थान प्राप्त करबाक अधिकारी बना देबाक प्रयास कयलनि ।

मैथिली भाषाकें स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करबाक लेल एकर पृथक व्याकरणें टाके शासनक समक्ष उपस्थित नहि कयल एकर साहित्य परम्परा बड़ पुरान छैक आ एखनहुँ एहि मे साहित्य रचल जाइत छैक तकर नमूना-स्वरूप विद्यापतिक 82 टा, हर्षनाथ झाक 16 टा गीतक संग कवित्त अकाली, नाग ओ सलहेसक गीत ओही पोथी मे देलनि। अपना भरि ओ मैथिलीक अधिकार कें पुष्ट करबाक लेल उमापतिक पारिजातहरण तथा मनबोधक कृष्णजन्म प्रकाशित कयलनि । मुदा मैथिल जाति हफीम खा क' सुतल छल अथवा बंगालक जनजागरण देखियौ क' 'जानिक' अनठा देलक। बंगाली आ बिहारक पछिमा कायस्थक विरोधक कारणें अंग्रेज सरकार स्वत: मैथिली कें स्वीकृत नहि कयलक।

1881 ई० मे ग्रियर्सनक मैथिली क्रिस्टोमैथी प्रकाशित भेल छल । तकर पचीस वर्षक बाद 'मैथिल हित-साधन' जयपुर सँ प्रकाशित भेल । दरभंगा मे महराज लक्ष्मीश्वर सिंह, महराज रमेश्वर सिंह सनक प्रभावशाली व्यक्ति उपलब्ध रहथिन, महराजक परम विश्वासी प्रमुख आफिसर विन्ध्यनाथ झाक संग मैत्री छलनि तथापि चन्दा झा घर मे बैसल कोनहुना रामायण, किछु महेशवानी लिखि क' सन्तुष्ट रहि गेलाह । संगहि हिन्दी ओ कें धेनहि रहलाह । ने मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताक स्थापना लेल महराजक ध्यान आकृष्ट कयलनि ने 'बंग साहित्य परिषद्' क सदृश संस्थाक आयोजन कयलनि ने सामयिक साहित्येक रचना सँ समाजक असेढ़ताकें दूर करबाक यथाशक्ति प्रयास कयलनि । तँ

कोन प्रकारक आधुनिक युगक आरम्भ ओ कयलनि ? हुनक हिन्दीक रचना सँ तँ सिद्ध होइछ जे अपन मातृभाषाक महत्त्व दिस हुनक ध्यानो नहि गेल छलनि । मैथिली भाषा मे रचना करबाक परम्परा मैथिल पंडित समाज मे ज्योतिरीश्वरक काल सँ चल अबैत छल तकर पालन ओहो कयलनि । सेहो ग्रियर्सनक बाद । ग्रियर्सनक पोथी मे चन्दाझाक सममामयिक हर्षनाथ झाक गीत अछि चन्दाझाक नहि ।

सर ग्रियर्सन अपन 'मैथिली किस्टोमेथी' नामक पोथी मे 'कवित्त अकाली' नामक कविता देने छथि । मिथिला मे सन 1281 साल मे रौदीक कारणें अकाल पड़ल छल । ओही रौदी-अकालक वर्णन ओहि कविता मे अछि ।

एखन 1384 साल थिक आ 1977 ई० । सात सालक अन्तर सँ 1874 ई० मे सन 1281 साल छल । अत: एहि कविताक रचनाकाल अकालक बाद 1875-76 ई० मानल जाय तँ असंगत नहि होयत ।

एकर कवि थिकाह 'फतूर लाल'' । कारण

''फतुर लाल कवि बरनतु हँय एह रौदी के हाल'' ।

एकासी सालक रौदी-तिरहुतक लेल बड़ महत्त्वक अछि । सहायता कार्यक असुविधा देखि कैकटा सड़क बनल । मुजफ्फरपुर सँ कोसीकात राघोपुर धरि तिरहुत स्टेट रेलबेक निर्माण भेल । रौदीक समय मे सरकारी सहायताक लेल रौदी संहिता (फेमिन कोड) बनल । एहि रौदीक ऐतिहासिक महत्त्व छैक ।

मुदा से ज्ञात होइछ फतूरे लालक रचना सँ । मैथिली मे छिटपुट गीत लिखनिहार कवि लोकनिक दृष्टिपथ पर मिथिलाक ओहेन भीषण समस्या नहि आयल ।

किछु चमत्कारपूर्ण पाँती देखल जाय–

रोहिनि आदि थीक बरिसातक जेंहि एला तेंहि गेला
म्रिगसिरा मनपुरल मनोरथ दै झींसा किछु गेला ।।
X X X
पुनरबसु थिक बड़े पुनीता ओहो भेला कसरेस
बिआ बिराड़क जे किछु उपजल धन बरिसल असरेस

उत्तरा आय जाय घर बैसल सपनहु लै नहि बून ।
हथिया सूँढ़ नूड़ दै मूनल तनिकहु लागल घून ।''

सभ नक्षत्रक वर्णन क्रमिक करैत कवि कहैत छथि :–

जोतिष पढ़ि-पढ़ि जे जन ऐला साधि-साधि भूगोल ।
रेखागणित बीज सौ वाकिफ तनिकहु कच्ची बोल ।।
श्री राम कृपागति ओहो न जानथि जाहि कृपा सब काज।
''पानिक प्रश्न आब जँ पूछन्हि सेहो कहैत होन्हि लाज।''

कोनो उपजा नहि भेलैक तकर क्रम मे बहुत नाम दैत छथि । किछु अंश:–

''गम्हड़ी, गदड़ी खेतहि सुखायल भेल विधाता बाम
सुखल पताल, हाल नहि ओतहु सर्गहुँ लागल आगि ।''

एहि स्थिति पर मेघक मालिक इन्द्र के कहैत छथि:–

''धृक जीवन ओहि नृपति इन्द्रकें जे रोकल गहि पानि
जीवा जन्तु विकल पुहमी मे ताकेँ हो नहि आनि ।''

अगहनोक बाद वर्षा नहि भेलैक तैं–

''रबी राय एको नहि उपजल नहि खेढ़ी ओ चीन ।
X X X
''घर-घर सोच करय नर-नारी''

परंच:–

धनिक लोक सभ भनहि मगन छथि

राखथि बहुतो ढेर
हँसोथि रुपैया घर के राखथि
महग भेल अब सेर'' ।

साधारण लोकक की स्थिति छल से–

केओ कुरथी खेतमासु बेसाहल जाहि कौड़ि छल अपना
कतेक जना हरिबासर ठानल, भात बहुतकें सपना ।''

कतेक सजीव चित्र अछि ? साँझक साँझ उपासकेँ 'हरिबासर'' शब्द सँ उल्लेख कविक ऊँच संस्कृतिक अभिव्यक्ति थिक ।

बनियाँ व्यापारीक चालि देखू:–

''महगी देखि बनियाँ सब सनकल
तैं डरें लगौलक टट्टी ।
खाली दोकान सहर मे पड़ि गेल
सुन्न भेल सब चट्टी ।''

स्थितिक भयंकरता देखबैत कहैत छथि:–

अब्बल गात, बात भउ लटपट
X X X
नरनारी सभ सान तेयागल, बिक्री भेल अब गहना ।''

अब गहना ओ वर्त्तन सभक जे बन्धक पड़ल अथवा बेचल गेल, नामक छटा:–

'मनटीका खूटी औ तड़की नकमुन्नी नहि नाक
कटसरि, बिछिया औ झिमझिमिया बाजूबंद औ बाँक।
चन्द्रहार, हेंकल औ सिकड़ी और घमौरिक दाना,
सूति नबग्रह औ पँचखण्डी लसुनी भेल निदाना ।
X X X
बाटी बट्टा औ पनबट्टा भोजन करैक थारी
माधव सिंही सहित सोबरना नहि बचले घर झाड़ी ।''

घरक सभ बस्तु बन्धक पड़ि गेल वा बिका गेल । लोकक प्राण जैबाक स्थिति पहुँचल तखन:–

''दैब आस अबतरल कम्पनी-जापर राम सहाय ।
मिथिलापुर बुड़न जब लागय-से सुनि पहुँचल धाय ।।''
अंग्रेजी कम्पनी (सरकार) की कयलक से–
'खरिद अपन जहाजहि बोझल भरती करि-करि बोरा'

ताधरि मिथिला मे रेल नहि आयल छल तें पटना और हाजीपुर मे उतारि ढेर कयल गेल । ओत' सँ–

'गाड़ी बैल उँट हजारन
सब उबहत हइ दाना
मिसर कन्हैया के पोखरि पर
पहिलुक पड़ी टिकाना ।।''

कन्हैया मिसरक पोखरि पर सँ गाम-गाम अन्न पठैबाक आओरो अधिक बाहकक प्रयोजन छल । दरभंगाक महराज लक्ष्मीश्वर सिंह बाहक जुटैबामे बड़ सहयोग देलथिन तैं:–

श्री लछमेसर सिंह नृपति महराज मिथिलेश ।
अचल राज दरभंगा श्रीपति हरहिं कलेश ।।
गाड़ी बैल लाखन हजारन ताकें पड़े घड़ेर ।
पहिलुक गोला मधुबन भौड़ा जफरा और अड़ेर।।

एहि क्रम मे गाम सभक नाम अछि से छँटगुर अनुप्रासक झटक लाधल सन। तकर पश्चात सहायताक क्रम अछि–

''गुरबा के परबरसी, हाकिम कर तिरहुत मे आके ।
नहि तँ मरिते कत नर-नारी, बालें बच्चें सुखाके ।।
कत मुरदा गरदा मै मिलिते असंख जीव चलि जाता ।
सर समंधी सभै नेलंभन नहि बचिते जलदाता ।।
सभके सभ उपछा भै गेल पोखरि धूर औ सड़क ।
रहि गेल ब्राह्मन सोती कायथ पछिमा ठाकुर फड़क।''

एहू दुर्दिन मे एतयक लोकक इमान धर्म लुप्ते छलैक । सभ नफा करय लागल। तकर चित्रण ।

'केओ ओरसियर नाम लिखाओल केओ मोहर्रिर मेट ।
धर्म कार्य मे लुटथि रुपैया तें भेल सभ कें भेंट ।।
मुदा सरकार बड़ सजग छल । पता लगितहिं कड़ैती कयलक–

'केओ जमानत दैके बचला जनिका अमला नेही ।
ककरहु गारत गात सुखाओल, बहुतो होअय चलाना।
मातु पिता परिजन घर रोबय बाबू गेला जहल खाना ।
ककरहु घर भेल खनातलासी–मेट मोहर्रिर धोंछ ।
केओ अदालति मे डिड़िआइछ ककरहु उपड़नि मोंछ ।।''

एहि सहायता सँ एक वर्ग कें कोनो लाभ नहि भेल । कारण ने ओ खैरात लेलक ने बोनि कमा सकल । ओ सभ की कयलक से देखू–

'जोग बिकौआ लौकिक बंसक किरियामन्त सुकूल ।
गाछी बाँस बैल औ महिस जगह कैल मखमूल ।
ताहि रुपैया सँ गुजर करय लै कोरट सँ रीन ।
ताहि कारन बहुतो घर झगड़ा भाय भतीजा भीन ।

एहि प्रकारें रौदीक क्रम, उपजाक अभाव, महगी, बनियाँ धनी गृहस्तक चालि गरीबक विपन्नता, सरकारी सहायता यातायातक कठिनता, रिलीफ मे गड़बड़ी तकर परिणाम आदिक वर्णन करैत–

''आए लाट बहादुर औ दड़िभंगा धाम ।
बाबू औ बबुआन सहित मिलिकीन्ह कुमैटी खान ।।
एह सभ संग बैठि कै जाय कुमैटी भेल ।
अजब काज सरकार के तिरहुत पहुँचल रेल ।
बाजितपुर सँ सड़क निकालै, आए दौड़िह दौड़ी ।
हहेया गंडक पूल बन्हाए आए चौरही चौरी ।।
धर्मवीर, बलबीर, कंपनी जानत हैं जगदीशन ।
लक्ष्मी सागर के पोखरि मे, ताहि कीन्ह इसटीशन ।
x x x
देस देस सौं अन्न मंगाओल देलनि सभनि कें दाम
महामूँग, गहूम औ चाउर बजड़ा और बदाम ।
डीली पटना औ भटसोर, दीली औ अजमेर ।
आगरा और कान्हपुर, ढ़ाका जहाँ अन्न के ढेर ।।
भए रमाना अन्न तिरहुति मे लादि गाड़ी औ बैल ।
गज नुरंग गदहा औ छक्कड़ संग सिपाही छैल ।

x x x
मन पैचा मनगर भए लिअए बहुतो लिअए खेरात ।
धन्न–धन्न अंगरेज बहादुर सभकें जूटल गात ।।
गरिब गुन्नी गुरबा करु जै जै ब्राह्मन देअय असीस ।
श्री रघुनाथ बढ़ै बदसाही गद्दी लाख बरीस ।।

स्व० फतुर लाल 1281 सालक वर्णन द्वारा ऐतिहासिक काव्यक रचना कय जे बाट देखौलनि तकरा यदि मैथिल पंडित अपनबितथि तँ निर्विवाद रूपें मैथिली भाषा साहित्यकआइ दोसर रूप रहैत । कारण तखन जन जीवनक संग सम्बन्ध साहित्यकार कें बनल रहैत । अंगरेजी शासनक तीत–मीठ साहित्य मे आबैत, स्वराज्यक भावना–आन्दोलन, अछूतोद्धारक आन्दोलन, कोशी–कमलाक विनाशलीला आदि जीवन कें उद्वेलित प्रभावित करैबला घटना काव्यक विषय वस्तु बनैत रहैत आ तखन मैथिल समाजक ध्यान अपन भाषा सँ हँटय नहि पबैत जेना हँटि गेल । जाहि सँ 1860 ई० मे अंगरेजी शिक्षा–पद्धति मे मातृभाषाक रूप मे सभ प्रान्तीय भाषा स्थान पाबि गेल मुदा मैथिल समाज असेढ़ जकाँ पड़ल रहल ।

1920 ई० करीब मे डा० श्री सुनीति कुमार चटर्जीक प्रयत्नें कलकत्ता विश्वविद्यालय एकरा स्वीकृत क' देलक तथापि मैथिल समाज मे चेतना नहि आयल।

1930 ई० मे हिन्दू विश्वविद्यालयक वातावरणक प्रभावें हम सभ ओतय प्रयत्न आरम्भ कयल आ 1933 मे स्वीकृत भेल ।

1931 मे आबि कए आदरणीय श्री भोलालाल दास, आदरणीय शशिनाथ चौधरी लोकनि मैथिली साहित्य परिषद्क स्थापनाक' बिहार मे मैथिली कें स्वीकृत करयबाक यत्न कयलनि । अर्थात् आन प्रान्तीय भाषाक स्वीकृतिक सत्तरि वर्षक बाद किछु मैथिलक ध्यान अपन भाषाक दिसि गेल ।

हमरा दुख सँ वढ़ि लाज होइत अछि अपन समाजक अविवेक पर । राजा महराज वा मुहगर पंडित दू चारि पाँती जोड़ि क' अपन दुख दर्द अथवा धन–पूत कामना भगवान भगवती के सुनौलनि से सभ इतिहास मे जगजिआर बना देल गेला । हुनका लोकनिक 'फकड़ा' काव्यक नाम सँ पाठ्य–ग्रन्थ मे देल गेल आ समस्त मिथिलाक माटिक दुःख दर्दक सजीव चित्र समाज कें देनिहार कविकें ने इतिहास मे स्थान देल गेल ने ओकर दुइओ पाँती छात्र पाठक मे परसल गेल ।

हमर दृष्टिएँ–आधुनिक युगक आरम्भ फतूर लाल कवि ओ ग्रियर्सन सँ मानब न्याय संगत थिक । विश्वास अछि मैथिलीक प्राध्यापक ओ साहित्यकार लोकनि स्व० फतूर लाल कविक प्रसंग पेस कयल हमर एहि अर्जीदाबी पर विचार कय ओहि उपेक्षित साहित्यकार कें यथोचित स्थान अवश्य देताह । ❑

मोहन भारद्वाज

करब स्वराज्य की जौं तोड़ब समाजबन्ध

सीताराम झा केँ यात्री अपन काव्य-गुरु मानैत छलाह । सीताराम झाक काव्य-दृष्टिक एहि सँ महत्त्वपूर्ण आ फरिछायल मूल्यांकन नहि भऽ सकैत अछि । यात्री ई बात जाहि कोनो प्रसंग मे कहने होथु, हुनक अभीष्ट सीताराम झाक मूल्यांकन करब कथमपि नहि रहलनि अछि। तथापि, हमरा सभक लेल एहि सूत्र-वाक्यक अर्थवत्ता बहुत बेसी अछि । ई भिन्न बात थिक जे एहि कथनक अर्थ-व्याप्ति पर एखन धरि ताहि तरहें ध्यान नहि देल गेल अछि।

एहि क्रम मे सभ सँ पहिल जिज्ञासा ई होइत अछि जे आखिर ओ कोन पाठ थिक जे यात्री सीताराम झा सँ पढ़लनि ? की सीताराम झाक कविता मे यात्री-काव्यक गुरु होयबाक क्षमता छैक ? एहि प्रश्नक उत्तर तखनहि भेटि सकैत अछि जखन सीताराम झाक काव्यक अध्ययन ओकर रचनाकाल, परिवेश तथा प्रयोजन केँ ध्यान मे राखि कऽ कयल जाय ।

सीताराम झाक जन्म भेलनि 1891 ई० मे ओ मृत्यु 1975 ई० मे । हुनक पहिल पोथी छपल 1913 ई. मे–'पढुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यवहार' । तकरा बाद ओ धुरझाड़ लिखऽ लगलाह: मैथिली हिन्दी आ संस्कृत-तीनू भाषा मे, मूल, अनुवाद आ सारांश–तीनू रूप मे। मैथिली मे प्रकाशित हुनक कुल सोलहटा पोथी मे चारिटा (अलंकार-दर्पण [दू भाग], अतीचार निर्णय, पर्व-निर्णय तथा व्यवहार विवेक) काव्यशास्त्र, ज्योतिष वा कर्मकाण्ड सँ सम्बद्ध अछि। शेष बारहटा पोथी काव्यात्मक अछि, मैथिली कविताक अछि । एहू मे गीतातत्व सुधा मौलिक नहि, अनूदित कृति थिक । सीताराम झाक महत्त्वक आधार यैह काव्य-कृति थिक । किन्तु, ओकर अध्ययन ओ मूल्यांकनक मार्ग मे सभ सँ पैघ बाधा अछि पोथीक प्रकाशन वर्षक अनुपलब्धि। सीताराम झा अपन समयक अत्यन्त लोकप्रिय कवि छलाह। हुनक कविता-पोथी छपिते समाप्त भऽ जाइत छल । तें प्रकाशनक अनेक आवृत्ति भेल; पोथीक

कतोक संस्करण छपल । सम्प्रति जे संस्करण उपलब्ध अछि ताहि मे ओकर पहिल संस्करणक उल्लेख नहि अछि । तें पोथीक प्रथम प्रकाशन-वर्षक निश्चित ज्ञान नहि भऽ पबैत अछि। सीताराम झाक काव्यक प्रसिद्ध अध्ययनकर्त्ता डॉ० भीमनाथ झा तथा डॉ० रामदेव झा सेहो एहि प्रसंग मौने रहब श्रेयस्कर बुझलनि अछि । मुदा, प्रकाशित कृतिक काल-निर्णय भेने बिना ओकर सम्यक मूल्यांकन संभव नहि अछि । हम एहि प्रसंग किछु प्रयास कयलहुँ अछि, आ किछु पोथीक निश्चित तथा किछु केर संभावित पहिल प्रकाशन-वर्षक पता चलल अछि:

1. पढुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यबहार–1913 ई०
2. सूक्ति सुधा-प्रथम विन्दु : रत्नसंग्रह–1929 ई० (वर्षान्त मे)
3. सूक्ति सुधा-द्वितीय विन्दु : लोक लक्षण–1930 ई०
4. सूक्ति सुधा-तृतीय विन्दु : उपदेशाक्ष माला–1934 ई०
5. सूक्ति सुधा-चतुर्थ विन्दु : भूकम्प वर्णन–1934 ई०
6. सूक्ति सुधा–पंचम विन्दु : शिक्षा सुधा–1934 ई० (प्रथम खण्ड)
7. परिचय-दर्पण–1946 ई०
8. उनटा बसात–1952 ई०
9. अम्ब चरित–1956 ई०
10. मैथिली काव्य षट्रस–1968 ई०
11. मैथिली काव्योपवन–1972 ई०

उक्त एगारहो पोथी मे **मैथिली काव्य षट्रस** तथा **मैथिली काव्योपवन** पूर्व प्रकाशित रचनाक संग्रह थिक । नव रचना अपवाद रूपमे एक-दूटा अछि, मुदा मुख्यत: पुरान रचना सभकेँ संकलित कयल गेल अछि । कहबाक तात्पर्य ई जे सीताराम झा 1975 ई० धरि जिबैत रहलाह, जिबैत रहलाह तें किछु-किछु लिखितो रहलाह, किन्तु हुनक साहित्य- सर्जनकाल 1913 सँ 1956 ई० धरि रहल–**अम्बचरित**क प्रकाशन-काल धरि । तकरा बाद हुनक रचनाकार अपन छवि मे कोनो वृद्धि नहि कयलक । कहबाक चाही जे हुनक लेखकीय ऊर्जा समाप्त भऽ गेलनि । कनेक ध्यान सँ देखी तँ पता चलत जे सीताराम झाक लेखकीय ऊर्जाक अन्तिम छोर पाँचमे दशक थिक । एकर अपवाद अछि **उनटा बसात** मात्र । **अम्बचरित** छपल बाद मे, मुदा थिक ओ ओही अवधिक रचना । सीताराम झा स्वंय एहि तथ्यक पुष्टि प्रकारान्तर सँ करैत हंसराज केँ कहने छथिन–''ओना तँ अपन सभ रचना प्रिय अछि, तखन कोनो एकटा रचनाक विषय मे पूछब तँ हम अपन सूक्ति-सुधाक नाम कहब ।''

एहि तरहें कहि सकैत छी जे सीताराम झा भारतीय स्वतंत्रता-आन्दोलनकालक रचनाकार छथि। हुनक रचनाक अर्थालंकार ओहीकालक शोभा-सुन्दर थिक। तें सीताराम झाक कृतिक अध्ययन तखने संभव अछि जखन ओकर परिवेश सँ पूर्ण परिचित भेल जाय। हम सभ जनैत छी जे ब्रिटिश शासनक विरोध मे पहिल जन-विद्रोह 1857 ई. मे भेल। तकरा बाद एकर गति तीव्र होइत गेल। उपनिवेशवादी प्रभाव जेना-जेना जाहि-जाहि क्षेत्र मे बढ़ैत गेल, ओकर विरोधो तहिना आ ताहि-ताहि क्षेत्र मे भेल। राजनीतिक स्तरक विरोध मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ठाढ़ भेल तँ धार्मिक क्षेत्र मे आर्य समाज सनक संस्था। सांस्कृतिक स्तरपर उपनिवेशवादी चुनौती कें साहित्यकारलोकनि स्वीकार कयलनि। सम्पूर्ण भारतवर्ष मे नवजागरणक स्वर गुंजित भेल। मिथिला जनपद सेहो एहि सँ असम्बद्ध नहि रहल। चन्दा झा अगुआ बनलाह। हुनक संग वा तकरा बाद जागरणक शंखनाद कर'वला साहित्यकारक एकटा पैघ पाँती बनि गेल। सीताराम झा, छेदी झा, 'द्विजवर', यदुनाथ झा 'यदुवर', काञ्चीनाथ झा 'किरण', हरिमोहन झा, यात्री आदि साहित्यकार स्थानीय अस्मिताक रक्षाक संग ब्रिटिश शासनक विरोधक अखिल भारतीय अभियानक अंग बनि गेलाह।

ओहिकालक भारतीय साहित्यक दूटा मुख्य विशेषता छल–साहित्य सँ जनजीवनक निकटता तथा समकालीन विचारधाराक प्रक्षेपण। विषयवस्तु आ भाषा–दुनू स्तरपर साहित्य जन–जीवन सँ कटि गेल छल। आवश्यकता छल ओकरा जोड़बाक। दुनूक बीचक दूरी कें कम करबाक। एकरा अतिरिक्त एकटा आओर महत्त्वपूर्ण कारण छल उक्त दुनू विशेषता कें रेखांकित होयबाक। अंग्रेजी हुकूमत मिशनरी संस्थाक माध्यम सँ तथा शिक्षा-प्रणाली मे वर्नाकुलर पर जोर दऽ कऽ भारतीय जनता कें अपना तरहें शिक्षित करबाक आ उपयोगी बनेबाक षडयंत्र मे लागल छल। तें युगचेता भारतीय साहित्यकारक लेल सेहो ई आवश्यक भऽ गेलनि जे ओ जनताक भाषा मे जनताक विषय पर संवाद करथि। मिथिला जनपद मे एहि चेतनाक सूत्रधार बनलाह चन्दा झा। ओ कविताक लेल किताबी भाषाकें छोड़ि कऽ जनताक भाषाकें अपनौलनि। अपन महाकाव्य मे ओ केवल जनताक भाषाकें ग्रहण कयलनि, मुदा मुक्तक कविता मे आमलोकक दैनन्दिन जीवन-स्थिति कें सेहो प्रस्तुत करबा मे नहि हिचकिचयलाह। महगी आ कचहरी मे चलैत घूस हुनक कविताक विषय बनल। किन्तु, तकरा बादो चन्दा झा अपन मैथिली मुक्तक कविता मे राष्ट्रक समकालीन विचार धारा कें नहि राखि सकलाह। थोड़ेक रखबो कयलनि तऽ से मैथिली मे नहि, हिन्दी कविता मे। हुनक हिन्दी मुक्तक कविता मे औपनिवेशिक स्थिति पर व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया भेटैत अछि।

जेना–

विचारो बाबू राजा है अंगरेज
चलो ऐन ओ न्याय धरम से करो मिजाज न तेज
बड़-बड़ जग मे शूरवीर को कर दिन्हो है रेज।
विचारो बाबू......।

भारत मे जखन रेल चलल तखन एहि ठामक लोक कें लगलैक जे भारतक सम्पत्ति लूटि कऽ लऽ जयबाक जोगाड़ कयल गेल अछि। चन्दा झा एहि मानसिकता कें स्वर प्रदान करैत कहैत छथि–

जब रेल चली
कोउ वाहन न समान बली
हाथी की हिम्मत जहँ नाहीं घोड़ी साढ़िनि गति बिचली
X X X
भारतभूमि अन्न को ढ़ोती यह कुरीति नहि नीति भली।

कहबाक प्रयोजन नहि जे चन्दा झा राष्ट्रीय भावनाक सम्प्रेषण लेल हिन्दी कें माध्यम बनौलनि, मैथिली कें नहि। हुनका दिमाग मे प्रायः एकटा झिझक छलनि। मातृभाषा-भक्त भइयो कऽ ओ मैथिली कें एहि जोगर नहि मानैत छलाह जे ओहि मे राष्ट्रीय स्तरक विचार-विन्दु पर प्रतिक्रिया व्यक्त कयल जाय।

सीताराम झा मैथिलीक पहिल कवि छलाह जे एहि मानसिकता सँ ऊपर उठि कऽ काव्य-रचना कयलनि। संभव थिक जे १९१५ ई. मे कलकत्ताक एकटा सभा मे ओहिठामक लोक द्वारा गवर्नर कें बंगला मे बजबाक लेल बाध्य कऽ देब एकर तात्कालिक कारण रहल हो, मुदा मातृभाषाक प्रति गौरवपूर्ण आस्था राखब राष्ट्रीय चेतनाक एकटा प्रमुख तत्त्व छल। एकर कारणो स्पष्ट छल। अंग्रेजलोकनि भारतक आर्थिक शोषण तऽ कइये रहल छलाह। एहिठामक धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्तूप कें ध्वस्त करबा पर सेहो लागि पड़ल छलाह। तें राष्ट्रीय अस्मिताक रक्षा सर्वोपरि महत्त्वक कार्य भऽ गेल छल। राजनीतिज्ञ, समाजसुधारक, साहित्यकार सभ एहि लेल अपस्याँत छलाह आ अपना-अपना स्तर पर काज कऽ रहल छलाह। स्व-रक्षाक एहि प्रयास मे मातृभाषा-प्रेम जागब स्वाभाविक छल। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' क उदघोषणा कऽ चुकल छलाह। प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक अमर काव्य 'गीतांजलि' बंगला मे प्रकाशित भऽ ख्याति प्राप्त कऽ लेने छल। राष्ट्रीय स्तरक राजनीतिज्ञ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलकक 'गीता-रहस्य'क मराठी अनुवाद

छपि चुकल छलनि । महात्मा गान्धी दक्षिण अफ्रीका मे रहियो कऽ 'इन्डियन होम रूल' नामक पोथी अपन मातृभाषा मे लिखि लेने छलाह । एतबे नहि, गान्धीजी टालस्टाय लिखित 'लेटर टू एन इन्डियन' सनक पोथीक अनुवाद गुजराती मे छपायब श्रेयस्कर बुझने रहथि । सीताराम झाक मातृभाषा-प्रेम कें एही पृष्ठभूमि मे देखल जयबाक चाही। ओ जखन कहैत छथि-

'जन्मभूमि, जननी तथा मातृगिरा-ई तीन
सार सकल संसार मे, छथि कहि गेल प्रवीन'

तखन हुनक उद्देश्य राष्ट्रीय विचारधारा सँ मैथिल जनता कें परिचित करायब रहैत अछि । तें रामदेव झा अथवा भीमनाथ झा जखन सीताराम झाक काव्य-रचनाक कारण हुनक मातृभाषा प्रेम कें कहि क' ओकरा हुनक काव्य-रचनाक साधन नहि, साध्य मानबाक मनोभाव व्यक्त करैत छथि तऽ से हमरा समीचीन नहि लगैत अछि।

सीताराम झा अखिल भारतीय स्तरपर आयल जागरणक मैथिल सार्थवाह छलाह। हुनक कविताक वैचारिकता एहि तथ्यक प्रमाण थिक जे ओ राष्ट्रीय चेतना सँ परिचिते नहि, प्रेरित सेहो छलाह । ओहि कालक कवि राष्ट्रीय भावनाक चारिटा विन्दु पर बेसी ध्यान देलनि- राष्ट्र-वन्दना, अतीतक गौरव-गान, वर्त्तमानक दुर्दशा तथा उद्‌बोधन । सीताराम झाक काव्य मे सेहो एहि सभ घटक कें पुरजोर महत्त्व देल गेल अछि । ओना, मैथिल कवि कें देशक नाम पर बेसीकाल मिथिले मन पड़ैत छलनि आ सीताराम सेहो एकर अपवाद नहि छलाह, मुदा हिनका जन्मभूमिक विकास सँ सम्पूर्ण देशक उन्नतिक कल्पना करब अधिक स्वाभाविक लगलनि ।

कहि चुकल छी जे सीताराम झा जखन काव्य-रचना शुरु कयलनि तखन उपनिवेशवादी प्रभाव मे सांस्कृतिक अस्मिताक लोपक खतरा भयंकर रूप सँ उपस्थित छल। तें संस्कृति, शिक्षा आदिक सुरक्षा आवश्यक छल-यैह छल स्वत्त्व रक्षाक अर्थ। सम्पूर्ण देशक साहित्यकार एहि समस्याक प्रति सजग भेलाह आ सांस्कृतिक क्षेत्र मे दिमागी गुलामीक विरोध मे संघर्ष शुरु कऽ देलनि । भविष्य सुधारबाक लेल आत्मान्वेषण करब आ अतीत सँ प्रेरणा लेब हुनका सभ कें आवश्यक बुझयलनि । मैथिलीशरण गुप्तक एहि कथन मे जे 'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी' हिन्दीए प्रदेशक नहि, सम्पूर्ण भारतक स्थिति, आवश्यकता आ आकांक्षा प्रतिध्वनित भेल । सीताराम झा सेहो एहि रणक्षेत्र मे कूदि पड़लाह । हुनक पहिले काव्य-संकलन पढ़ुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यबहार एहि अभियान मे मैथिल हिस्सेदारीक सबूत थिक । अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षाक प्रभाव मे मैथिल युवा-वर्गक

चालि-ढालि बदलि रहल छल । मुदा, एहू सँ महत्वपूर्ण बात ई छल जे एहन लोकक प्रति समाजक आदर-भाव बढ़ि रहल छलैक । माने ई जे समाज मे अंगरेजिया जीवन-शैलीक प्रति आग्रह छल । सीताराम झा एहि स्थिति कें गमलनि । पढ़ुआ लोकनिक चरित्रकें पूर्वजक आचार-विचारक समानान्तर राखि देलनि । दुनू पक्षक गुण-दोष सोझाँ मे छल । जे चुनबाक हो, चुनू । जेम्हर जयबाक हो जाउ । समाज मे जे दुविधा छल, द्वन्द्व छल तकरा सीताराम झा साफ-साफ, फरिछा कऽ प्रस्तुत कऽ देलनि । संघर्ष धरगर भऽ गेल। भीमनाथ झा अपन पोथी **सीताराम झा** मे एकठाम अनचोंके बहुत सही बात कहने छथि- "हिनक कविताक मुख्य स्वर संघर्ष रहल अछि-प्राचीन आ नवीन विचारधाराक संघर्ष, स्वदेशी आ विदेशी मान्यताक संघर्ष ।"

वस्तुतः सीताराम झाक ई पहिले काव्य-संकलन हुनक वैचारिकता आ जीवन-दृष्टि कें नीक जकाँ रेखांकित कऽ दैत अछि । रामदेव झाक शब्द मे-"एहि रचना मे हिनक कवि-व्यक्तित्त्वक समस्त तत्त्व विद्यमान छलनि । कविक रूप मे जाहि स्वरूपक दर्शन हिनक प्रथम रचना मे भेल से कविवरक मृत्युपर्यन्तक काव्य रचना मे समान रूप सँ विद्यमान रहलनि। हास्य-व्यंग्यक शैली, सरल ओ प्रसाद गुण युक्त ठेठ ओ देशज शब्द बहुल भाषा, सामाजिक विरूपताक उद्‌घाटन, नवीनताक आग्रहक संग संस्कृति ओ आचार-रक्षाक प्रवृति, देश-दशा ओ सामाजिक स्थितिक आलोचनात्मक वर्णन, उदबोधन ओ नैतिकताक प्रतिपादन जे कविवरक कविताक धर्म मानल जाइछ से 'पढ़ुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यबहार' मे बीज रूप मे भेटैत अछि । परवर्त्ती रचना सभ मे कविवर ओही बीजरूप गुण सभ कें पल्लवित-विकसित कयलनि।"

मुदा, एतेक कहलाक बादो एकटा उल्लेखनीय विन्दु छुटिये गेल अछि । मोन पाड़बाक थिक जे ओहि समय मे जागरणक जे ज्वारि उठल छल तकर मुख्य विशेषता छल प्रखर बुद्धिवाद। पूर्वक कविता भावुकता प्रधान होइत छल, मुदा आब ओकर प्रतिस्थानी बनि गेल छल तार्किक दृष्टिकोण, बौद्धिक चिन्तन । मैथिली मे सीताराम झा एहि धाराक प्रथम कवि छलाह । चन्दा झाक रामायण मे तँ नहिए, मुक्तक कविता मे किछु ठोसपना आयल, किन्तु से स्थितिक उपस्थापने धरि सीमित रहि गेल । **पढ़ुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यबहार** मे जाहि रचना-पद्धति कें अपनाओल गेल अछि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि । ऊपर सँ लगैत अछि जे रचनाकार दूटा स्वतंत्र पोथी कें एक गत्ता मे समेटि कऽ राखि देलनि अछि, मुदा से बात अछि नहि । प्रस्तुति सोद्देश्य अछि । सार्थक अछि । सीताराम झा दुनू विचार-पक्ष कें एकठाम राखि दैत छथि । तकरा बाद पाठक पर छोड़ि दैत छथि जे ओ कोन मार्ग कें वरेण्य बुझैत अछि । पाठक सोचि-विचारि

कऽ अपन बुद्धि-विवेक सँ निर्णय ल' क' सही मार्गक अवलम्बन करय । हम सभ जनैत छी जे सीताराम झा शास्त्रार्थी पण्डित छलाह । तें तार्किक ढंग सँ विषयक प्रस्तुतिक ई आग्रह स्वाभाविक छलनि । निष्कर्ष धरि पहुँचबाक हेतु एहि बुद्धिवादी विकल्पक उपयोग काव्य-रचना मे करब युगीन चेतनाक अनुगमनक संग हुनक प्रकृतिक अनुकूल सेहो छल ।

ई लेखन-प्रवृति हुनक अन्यो रचना मे दृष्टिगत होइत अछि । उदाहरणक लेल **लोक लक्षण** आ **परिचय-दर्पण** कें देखल जा सकैत अछि । ई दुनू पोथी अन्ततः एकटा दर्पण मात्र थिक । समाज मे केहन-केहन लोक होइत अछि, ओकर गुण-अवगुण की होइत छैक आदि तथ्य कें ओ बिटिया कऽ पकड़लनि आ खोंइचा छोड़ा कऽ राखि देलनि । लोक देखओ जे ओ कतऽ अछि ? ओकर चेहरा केहन छैक ? **लोक-लक्षण** एतेक लोकप्रिय ओहिना नहि भेल । मानवीय चरित्र आ स्वभावक मैथिल संस्करणक एतेक सूक्ष्म निरीक्षण करब आ ओकरा ओकरे भाषा मे राखि देब मामूली बात नहि छल । ई सभ पोथी मैथिल समाजक अलबम छल । मिथिलाक लोककें ओहि मे अपन छवि भेटलैक । कहबाक अभिप्राय ई जे सीताराम झा मैथिलीक पहिल कवि छलाह जे आत्म-संघर्षक कविता लिखलनि । एही समय मे यैह काज मैथिली गद्यक माध्यम सँ हरिमोहन झा कऽ रहल छलाह । भविष्यक चिन्ता आत्मालोचनक आवश्यकता कें घनीभूत कऽ रहल छल । युगचेता साहित्यकार एहि आवश्यकताक पूर्त्ति मे लागि गेलाह।

वैचारिक स्तरपर देखल जाय तऽ सीताराम झाक लेखन मे अन्तर्विरोध अछि। अपन कविता मे ओ सामाजिक विषमता आ विद्रूप कें देखार करैत छथि, धार्मिक अन्ध विश्वास आ आर्थिक पराभवक विरोध मे बजैत छथि तऽ संगहि वर्णाश्रम-प्रथा, जातिगत सामाजिक संरचनाक तथा धनपतिक समर्थन सेहो करैत छथि । एतबे नहि, ओ जनैत छलाह जे भूकम्पक कारण 'भू गर्भस्थ विकार' होइत अछि, तथापि लिखैत छथि–'भूमिक कापब देश मे, थिक पापक परिणाम'। निस्सन्देह ई सभ चिन्तनक अन्तर्विरोध थिक। एकर अनेक कारण भऽ सकैत अछि । केओ एकरा हुनक मध्यमवर्गीय मानसिकताक देन कहि सकैत छथि तऽ ककरो लेल हुनक संस्कृत-शास्त्रक शिक्षा-दीक्षा, अध्ययन-अध्यापन उत्तरदायी भऽ सकैत अछि । मुदा, हमरा जनैत एहिठाम दूटा बात विचारणीय अछि । पहिल बात ई जे सीताराम झाक दृष्टिकोण मे जे अन्तर्विरोध छल से हुनक व्यक्तिगत सोचक उपजा नहि, युगक देन छल । जागरणकाल मे राजभक्तिक संग जनभक्ति आ कि राष्ट्रभक्ति बहुत दिन धरि चलैत रहल । जखन हिन्दीक कवि मैथिलीशरण गुप्त **भारत भारती** लिखलनि (1912 ई.) तखन ओहू मे राजभक्तिक

संग देशभक्तिक स्वर पाओल गेल । गुप्तजी पर सेहो कालान्तर मे वैचारिक अन्तर्विरोधक आरोप लगाओल गेल । संक्रमणकाल मे एहि प्रकारक मानसिकता अस्वाभाविक नहि छल । ओ युगीन द्वन्द्वक द्योतक छल । तें देखबाक दोसर विन्दु ई थिक जे सीताराम झा ठमकल आचार-विचार तथा गतिशील जीवन-दृष्टिक द्वन्द्व मे आखिर ककरा स्वीकार करैत छथि । चिन्तनक अन्तर्विरोध जाहि मनोभावक देन थिक ताहि मे अन्ततः पलड़ा ककर भारी होइत छैक ? एकर निराकरण लेल किछु सम-सामयिक मुद्दा पर सीताराम झाक विचारधारा कें जानब जरूरी अछि । जेना, भाषाक प्रश्न । कहि चुकल छी जे ओहि समय मे स्वभाषा-प्रेमक बिरड़ो उठल छल । सीताराम झा सेहो ओहि मे उधिअयलाह । मुदा, उधियाकऽ स्थान भ्रष्ट नहि भेलाह । मुजफ्फरपुर मे (1936 ई.) भेल कवि-सम्मेलनक अध्यक्षीय भाषण ओ पद्यबद्ध कयलनि आ ताहि मे उत्तेजक उद्‌बोधन-सूत्रक घोषणा करैत कहलनि–

पायब किछु अधिकार कतहु की बिना झगड़ने ।
अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने ।

एहि भाषण मे मातृभाषा मैथिलीक प्रसंग ओ कहैत छथि–

जौं परभाषा जानि आइ ओ लागै खट्टा
तौं जानू जे अवश भाग्य मे लागल बट्टा

आगाँ ओ आओर स्पष्ट करैत कहैत छथि–

जहि भाषाक बलें बूझी चूहा थिक मुसरी
भै परभाषाविज्ञ अहाँ तकरा जुनि बिसरी ।

एहिठाम मातृभाषा पर जोर अछि अवश्य, मुदा एकटा खास सन्दर्भ मे । मातृभाषा-प्रेमक बात ओकरा कहल गेलैक अछि जे–'परभाषाविज्ञ' अछि । हुनका विचारें परभाषा जानब अधलाह नहि, मुदा मैथिलीओक आदर होयबाक चाही । तें ओ निष्कर्ष रूप मे कहैत छथि–

निज साहित्यक प्रेम राखि भाषा पुनि आनक
सीखथि ज्ञानक हेतु काज थिक ई मतिमानक
किन्तु कने हम सीखि आइ हिन्दी-अङरेजी
की कृतघ्नता बाढि ? अपन भाषा जौं तेजी ।

कहबाक प्रयोजन नहि जे सीताराम झा मैथिलीक लेल हिन्दी ओ अंग्रेजीक

अथवा हिन्दी–अंग्रेजीक लेल मैथिलीक अवमानना करबाक पक्ष मे नहि छलाह । हुनक दृष्टि मे एकाधिक भाषा जानब आ विभिन्न भाषाक साहित्यक सम्मान करब सर्वथा उचित थिक । ओ तँ स्पष्ट शब्द मे कहैत छथि–

मानी शब्दक युक्त अर्थ, नहि बनि आग्रही।
भाषा कोनो होय–विदेशी देशी मगही ।

एहिना अछि स्त्री–शिक्षाक समस्या । ओहिकालक मिथिला मे एहि समस्या पर खूब घमर्थन भऽ रहल छल । सीताराम झा एहि प्रसंग विस्तार सँ आ गंभीरतापूर्वक विचार कयलनि। ओ एकटा पोथी लिखलनि–**स्त्री–शिक्षा पर परामर्श** । ई चम्पू–काव्य थिक । एकर प्रकाशन पुस्तक रूप मे आइ धरि नहि भेल अछि । 'मिथिला मोद' मे 1937 ई. मे छपल छल । स्त्री–शिक्षाक इतिहास तथा वर्त्तमान स्थितिक उल्लेख करैत सीताराम झा ओहि सामाजिक सन्दर्भ पर विचार कयलनि अछि जाहि मे स्त्री–शिक्षाक हेतु अनुकूल वातावरण स्वत: तैयार भऽ जाइत छैक । तात्पर्य ई जे सीताराम झा स्त्री–शिक्षा कैँ तेहो भाषा–समस्या जकाँ एकांगी रूप मे नहि लेलनि । ओकरा ओ व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य मे देखलनि आ तखन ओकर आवश्यकता पर जोर देलनि । अननुकूल सामाजिक वातावरण मे स्त्री शिक्षाक परिणामक संकेत ओ एहि रूप मे कयने छथि–

स्त्री पढ़ि ताकथु नौकरी, पुरुष लेथु अहिबात
कोड़ो गनि–गनि राति भरि, सुख सँ करथु परात

किन्तु, सामाजिक परिस्थिति कैँ सुधारि वातावरण अनुकूल बनायब आ तखन स्त्री–शिक्षाक प्रचार–प्रसार करब ओ जरूरी बुझैत छलाह । हुनक दृष्टिकोण कैँ स्पष्टत: बुझबाक लेल हमरा एकटा कविताक उद्धरण देब आवश्यक लगैत अछि । ओकर शीर्षक थिक–'विद्यापतिक स्मृति मे' । एहि मे स्त्री–शिक्षाक प्रसंग तऽ अपन बात कहबे कयलनि अछि, एकटा बात आओर कहलनि अछि । ई कविता अछि विद्यापतिक स्मृति मे । सीताराम झाक स्मृति मे विद्यापतिक भक्त अथवा शृंगारी कविक छवि नहि अबैत अछि । ओ अपन पुरुषा–कविकैँ कोन दृष्टिएँ देखैत छथि से ध्यान देबाक थिक। मैथिलीक श्रेष्ठतम कविक श्रेष्ठता हुनका कतऽ भेटैत छनि से देखबाक विषय थिक। ओ विन्दु अछि विद्यापतिक जनहित–चेतना । सीताराम झा विद्यापतिक एहि चेतना सँ प्रभावित भऽ हुनक स्मृति मे की कहैत छथि से देखल जाय–

कालक वश कन्याक प्रति बापक अत्याचार
लखि विद्यापति कयल निज हित उपदेश प्रचार
हित उपदेश प्रचार उमाक विवाहक छल सँ

दुरित हँटाबक हेतु कयल निज जातिक दल सँ
थिक जननिक अधिकार सकल कन्या प्रतिपालक
देल सबहि कैँ ज्ञान गीत रचि परिछन–कालक
गौलनि गाइनि संग मिलि अपनहु घर घर जाय
सिखलनि सभ–'हम नहि करब बूढ़ बलेल जमाय'
'बूढ़ बलेल जमाय करी नहि' सभजन जनितहु
करथि अमेल–विवाह देखि कनियाँ कैँ कनितहु
की करती ? कनियाँक माय अमरुख पति पौलनि
नहि सुधरल छथि पुरुष–यदपि विद्यापति गौलनि
पण्डित ज्ञानी बहुत छथि बनल कूप–मण्डूक
नारि सुधारथु सबहि कैँ लेथु हाथ मे ऊक
लेथु हाथमे ऊक पुरुष कैँ पथ दरसाबथु
अपने पढ़थु पुराण शास्त्र आ अर्थ लगाबथु
नहि तँ होइत रहत अदण्यो जन नित दण्डित
पर विश्वासी रहत देश मे जा धरि पण्डित ।

एहिठाम सीताराम झा नारी जागरणक प्रवोधक बनि कऽ अबैत छथि । हुनक प्रवोधनक विशेषता ई थिक जे ओ नारी कैँ स्वयं आगाँ अयबाक बात कहैत छथि–नारीक विकास लेल भाड़ा परहक पुरुषक प्रतिनियुक्तिक अनुशंसा नहि करैत छथि ।

सामाजिक जीवनक आनो–आनो विन्दु पर सीताराम झाक विचार एहिना फरिछायल–सोझरायल अछि । धर्म, जाति, अधिकार, कर्त्तव्य आदि एहन विषय छल जकर ओझरा मे पड़ि कऽ समाजक लोक भुतिया रहल छल । युगचेता कवि सीताराम झा एहि सभ विषय पर विचारे नहि व्यक्त कयलनि, एहन विचार व्यक्त कयलनि जाहि सँ समाज आगाँ बढ़य । कवि–विचारक रूप मे हुनक भूमिका तें महत्त्वपूर्ण अछि । भीमनाथ झाक एहि कथन सँ हम सहमत नहि छी जे सीताराम झा अपन ज्योतिषकर्मक अपेक्षा कवि–कर्म कैँ कम महत्त्व दैत छलाह । कविता–पोथी सँ ज्योतिष विषयक पुस्तकक अधिक संख्या होयबाक अनेक कारण छल । दोसर बात, महत्त्व मात्राक नहि, मूल्यवत्ताक अछि । उल्लेखनीय बात ईहो अछि जे कवि रूप हो वा ज्योतिषी रूप–सीताराम झाक दृष्टिकोण सामाजिक गतिशीलताक पक्षधर छल । सुनैत छी, ज्योतिषी भइयो कऽ ओ हस्तरेखा देखबाक वा कुण्डली बनयबाक आर्थिक व्यापार नहि करैत छलाह । एहन कतोक प्रतिगामी काज छल जकर विरोध ओ अपन आचरण सँ करैत रहथि । अतिचारक

विरोध मे ओ जाहि तरहें लड़लाह से सर्वविदित अछि । ज्योतिष केँ ओ कहियो व्यवसाय रूप मे नहि लेलनि । ओकरा एकटा शास्त्र बुझलनि आ तदनुसार ओकर अध्ययन-अध्यापन कयलनि ।

धर्मक सम्बन्ध मे सेहो हुनक धारणा तद्वते छलनि । ई सत्य जे सीताराम झा धर्म-प्राण लोक छलाह । ईश्वर पर हुनका आस्था रहनि । किन्तु, ईश्वरीय सत्ता केँ स्वीकारितो ओकर आडम्बर सँ हुनका घृणा छलनि । धार्मिक कर्मकाण्ड केँ ओ प्रवंचना मानैत छलाह। हुनक कहब छनि--

डाँर लंगोटी मूजक डोरी
भस्म शरीर बगल मे झोरी
भय धर्मात्मा भेष अघोरी
दिन मे भीख राति मे चोरी
धर्म होय नहि जटा बढ़ौने
वा घड़ीघंट वा शंख बजौने

अपन पुस्तक **रत्न-संग्रह** मे तत्कालीन धर्मावलम्बी सँ 'वैमत्य' प्रकट करैत ओ लिखने छथि–

धर्म नहि मानै निज कर्म नहि जानै
परमर्म नहि बूझि रहै, दुष्ट संग राजी भै
x x x
चण्ठ भै पुजाबै कते लण्ठ रहि मण्ठ बीच
बान्हि काठ कण्ठबीच फुसिए बबाजी भै ।

सीताराम झा आचार: परमोधर्म: केर अनुयायी छलाह । धर्मक सम्बन्ध आचार सँ अछि, आ आचार समाज-सापेक्ष होइत अछि । व्यक्तिक नैतिकता आ कर्त्तव्य समाज सँ अनुशासित रहैत अछि । एहि तथ्यक प्रतिपादन सीताराम झा कयने छथि अपन चम्पू-काव्य **समाज, धर्म ओ कर्त्तव्य** मे । एकर प्रकाशन 1936 ई. मे 'मिथिला-मोद' मे भेल अछि । एहि पोथी मे ओ समाज, धर्म तथा कर्त्तव्यक विशद विवेचन कयने छथि । बाद मे **उनटा बसात** नामक पुस्तिकाक 'पूर्व-कथन' मे सेहो ओ अपन विचार संक्षिप्त रूप मे रखलनि अछि–''ई सबहिक अन्तरात्मा स्वीकार करैछ जे कर्त्तव्य कार्यकेँ करब धर्म अथवा पुण्य कहबैछ तथा अकर्त्तव्य कार्य करब अधर्म अथवा पाप कहबैछ एवं पुण्यक फल सुख ओ पापक फल दु:ख होइछ । जाहि सँ ककरो हानि नहि होइत अपन वा आनक उपकार हो एहन कार्य शास्त्र-पुराण मे कर्त्तव्य तथा जाहि सौं ककरो हानि हो एहन कार्य अकर्त्तव्य कहल गेल अछि ।''

स्पष्ट अछि जे सीताराम झा धर्म केँ कर्त्तव्य सँ समन्वित करैत छथि आ कर्त्तव्य केँ जोड़ैत छथि जनहित सँ । यैह समाज-चेतना हुनक काव्य प्रणयनक मूलाधार थिक। ओ तँ एतेक दूर धरि कहैत छथि जे–

करब स्वराज्य की जौं तोड़ब समाजबन्ध
नेह घृत लेपि की जौं देह बिच प्रान नहि
डाहि देब तूर केँ तौं चरखे बनाय की हो
बरषे मनाय की जौं खेत बिच धान नहि ।

स्मरण रखबाक थिक जे सीताराम झा ई बात 1929 इसवीक अन्त मे कहलनि। एकर शीर्षक अछि 'नवयुवक सँ निवेदन'। जवाहर लाल नेहरू द्वारा 1929 ई. मे पूर्ण स्वराज्यक प्रस्ताव राखल गेल छल, आ ताही पृष्ठभूमि मे सीताराम झा देशक नवयुवक सँ उक्त निवेदन करैत छथि । ओ साफ कहैत छथि जे स्वराज्य सँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि सामाजिकता । सामाजिक एकताक अभाव मे अर्थात् समाजबन्ध बिना स्वराज्यक कोनो मोल नहि अछि । गान्धीक चर्खा-आन्दोलनक प्रति सेहो हुनक ध्वनि-व्यंजना द्रष्टव्य अछि । मुदा, एहिठाम हमरा एतबे कहबाक अछि जे सीताराम झा समाज आ सामाजिकता केँ कोनो वस्तु सँ अधिक महत्त्वपूर्ण तथा बलशाली मानैत छलाह आ ओकर हनन हुनका कोनो मूल्य पर स्वीकार नहि छलनि। समाजबन्धक अभाव मे स्वराज्य केहन फोंक होइत छैक से हम सभ आइ स्पष्टत: देखि रहल छी ।

वैचारिकताक एही सरणि पर चलैत एक दिस सीताराम झा अधिकार-प्राप्तिक हेतु 'अछि सलाइ मे आगि'....सनक पाँती लिखि कऽ संघर्षक आह्वान करैत छथि तऽ दोसर दिस कर्त्तव्यक प्रति सचेत होयबाक लेल सेहो कहैत छथि । हम सभ जनैत छी जे ओही समय मे लोकमान्य तिलक 'गीता-रहस्य' अथवा कर्मयोगशास्त्र लिखि कऽ गीताक नवीन व्याख्या प्रस्तुत कयने रहथि । ई व्याख्या युगीन आवश्यकताक देन छल । सीताराम झा सेहो एहि आवश्यकताक सम्मुखीन भेलाह । तें ओहो गीताक आंशिक अनुवाद **गीतातत्त्व सुधा** नाम सँ कयलनि । मुदा, हुनका एतबे सँ संतोष नहि भेलनि। ओ **'कर्त्तव्याकर्त्तव्य'** नामक कवितो लिखलनि । सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात ई भेल जे कर्त्तव्यक ज्ञान करयबाक यैह इच्छा **अम्बचरित** सदृश महाकाव्यक लेखनक कारण बनल । ग्रन्थक उद्देश्यक उल्लेख करैत ओ लिखने छथि–

नर-नारिक कर्त्तव्य की, अकर्त्तव्य की थीक ?
की कयने अधलाह ओ, की कयने फल नीक ?
ककर त्याग जग मे करी ? करी ककर अवलम्ब ?
से सिखबै छथि प्रगट भै जगतपिता, जगदम्ब ।

स्पष्ट अछि जे सीताराम झाक काव्य-रचनाक एकटा प्रयोजन छल । उद्देश्य छल। तें हुनक कविता सुविचारित लक्ष्य प्राप्तिक माध्यम थिक । ई तथ्य तखन आओर स्पष्ट होइत अछि जखन हुनक राजनीतिक विषय-वस्तुवला कविता पढ़ैत छी । ओहि समय मे गान्धीजीक अहिंसा-सिद्धान्त हड़विरड़ा मचौने छल । सीताराम झा ओहि प्रसंग जे प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि से देखल जाय-

जहि सँ हित बहुजनक से वचन सत्य सुखधाम
बहुतक हित जहि कर्म सँ तकर अहिंसा नाम
तकर अहिंसा नाम होय बरु सन्मुख हिंसा
रावणवध कैँ बुझथि विज्ञजन यथा अहिंसा
बाजि युधिष्ठिर फूसि पाप मानल नहि तहि सौं
बूझल गेल से सत्य भेल बहुजन हित जहि सौं ।

एहिठाम हुनक एक अन्य काव्यरचना सहजहि मन पड़ैत अछि । 1939 ई. मे लिखित एकटा चैती गजल तत्कालीन राजनीतिक स्थितिक उपस्थापने नहि थिक, ओहि मादे व्यंग्योक्तिपूर्ण टिप्पणी सेहो थिक । मैथिली मे एहि प्रकारक काव्य-रचना कैँ उत्कृष्टताक शिखर पर पहुँचौलनि अछि यात्री, मुदा तकर बीजारोपण सीतारामे झाक कयल छनि-

हम की मनाउ चैती सतुआनि जूड़शीतल
भै गेल माघ मासहिं धधकै घूड़ तीतल ।
अछि देश मे दुपाटी कङरेस ओ किसानक
हम माँझ मे पड़ल छी बनिकैँ बिलाड़ि तीतल।
गांधीक पक्ष ई जे सुख जौं चहैछ सब तौं
राजा-प्रजा परस्पर सबठाम रहै रीतल ।
एक दिस सुभाष बाबू ललकारि ई कहै छथि
कय देब हम बराबरि आकाश ओ महीतल ।
कर्त्तव्य की एतय ? ई हमरा अहाँ पुछी तौं
मिलि जाउ मालवीवत् पाटी परीखि जीतल ।

ई बात नहि अछि जे सीताराम झाक राजनीतिक जागरुकता स्वतंत्रता आन्दोलने धरि सीमित रहलनि । अगस्त, 1947 मे भारत कैँ स्वतंत्रता भेटलैक आ जनवरी '48 मे 'स्वदेश' मे हुनक 'स्वराज्य गीत' प्रकाशित भेल-

सुनल भेल स्वतंत्र भारत नहि तथापि स्वराज़ देखल
'नेहरू राजा' मुदा नहि हुनक मस्तक ताज देखल
गेल कृत्रिम शत्रु तौं पुनि सहज बैरी घेरि बैसल
छुटल अपरस करक तौं भरि-देह पसरल खाज देखल
जानि न्यायी भोट दै जनिका हमहि हाकिम बनावल
घूस तनिको लैत कनिको आँखि मे नहि लाज देखल
कोन विधि अछि के कतय से पाबि पद नेता बिसरला
अपन सुविधा हेतु धरि मोटर हवाइ जहाज देखल ।

स्वतंत्र भारतक दु:स्थिति जखन कनेक आओर गड़िया गेल तखन ओ १९५३ मे फरिछा कऽ कहलनि-

जे ख्यात लोक मे घरफोड़क
से मालिक भै देशी स्टोरक ।
छथि दहिन भेल डाकू चोरक
अधिकार हाथ अछि घुमघोरक ।
सबठाँ आदर लाठी जोरक
नहि खोज दुखी आन्हर खोरक ।
देखी सब थल खल-पक्षपात
बहि रहल आइ उनटा बसात ।

देशक राजनीतिक गतिविधि पर सीताराम झा अपन प्रतिक्रिया बिना कोनो लाइ-लपटाइ कैँ प्रकट कयलनि अछि । नेहरू सन एकबाली लोकक अछैत कांग्रेस पार्टीक दशा-दिशाक सम्बन्ध मे ओ निस्संकोच कहैत छथि-

खद्दरधरिक फुजि गेल पोल
करमे कैंची मुख मीठ बोल
अपनहु मे कैलन्हि तीनि गोल
अन्नक महगी सँ उठल घोल ।

एहिठाम सीताराम झा राजनीतिक भ्रष्टाचारक आर्थिक परिणामक बात कहैत छथि। ओ जनैत छलाह जे अर्थ मानव-जीवनक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नियंन्त्रक तत्त्व थिक । यैह कारण थिक जे **रत्न-संग्रह** मे ओ देव-स्तुतिक संग टका-स्तुति सेहो करैत छथि । हुनक व्यंग्य-दृष्टिक पता तखन चलैत अछि जखन पबैत छी जे गणेश, शिव, जगदम्बाक संग दरभंगा महाराज, हुनक पत्नी आ टकाक स्तवन सेहो कयल गेल अछि। 'टकास्तुति' मे ओ कहैत छथि-

जगत मे टका अहीं पर-धान
अहीं सृष्टिकारक ओ पालक संहारक भगवान ।
अहीं विवेक, बुद्धि, विद्या बल, विनय विभव विज्ञान
अहीं तात जननी हित सोदर, पुत्र कलत्र प्रमान
सकल असुर सुर नर वशकारक, एक अहीं नहि आन
'सीताराम' सकल थल सबखन, होए अहिंक गुनगान ।

धनक वशकारक प्रभाव कें ध्यान मे रखैत ओ चेतौनी दैत छथि–

बसनहि की होएत मङरौनी, पिलखबाड़ वा राँटी
कुल गौरव की धो-धो चाटब, धन कै बाजै घाँटी

विद्रूप आ विसंगतिक प्रति ई व्यंग्यात्मक दृष्टि जनहितक जाहि गाढ़ ममता सँ उत्पन्न होइत छैक से सीताराम झा मे कूट-कूट कऽ भरल छलनि । हुनका दृष्टि मे सम्पूर्ण समाज छल । **टनटा बसात** मे ओ हलखोड़, डोम, मुसहर आ किरात कें कुबातो कहब 'आत्मघात' बुझैत छथि । एहिठाम 'आत्म-घात' शब्दक प्रयोग ध्यानीय अछि। सामाजिक आपकता आ अन्तरंगताक यैह भावना हुनका सामाजिक अनाचार आ अत्याचारक विरोध मे ठाढ़ कऽ दैत अछि । ओ लोहछि कऽ बमकि पड़ैत छथि–

चाही जमीन्दार कें गृहस्थ उपजाए अन्न
बाँकीटा सधाबै बेचि खाए नहि पाबै क्यौ ।
ओकिल कैं चाही नित्य मोकिल अदालत मे
आबि पुछै राय, कोनो 'केस'टा चलाबै क्यौ ।
बैसीटा घमण्डित भै पण्डितकें चाही आब
पाँचोटा अधेला राखि पतिया कटाबै क्यौ ।
चाही यजमानी मे पुरोहितकें दच्छिना टा
बाभन कें चाही नित्य न्यौतटा खुआबै क्यो ।

ई उद्धरण थिक सीताराम झाक 'आधुनिक आवश्यकता' शीर्षक कविताक जे **रत्न-संग्रह** मे संकलित अछि । मन पाड़बाक थिक जे एहि पोथीक प्रकाशन ओहि वर्ष भेल जाहि वर्ष 'कन्यादान'क लेखन प्रारम्भ भेल छल । ई बात भिन्न थिक जे ओकर पुस्तकाकार प्रकाशन तीन साल बाद भेल, मुदा सीताराम झा आ हरिमोहन झा युग-बोध कें समानान्तर स्तर पर मुखर कऽ रहल छलाह से द्रष्टव्य अछि ।

सीताराम झाक समाजबन्धक एक आओर आयाम उल्लेखनीय अछि । सीताराम झा मैथिलीक पहिल कवि छलाह जे मुक्तक कविताक माध्यम सँ छवो ऋतुक वर्णन कयलनि। एहि सँ पहिने महाकाव्य मे, संस्कृत काव्य-शास्त्रक अनुगमन करैत, ऋतु-वर्णन भेल छल। मुदा, सीताराम झा ओकरा मुक्तक कविता धरि लऽ गेलाह । ई विस्तार सोद्देश्य छल । पहिने ऋतु-वर्णनक अर्थ होइत छल प्रकृति-वर्णन अथवा शृंगार-वर्णन । सीताराम झा संस्कृत-साहित्यक एहि बाट कें छोड़ि देलनि । ओ अपन बाट बनौलनि । ऋतु वर्णन कें व्यापक कयलनि । ऋतु वर्णनक व्याजें मिथिलाक सामाजिक जीवन कें रेखांकित कयलनि । ई बात ओ स्वयं कहने छथि–

ऋतुक लाथ सँ कहल किछु निज देशक व्यबहार
अछि आशा करता ग्रहण गुणमात्रक बुधियार ।

किन्तु, मास-वर्णनक लाथ सँ मिथिलाक वर्णन करबे महत्त्वक बात नहि थिक। ओहि सँ बेसी ध्यान देबाक विषय ई थिक जे सीताराम झा जाहि मिथिलाक वर्णन कयलनि अछि ओ कोन मिथिला थिक ? निश्चित रूप सँ ओ मिथिला थिक किसानक। किसान आ किसान-जीवनक रीति-रेवाज, आचार-विचार कें जाहि प्रमुखताक संग सीताराम झा चित्रित कयलनि अछि से मैथिली कविता मे पहिने नहि भेल छल। निस्संकोच कहल जा सकैत अछि जे मैथिली मे सीताराम झा किसानक पहिल कवि छथि । डाक-वचनक पृष्ठभूमि आ विषय-वस्तु फराक अछि । तकरा बादक मैथिली कविता मे किसान लुप्त भऽ गेल । सीताराम झा एहि तथ्यपर ध्यान देलनि । मिथिलाक सामाजिक संरचना मूलतः आ मुख्यतः किसानधर्मी थिक । तें समाज-चेतना सँ प्रबुद्ध कवि सीताराम झा ओहि जीवनक कथा कें ऋतु-वर्णनक बरहमासा मे रखैत छथि तऽ से स्वाभाविके थिक ।

ई बात सत्य जे सीताराम झा एक्के ऋतुक वर्णनं मे अनेक कविता लिखलनि अछि । **मैथिली-काव्योपवन** मे प्रकाशित ऋतु-वर्णन सँ पत्र-पत्रिका मे छपल ओही ऋतुक वर्णन दोसर प्रकारक अछि । मुदा, ऋतु-वर्णनक शैली एक्के अछि । स्वभाव मे सेहो कोनो मौलिक अन्तर नहि अछि । वर्णन मे शब्द-संयोजनक भिन्नता, ओहि मे संकुचन आ व्यापकता तथा स्वर-संधानक तीव्रता आ मृदुता कोनो खास महत्त्वक बात नहि थिक। असली वस्तु थिक ऋतु-वर्णनक माध्यम सँ प्रक्षेपित होइत दृष्टिकोण। से एक्के अछि। से जनहितमूलक अछि । 'विभूति'क शरदंक (अक्टूबर-नवम्बर, 1937) मे प्रकाशित शरत ऋतुक वर्णन मे ओ की कहैत छथि से देखल जाय–

क्यो कोजागरा साँठक हेतुक ताकथि-रीन-पैंच के देत
बेचथि बड़द, अन्न, गहना, क्यो बन्धक अपन रखै छथि खेत
पहिनहि सँ भरियाक खुशामद हेतु रचै छथि बहुतो ढंग
तकरा सबक विदाइक चिन्तैं वरक बाप भिन्ने छथि तंग

x x x

गम्हरल धान देखि कर्षकजन दै छथि आइ मोछ पर ताव
दूर-दूर सँ आबि करै अछि व्यापारी एखनहि सँ भाव
लगले खेत बेचि, बाँकी मे दै छथि जमींदार कें दाम
अपना धियापुता हेतुक पुनि छथि मालिक श्री सीताराम ।

ई थिक सीताराम झाक शरत्-ॠतु वर्णन अर्थात् 'शरत्समाचार'। मैथिल सभक तथाकथित सामाजिक मर्यादाक हाथी निकलि गेल अछि, मुदा ओ सभ कोना ओकर नाङड़ि एखनहु धरि धेनहि छथि तकर बड़ मार्मिक चित्रण उक्त पहिल चारि पंक्ति मे अछि। तहिना खेतिहर किसानक दयनीय जीवन-स्थितिक दू-टूक वर्णन अछि अन्तिम पद मे । युग-परिवेशक प्रति यैह जागरूकता सीताराम झाक काव्य-रचनाक स्थायी भाव थिक ।

सीताराम झा यात्रीक काव्य-गुरु छलथिन ताहिमे सन्देहक रंचमात्रो स्थान नहि अछि। हमसभ एहि युग-प्रवर्त्तक गुरु-शिष्यक प्रति आभारी छी जे स्फीत जीवन-दृष्टि आ तकर निर्भीक एवं निर्लेप अभिव्यक्तिक गुरु-मंत्र दऽ गेलाह अछि ।



शैलेन्द्र कुमार झा

मिथिलाक परम्परागत उद्योग

बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध तक अबैत-अबैत अल्पविकसित राष्ट्र वा क्षेत्र सभहिक विकास-तीव्रतर विकास, आर्थिक-जगतक सर्वाधिक प्रमुख आ गम्भीर समस्या बनि चुकल छल । विकसित राष्ट्र सभक आर्थिक स्वामित्वक गारंटी मूलतः एहि बात पर उत्तरोत्तर निर्भर करए लगलैक जे विश्व मे अल्पविकसित क्षेत्र कम सँ कम होअए । अतिशय व्यापार आ उपभोक्ता-संस्कारक परिणति अत्यधिक उत्पादन आ ताहि कारणें सद्यः सम्भावित मंदीक दीर्घकालीन दुश्चक्रक संक्रमण मे होयतैक, से एहि भयक मूल कारण छल । संगहि प्रतिवर्ष, स्वभावानुसार, अल्पविकसित क्षेत्रक अनवरत बढ़ैत जनसंख्याक तुलना मे विकसित क्षेत्रक अपेक्षाकृत क्षीण होइत जनसंख्याक प्रतिनिधि-शक्ति, अपन वर्चस्व स्थापित क'कए रखबामे असमर्थताक पूर्वाभास अनुभव करए लागल । दोसर दिस अल्पविकसित क्षेत्र आब स्वयं अपन दुरवस्थाक प्रति असंतुष्ट हुअ' लागल छल । आर्थिक आ राजनैतिक चेतनाक विकास क्रम मे आब एहि क्षेत्रक लोककेँ अपन तुलनात्मक स्थितिक पूर्ण ज्ञाने नहि भेलैक, अपितु ओकरा सभ मे तीव्रतर आर्थिक विकास आ प्रतिस्पर्धाक भावनाक उदय सेहो भेलैक । एहेन सन भावना तेहेन क्षेत्र मे बेसी तीव्रताक संग जाग्रत भेलैक, जकर इतिहास समुन्नत रहल होइक । विश्व मे कतेको ऐहन क्षेत्र अछि जे पहिनहुँ बड़ पछुआएल छल आ आबहुँ पछुआएले अछि। एहेन क्षेत्रक जनमानस मे विकासक अवधारणाक नवोदय भ' सकैत छैक, भइयो रहलैक अछि; किन्तु जाहि क्षेत्र मे सभ्यता आ संस्कृति उत्कर्ष पर पहुँचि चुकल हो, सहस्त्रो वर्षक जकर कान्तिमय इतिहास रहल हो, समस्त विश्व मे जकर आध्यात्मिक आ भौतिक वर्चस्व रहल होइक-ओहि क्षेत्रक लोकक लेल एहेन अवनति सर्वथा असह्य भ' सकैत छै । मिथिला वा स्थूल रूप मे आ वर्त्तमान राजनैतिक तथा भौगौलिक परिप्रेक्ष्य मे कही त' उत्तर-बिहारक समस्त क्षेत्र किछु एहने सन यंत्रणाभोगि रहल अछि ।

एहि अवनति अनेक कारण गनाओल जा सकैत अछि–मुदा आजुक सत्य इएह छैक जे स्वतंत्रता प्राप्तिक पचास वर्ष बादहुँ ई क्षेत्र भारतवर्षक निर्धनतम राज्यक निर्धनतम क्षेत्र बनि क' रहबाक लेल बाध्य अछि। ईहो ध्रुव सत्य जे एकरा एहि दुरवस्था सँ उबारबाक कोनोटा सचेष्ट प्रयास कोनो स्तर पर नहि कएल गेल। एहेन क्षेत्र कम भेटत जे स्वातंत्रोत्तर भारतक पचास वर्ष मे ठामहि रहल बल्कि तुलनात्मक रूप सँ किछु पाछूए घुसकल। जे क्षेत्र कोनो समय 'भारतवर्षक फुलबारी' आ 'देशक अन्न भण्डार' कहल जाइत छल, से एकटा स्थायी याचक बनिक' रहि गेल अछि, जकर हाथ सदिखन प्रान्तीय तथा केन्द्र-सरकारक दिस भीखक लेल पसरल रहैत छैक। जाहि क्षेत्रकेँ आदि-सभ्यता आ संस्कृतिक उद्‌गम स्थल बनबाक सौभाग्य भेटल होइक; जे क्षेत्र वैदिक-साहित्य, न्याय-दर्शन, मीमांसा, धर्मसूत्र, व्याकरण तथा साहित्य इत्यादि मे विश्वभरि मे शीर्षस्थ स्थान रखैत रहल हो; जे क्षेत्र राजनीतिशास्त्र आ अर्थशास्त्र सन विषय मे विश्वकेँ विषद ज्ञान-भण्डार प्रदान कएने हो; जे क्षेत्र उच्च-स्तरीय शिक्षा आ ज्ञान-प्राप्तिक प्रमुखतम केन्द्र मानल जाइत रहल हो-तकर एहेन दुर्दशा जे ओतए आधुनिक सन्दर्भ मे निरक्षर आ अशिक्षित लोकक प्रतिशत-जनसंख्या (एक आध अपवाद छोड़िक') समस्त राष्ट्र मे सर्वाधिक होइक। एतए निर्धनतम श्रेणी मे आबएबला लोकक संख्या अधिकाधिक अछि। बेमारी, भूखमरी, अशिक्षा आ घोर हताशा एहि क्षेत्रक लोकक नियति बनि गेल छैक। दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना ई जे दलित-उत्थानक व्यामोह पसारिक' नाराभोगी राजनीतिक 'मसीहा' लोकनिक दृष्टि सँ सर्वथा उपेक्षित ई क्षेत्र प्रायः सभ दृष्टिएँ सर्वाधिक दलित आ शोषित होइत मात्र अपन अस्तित्व-रक्षाक निमित्तहिं सतत् संघर्षशील रहबाक लेल बाध्य भ' गेल अछि। क' देल गेल अछि।

इएह ओ क्षेत्र अछि जकर सांस्कृतिके नहि अपितु आर्थिको इतिहास वैदिक काल सँ ल' कए उन्नैसम शताब्दी धरि समस्त विश्व मे उद्‌भासित रहलैक। इएह ओ क्षेत्र अछि जकर आर्थिक परम्पराक समकक्ष, विश्वक आर्थिक इतिहास मे कोनो आन क्षेत्र ठाढ़ नहि भ' सकैत अछि। इएह ओ एकमात्र क्षेत्र अछि जकर सहस्रो वर्षक आर्थिक समुच्यताक अखण्ड परम्परा रहलैक अछि–आ इएह विश्वक आर्थिक इतिहास मे एकमात्र एहेन क्षेत्र अछि जे शृंखलावद्ध कालखण्ड मे विश्व बाजार मे एकाधिक औद्योगिक उत्पादक उत्पादन तथा विपणन मे एकाधिकारी वा एकाधिकारी सदृश वर्चस्व बना क' रखने छल। हजारों वर्षक ई वर्चस्विता कोना भ 'क' देखिते-देखिते, सए-डेढ़ सए वर्ष मे लुप्तप्राय भ' गेलैक, तकरा सम्बन्ध मे चिंतन आ चर्चा करब एकटा पृथक अध्ययन क्रम होयत। एखन मूलतः हमरा लोकनि मिथिलाक प्राचीन आ अर्वाचीन औद्योगिक परम्पराक चर्चा करबाक लेल प्रस्तुत छी।

जेना कहलहुँ मिथिला ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म, साहित्य, दर्शन आ कर्मकाण्डहि मे सर्वश्रेष्ठ नहि छल, अपितु समस्त विश्व मे अपन औद्योगिक तथा व्यापारिक वर्चस्व सेहो रखैत छल। बड़ स्वाभाविक आ सहज तर्क छैक जे कोनो क्षेत्र साहित्य, दर्शन आ अध्यात्म इत्यादि मे ताबत उच्चता प्राप्त नहि क' सकैत अछि, जाबत धरि ओ आर्थिक रूप सँ सदृढ़, आत्मनिर्भर नहि हो, समृद्धता प्राप्त नहि कए लेने हो। मिथिलाक भूमि अत्यन्त उर्वर छैक आ कृषि-कार्यक लेल आदर्श छैक। जल-वायु, वर्षा इत्यादि आ 'छोट-पैघ नदी सभक जाल एहि क्षेत्र केँ सभ्यताक प्रारम्भिक चरण से सहज यातायात आ माल-वाहनक सुविधा प्रदान कएने छलैक। एहि क्षेत्रक व्यापार, जे प्राचीने काल सँ समस्त सभ्य विश्व मे पसरल छलैक, तकर श्रेय एहि नदी सबकेँ सेहो जाइत छैक। समग्रता मे देखल जाय त' ई क्षेत्र कृषि-कार्यक लेल ततेक सुविधा-सम्पूर्ण आ आदर्श छलैक जे एतए अन्न आ अन्यान्य भोजन-संसाधनक उत्पादन पर्याप्त मात्रा मे सहजहिं उपलब्ध होइत रहलैक। तकरा लेल कोनो विशेष प्रयत्नक प्रयोजने नहि पड़लैक। समाजक एक वर्ग कृषि-कार्य मे संलग्न रहि समस्त समाजक लेल पर्याप्त अन्नादि संसाधनक उत्पादन कए लैत छल- आ तैं समाजक अन्य वर्गकेँ, जे एहि दृष्टिएँ सामाजिक अतिरेक छल, तकरा अन्यान्य काज करबाक लेल पूर्ण अवसर भेटलैक। एहि अतिरेक जनसंख्याक किछु भाग योग, साधना, तपस्या कर्मकाण्ड, साहित्य तथा मीमांसा इत्यादिक अन्वेषण मे अपन जीवन विनियोग करए लागल आ बाँकी बचल सामाजिक अतिरेक उद्योग तथा व्यापारक माध्यम सँ एहि क्षेत्रके समृद्ध करबाक काज मे जुटि गेल। स्वाभाविक रूपें मिथिला मे (एक आध टा छोड़िक') खनिज पदार्थक उल्लेखनीय उपलब्धता नहि छैक, तैं एतुक्का प्रारम्भिक उद्योग कृषि तथा वन-संसाधन पर आधारित भ' कए विकसित भेल। किन्तु एहू क्षेत्रमे मिथिला अपन उत्कृष्ट उत्पादन आ वैशिष्ट्यक लेल विश्व भरि मे ख्याति पओलक। मिथिलाक ई औद्योगिक परम्परा मोटा-मोटी बीसम शताब्दीक पूर्वाद्ध धरि चलल। ऐतिहासिक परिपेक्ष्य मे देखल जाए त' स्पष्टतः परिलक्षित होयत जे मिथिलाक आर्थिक समृद्धिक मूलाधार यदि कृषि छल त' ओकर मूल-उत्प्रेरक उद्योग आ व्यापार छलैक। ओकर आर्थिक समृद्धि तथा उच्चता ओकर विभिन्न उद्योग सभक उत्कृष्टता आ वर्चस्वक कारण छलैक। प्राचीन काल सँ ल' कए बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक चरण धरि, मिथिला अपन औद्योगिक उत्कृष्टता, विशिष्टता कारण सगर विश्व मे प्रसिद्ध छल। दुर्भाग्यक बात जे समाप्तप्राय एहि शताब्दीक पूर्वाद्धक मध्य सँ ल' क' अद्यपर्यन्त यदि ब्रिटिश उपनिवेशवादी वणिक-साम्राज्य एहि स्खलन के रोकबाक प्रयास नहि कयलक त' से बात बूझल जा सकैत छैक-विदेशी

दासताक प्रति आक्रोश आ क्षोभ व्यक्त करैत ओकर भर्त्सना सेहों कएल जा सकैत छैक । मुदा स्वाधीन भारत मे एहि दिशा मे कोनो सचेष्ट प्रयास नहि कएल जेबाक सम्बन्ध मे की कहल जा सकैत छैक । मात्र एतबहि टा जे एहि घोर आ सज्ञान उपेक्षाक कारण निर्विवाद रूप सँ आर्थिकेत्तर अछि । ब्रिटिश साम्राज्यक औद्यौगिक क्रान्तिजन्य संक्रमणक दुश्चक्रमे फँसिक' मिथिलाक लघु आ कुटीर उद्योग तथा हस्त-शिल्प उत्पाद उद्योग तीव्रगति सँ पतनोन्मुख भेल-मुदा स्वतंत्र आ सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न भारत राष्ट्रक उदयक संग एकर समूल विनाश भ' गेलैक ।

अध्ययनक सुविधाक दृष्टि सँ सामान्यतया उद्योग केँ दू भाग मे विभाजित कएल जाइत रहलैक अछि । बृहत-उद्योग आ लघु-उद्योग । लघु-उद्योगो केँ पुनः लघु आ कुटीर उद्योग मे फराक कएल जा सकैत छै । ऐतिहासिक दृष्टिकोण सँ प्राचीन तथा परम्परागत आ अर्वाचीन उद्योग सभक अलग वर्गीकरण कएल जा सकैत अछि । मिथिला मे विभिन्न कालखण्ड मे विकसित उद्योग सभक शृंखला बेश सुदीर्घ रहलैक अछि। सभक उल्लेख एतए कएनाइ ने त' सम्भव आ ने अपेक्षित । किछु विशिष्ट आ महत्त्वपूर्ण उद्योग सभक चर्चा कएला सँ मिथिलाक सुदीर्घ आ समृद्ध औद्योगिक परम्पराक सम्बन्ध मे पर्याप्त जानकारी भ' जेबाक चाही ।

(1) **नाव उद्योग**—सर्वविदित अछि जे समस्त मिथिला मे छोट-पैघ नदी आ धारक जाल सन पसरल छैक; जकर माध्यम सँ मिथिलाक व्यापारीगण अंतर्देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार करैत छलाह । एहि समुन्नत व्यापारक आधार-साधन नाव । तैं मिथिला मे नाव-निर्माण परम्परा अत्यन्त प्राचीन कालहि सँ रहल अछि । मिथिलाक नाव उद्योगक सम्बन्ध मे कतेको साहित्यिक आ पुरातात्विक प्रमाण भेटत । अल-विलादुरी, तबकत-इ-अकबरी, मार्कोपोलोक वृतांत तथा तारीख -ई- फीरोज-शाही इत्यादि मे मिथिलाक प्राचीन तथा मध्यकालीन नाव-उद्योगक चर्चा कएल गेल छैक । युक्ति-कल्पतरु एहि उद्योगक विस्तार मे चर्चा करैत अछि । वर्णरत्नाकर मे एहि उद्योगक आ विभिन्न प्रकारक नाव सभक चर्चा कएल गेल छैक । ई उद्योग अपन वैशिष्ट्य आ कलात्मकताक लेल विश्वभरि मे प्रशंसित छल । उन्नैसम शताब्दीक मध्य सँ एहि उद्योगक अवनति प्रारम्भ भ' गेल ।

(2) **वस्त्र उद्योग**—वस्त्र उद्योग मिथिलाक अत्यन्त प्राचीन आ संगहि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्योग रहल अछि । मिथिला क्षेत्र मे निर्मित सूती आ रेशमी वस्त्र विश्वभरि मे अपन उत्कृष्टताक लेल विख्यात छल । यद्यपि एतए उनी वस्त्र सेहो पर्याप्त मात्रा मे बनैत छल मुदा से सामान्तया मध्यम आ निम्न श्रेणीक होइत छल । वस्त्र उद्योगक

दृष्टिएँ ई क्षेत्र भारतवर्षक सर्वाधिक उत्पादक क्षेत्र छल । यद्यपि मिथिलामे काँच रेशमक उत्पादन बहुत बेशी नहि होइत छलैक-किन्तु निर्विवाद रूपें ई रेशमी वस्त्र उत्पादनक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण केन्द्र छल । एकर मुख्य केन्द्र पूर्णियाँ तथा भागलपुर छल । महानन्दाक तट पर पर्याप्त मात्रा मे काँच रेशम तैयार कएल जाइत छलैक । एकरा अतिरिक्त बंगाल आ चीन सँ भारी मात्रा मे काँच रेशम आयात कएल जाइत छल । ओहि काँच रेशमकेँ परिशोधित कएल जाइत छलैक आ तखन ओहिसँ सूत तैयार होइत छलैक । तकरावाद ओकर वस्त्र बनाओल जाइत छलैक । मिथिलाक रेशमी वस्त्र उच्चतम कोटिक होइत छल आ 'जें कि ई बड महग होइत छलैक तें एकर उपयोग कुलीन आ धनाढ्ये वर्गक लोक कए सकैत छल । भागलपुरक रेशमी वस्त्र-उद्योग एखनहुँ सम्मानक दृष्टि सँ देखल जाइत अछि । इतिहासकार लोकनिक मानब छनि जे प्रायः 3000 वर्ष तक मिथिलाक रेशमी वस्त्र उद्योग अपन 'प्रतिष्ठा बनाक' राखि सकल-आ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे मिथिलाक प्रमुख निर्यात सामग्री बनल रहल ।

मिथिला मे बांग वा कपासक उत्पादन तथा ओही सँ सूत बनएबाक आ फेर ओहि सूत सँ वस्त्र बुनबाक परम्परा अत्यन्त प्राचीन काल सँ चलल आबि रहल अछि। कतेको इतिहासकार निर्विवाद रूप सँ मानैत छथि जे सभ्यताक प्रारम्भिक चरण सँ मिथिला मे सूत आ सूती बस्त्रक प्रयोग प्रारम्भ भ' गेल छलैक । कालक्रम मे ई क्षेत्र एहि उद्योग मे समग्र विशिष्टता प्राप्त कयलक । एताबता जे एतुक्का सूती-वस्त्र विश्वक सर्वश्रेष्ठ वस्त्र मानय जाय लागल । वर्णरत्नाकर मे तीस प्रकारक अन्य पट्टवस्त्रक चर्चा कएल गेल अछि । तकरा अतिरिक्त कतेको प्रकारक अन्य पट्टवस्त्र तथा निर्भूणवस्त्रक चर्चा भेल अछि । चौदह प्रकारक विशिष्ट वस्त्रक उल्लेख सेहो भेटैत छैक जे सामान्यतया रंगीन होइत छल । उपरोक्त तीसो प्रकारक पट्टवस्त्र रेशमी किंवा उत्कृष्ट कोटिक वस्त्र होइत छल आ निर्भूण वस्त्र सामान्यवर्गक लोक द्वारा प्रयुक्त कएल जाइत छल ।

3. **कताइ बुनाइ तथा सिलाइ उद्योग**—मिथिलाक ई उद्योग उपरोक्त उद्योगक समकक्ष त' छले, एक तरहें ओकर आधार उद्योग छल । किछुए समय पूर्व धरि मिथिलाक प्रत्येक परिवार मे (विशेषतः सवर्ण परिवार) महिला सभ टकुरी आ चर्खा पर सूत कटैत छलीह आ ताहि मे अपन गौरव बुझैत छलीह । आ से कोनो महात्मा गांधीक चरखा आन्दोलनक परिणाम हो से नहि । सूत काटब आ परिवार भरिक लेल यज्ञ-प्रयोजनार्थ जनउ तैयार करब एतुक्का परम्परागत जीवन-पद्धतिक अंग छल । ओना व्यवसायिक स्तर पर सूत कटनाइ मुख्यतः ततमा आ जोलहा उपजातिक लोक करैत छलाह । मिथिलाक ई गृह-उद्योग पूर्ण-नियोजित तथा विकसित छल । एतुक्का वस्त्र

सभ विशेषत: सूती, रेशमी, मटिया मलमल आ मालदेही मिश्रित वस्त्र विख्यात छल। एहि उद्योगक केन्द्र, पूर्णियाँ, मधुबनी तथा भागलपुर छल । पूर्णियाँ आ भागलपुर रेशमी वस्त्रक केन्द्र छल आ मधुबनी सूती वस्त्रक आ बाद मे खादी वस्त्रक । मिथिला मे कांच रेशम तैयारो कएल जाइत छल आ बंगाल तथा चीन सँ आयातितो कएल जाइल छल । महानन्दाक तटवर्त्ती क्षेत्र मे पर्याप्त मात्रा मे काँच रेशम तैयार कएल जाइत छल। मात्र 1809-10 ई० मे एतए 5,93,000 रु० मूल्यक काँच रेशम तैयार कएल गेल छल जाहि मे 34000 रु० मूल्यक रेशमक बस्त्र बनल आ बाँकी कशीदाकारी, गोटा-किनारी आ मिश्रित मालदेही वस्त्र बनबए मे प्रयुक्त भेल छल । एतए फूटल कोआक रेशम सँ एकटा विशेष प्रकारक उत्कृष्ट सूत तैयार कएल जाइत छलैक आ ओहि सँ 'चिकटा-रेशमी'' वस्त्र बुनल जाइत छलैक । खाली पूर्णियाँ जिला मे करीब 10, 80, 000 रु० मूल्यक मिश्रित रेशमी वस्त्र बुनल जाइत छल जे रेशमी आ बांगक सूत मिलाक' तैयार कएल जाइत छल आ 'मालदेही-वस्त्र' कहाइत छल । एकर व्यापकताक अनुमान एही तथ्य सँ लागि सकैत अछि, जे मात्र 'इंगलिश बजार'क लग-पास मे एहि कार्यक निमित्त 7,000 सँ उपर चरखा चलैत छल । ई सूत आ ताहि सँ तैयार कएल गेल वस्त्र भारी मात्रा मे पश्चिमी-भारत, मुर्शिदावाद आ कलकत्ता जाइत छल आ पुन: ओतए सँ विदेश सभ मे निर्यात कएल जाइत छल । 1000 गांठ रेशमी वस्त्र त' खाली पश्चिमी-भारत मे पठाओल जाइत छलैक । एकरा अतिरिक्त भागलपुर मे मिश्रित-सूतक कए प्रकारक बस्त्र बुनल जाइत छल, जाहि मे दुरिया, नमुना, चहरखाना, बफता आ खरियासरी आदि प्रमुख छल ।

मधुबनी सब-डिवीजन विश्व-विख्यात मलमलक प्रमुख केन्द्र छल । एतुक्का कोकटी मलमल' एन-मेन 'तसर' सन लगैत छलैक-खूब चिक्कन, खूब मोलायम, खूब चमकदार संगहिं खूब टिकाउ सेहो होइत छल । एकर विशेषता छलैक जे ई जए बेर धोअल जाइत छल, एकर सौन्दर्य ओतबे बढ़ल जाइत छलैक । एकर उत्कृष्टताक विश्व भरि मे दोसर जोड़ नहि छलैक । मिथिलाक एहि क्षेत्रक माटि-पानि तथा जलवायु सर्वोत्तम कोटिक कोकटी बांग तैयार करैत छल, उत्पादित करैत छल । ई देश-विदेश मे भारी मात्रा मे निर्यात कएल जाइत छल । भौरा, पण्डौल तथा कपसिया एकर प्रमुख केन्द्र छल । किन्तु ई बड़ महग होइत छल आ धनाढ़्य तथा सुसम्पन्ने लोक एकरा पहीरि सकैत छल । ओना सामान्य लोकक [illegible]नल एकर 'कोकटी पाग' पहिरब मर्यादाक बात मानल जाइत छलैक । ओहू समय मे एकर मूल्य (वँस्त्रक) प्रति-थान जे करीब चालीस गजक होइत छल, करीब 100 रु० तक होइत छलैक । पूर्णियाँ जिलाक खरबा,

नेहनगर, डंगरखोरा आ गोरगुरीवाद आदि स्थान मे सेहो नीक स्तरक उजरा मलमल बुनल जाइत छलैक । से 'खस' कहाइत छल । 19म शताब्दीक मध्य धरि ई उद्योग अपन पूर्ण-उद्याम पर छल । एकर व्यापार सँ ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारी लाभ कमेलक । खाली एहि उद्योग मे, एहि इलाका मे सन् 1910 क लग-पास करीब 3500 करघा पर 'खस' तैयार होइत छल आ तैयार 'खस'क मूल्य करीब 50,600 छलैक । निम्न आ मध्यम-स्तरीय मोटिया कपड़ा ओना त' समस्त मिथिला मे बुनल जाइत छल-तथापि दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, चम्पारन तथा पूर्णिया आदि मे एकर उत्पादन विशेष रूप सँ संकेन्द्रित छल । सन् 1809-10 मे मात्र पूर्णिया जिला मे एकर बुनाइ मे करीब 10, 000 करघा लागल छल आ करीब 1089500 रु० मूल्यक कपड़ा बुनल जाइत छल । काराटोया तथा महानन्दाक उपरी भाग मे 'चपल' जातिक लोक एकटा विशेष प्रकारक 'चेक' कपड़ा बुनैत छल ओना बेशी मांग मोटिए कपड़ाक छलैक । एकरा अतिरिक्त पूर्णियाँ मे नेवार बुनबाक परम्परा सेहो बहुत पहिनहिं सँ रहलैक अछि । पूर्वोत्तर पूर्णियाँ मे मौगी सभ पाटक कपड़ा सेहो खूब बुनैत जाइ छलि । वर्त्तमान शताब्दीक प्रारम्भिक चरणधरि ई सभटा उद्योग खूब नीक जकाँ चलि रहल छल । मुदा तकराबाद 'पावरलूम' तथा इंगलैण्डक औद्यौगिक-क्रान्ति जनित सस्त कपड़ाक व्यापक आपूर्ति एहि महान उद्योग केँ गंभीर आघात पहुँचओलक । साम्राज्यवादी तथा उपनिवेशवादी नीति एहि स्खलन केँ तीव्रतर कएलक । मिथिलाक ई महान उद्योग उर्ध्वश्वास लेबए लागल आ हजारक-हजार विलक्षण आ दक्ष बुनकर, कारीगर सभकेँ अपन परम्परागत आ कलात्मक दक्षताकेँ छोड़िक' सामान्य खेतिहर मजूरक रूप मे जीवन-यापन करबाक लेल बाध्य होबए पड़लैक । मिथिलाक संग पूर्वी भारतक किछु अन्यो क्षेत्रक ओ विशिष्ट उद्योग, जे समस्त विश्व मे एकाधिकारात्मक वर्चस्व रखैत छल–जकर गुणवत्ताक कोनो जोड़ नहि छलैक जे सम्पूर्ण मिथिलाक कलात्मक औद्योगिक परम्पराक प्रतिनिधित्व करैत छल जकर हजारो वर्षक अखण्ड परम्परा छलैक से मात्र दू तीन दशक मे समाप्त भ' गेल । एहि उद्योगक महत्त्व आ व्यापकता एही तथ्य सँ बूझल जा सकैत छैक जे बहुत समाप्त भेलाक वादो 1901 मे एहि उद्योग सँ संलग्न कारीगर सभक संख्या 45,000 सँ वेशी छल जाहि मे दरभंगा मे 9,000 मूंगेर मे 8, 000 पूर्णियाँ मे 7,000 चम्पारन मे 6,000 आ भागलपुर तथा मुजफ्फरपुर मे 15,000 छल ।

यद्यपि स्वदेशी तथा खादी-चरखा आन्दोलनक क्रम मे एहि उद्योग केँ किछु दिनक लेल प्राणदान भेटलैक-स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद कोनहुना नाम मात्रक लेल सरकारी स्तर पर किछु काजो कएल देखाओल गेलैक, मुदा स्पष्टत: आ प्रत्यक्षत: भारतीय सरकारक

नीति महाराष्ट्र आ गुजरात मे वस्त्र उद्योग केँ विकसित करबाक छलैक । आ तकर मूल्य पर मिथिलाक एहि महान उद्योगक घोर उपेक्षा कएल गेलैक । एहि बैमात्रेय व्यवहारक की कारण, से कहब कठिन । किएक त' एखनहुँ कतेको विशेषज्ञ मानैत छथि जे मिथिलाक भूमि आ जलबायु बांग तथा रेशमक उत्पादनक लेल संगहि वस्त्र-उद्योगक लेल भारत मे श्रेष्ठतम अछि । बहुत कम प्रयास सँ एहि क्षेत्र केँ बस्त्र उत्पादनक सघन केन्द्र बनाओल जा सकैत अछि ।

(4) **सतरंजी तथा कम्बल उद्योग**–सतरंजी आ कम्बल उद्योग एहि क्षेत्रक प्राचीन उद्योग छल । यद्यपि कम्बल बुनबाक काज एतए परम्परा गत रूप सँ 'गोड़ी' जातिक लोक करैत छल–मुदा किछु आनो-आन जातिक लोक एहि मे जुड़ल गेल, छूटल गेल। मुजफ्फरपुर, दरभंगा, चम्पारन, पूर्णिया आ कटिहारक कम्बल बेश नीक मानल जाइत छलैक । कटिहारक कम्बल मे कलात्मकता बेशी होइत छलैक । पूर्णिया आ कटिहार मे उपभोक्ताक रूचि आ आवश्यकतानुसार आदेश पर कम्बल बनएबाक आ रंगबाक परम्परा छलैक । किन्तु भेंड़ी व्यवस्था आ उत्पादनक योग्यतानुसार व्यवसायिक संतुलन बना क' नहि राखि सकबाक कारण ई उद्योग अपन कारीगर सभकेँ पूर्णकालिक रोजगार देबा मे असमर्थ भ' गेल; क्रमशः विलुप्त भ' गेल ।

संतरजी उद्योग मिथिलाक संस्कृति सँ जुड़ल उद्योग छल आ अपन विशिष्टता तथा कलात्मकताक लेल प्रसिद्ध छल । चम्पारन जिलाक महेसी आ गोविन्दगंजक तथा सीतामढ़ीक सुरसण्ड मे खूब सुन्दर आ टिकाउ सतरंजी बनैत छलैक । पूर्णियाँ खास मे सेहो सामान्य स्तरक सतरंजी बुनल जाइत छल ।

(5) **धातु उद्योग**–मिथिला मे धातु उद्योगक बड़ प्राचीन परम्परा रहलैक अछि। एहि क्षेत्र मे प्रायः प्रत्येक जानल-बूझल धातु सँ समाजोपयोगी वस्तु-जात बनाओल जाइत छलैक । एहि मे कड़ा आ कोमल, दूनू प्रकारक धातु अबैत छल । कड़ा धातु अस्त्र-शस्त्र तथा कृषि-कार्यक लेल तथा कोमल धातु आभूषणादि आ गृह कार्यक लेल सामग्री बनएबामे प्रयुक्त होइत छल । वर्णरत्नाकर तथा कीर्तिलता मे एकर विस्तृत विवरण भेटैत छैक । पौराणिक ग्रन्थादि मे सेहो एकर उल्लेख प्रत्यक्षतः भेटैत छैक । एहि उद्योगक विकास सभ्यताक विकासक संग भेल, किएक त ई जीवनक अनिवार्यताक संग जुड़ल उद्योग छल । मिथिला मे छत्तीस प्रकारक खाली अस्त्र-शस्त्रक निर्माणक उल्लेख भेटैत छैक । एहि क्षेत्रक धातु-उद्योगक विशेषता ई छलैक जे एतए विभिन्न धातुक वस्तु-निर्माण मे विभिन्न जाति-उपजातिक लोक विशिष्टता प्राप्त कएने छल । उदाहरणार्थ लोहार, सोनार, कँसेरी आदि । कँसेरी सभ मुख्यतः अलौह धातुक निर्माण करैत छलाह । झंझारपुर,

किशनगंज आ अररिया अलौह धातुक वस्तु-निर्माणक लेल विख्यात छल । लवपुर (हाजीपुर) मे अत्युत्तम कोटिक लौह-शस्त्र बनैत छल । राजनगर तथा खजौली सेहो लौह-वस्तुक उत्पादनक लेल प्रसिद्ध छल । सरिसव-पाही आ पण्डौल लोहा आ पित्तरिक सरौताक लेल विख्यात छल । दरभंगाक तरूआरि अपन सुदृढ़ता आ कलात्मकताक लेल जानल जाइत छल । एहि क्षेत्र मे तामा, पित्तरि, काँसा, फूल तथा अष्टधातु, चानी, सोना इत्यादि सभ धातुक उत्तम आ कलात्मक वस्तु बनओल जाइत छलैक । प्रारम्भ मे काँसा, तमा, फूल तथा अष्टधातु इत्यादिक वस्तु बनएबाक गूढ़ तकनीक जानएबला कारीगर सभके एतए मिर्जापुर सँ बहुत ऊँच मजूरी पर आनल जाइत छलैक । मुदा चतुर मैथिल कारीगर सभ शीघ्रहिं ई तकनीक सीख लेलक आ तकनीक दृष्टिएँ आत्मनिर्भर भ' गेल । मिथिला धातुक उत्तम मूर्त्ति आ अन्य कलाकृति बनएबाक लेल विख्यात छल । एतए उल्लेख करब आवश्यक होयत जे कालान्तर मे मुंगेर मे कारीगर सभ विभिन्न प्रकारक आग्नेयास्त्र बनएबा मे एत्तेक सिद्धहस्त भए गेल छल, जे मुंगेर केँ 'भारतवर्षक लघु-बकिंघम कहए जाए लगलैक ।

6. **बासन उद्योग**–इहो उद्योग एक तरहें धातु-उद्योग सँ जुड़ल छल । यद्यपि एहि उद्योग मे धातुक अतिरिक्त अन्य आदान सेहो सम्मिलित भए जाइत छैक । ई उद्योग मुख्यतः गृह कार्यक लेल उपयोगी वस्तु सभहिक निर्माण मे संलग्न छल । एहि मे विशेष प्रकारक बर्त्तन-बासन आ साज-सज्जाक वस्तु बनाओल जाइत छल । एहि दृष्टिएँ मिथिलाक "बिदारी" धातु अतुलनीय छल जे एक विशेष प्रकारक प्रक्रियाक अन्तर्गत जस्ता, तामा आ कतेको प्रकारक अन्य स्थानीय पदार्थ सभकेँ मिलाक' बनाओल जाइत छल । एहि मिश्रित धातु सँ अद्भुत सुन्दर आ कलात्मक वस्तु सभ बनाओल जाइत छल । ओहि पर सँ 'छिलुआ' आ 'पच्चीकारी' काज कएल जाइत छलैक । सामान्यतया एकर दू प्रकार होइत छलैक–"गरखी" तथा "करना" । "गरखी" मे उत्कृष्ट पच्चीकारी रहैत छलैक–'करना' मे सामान्य स्तरक । 'गरखी' बड़ महग होइत छलैक, तैं देश-विदेशक राजे-महराजा आ कि जमीन्दार सभ एकर ग्राहक होइत छलाह । सेहो कतेको मास पूर्वहि सँ आदेश देले पर तैयार कएल जाइत छलैक । 'कसेरा' उपजातिक किछु लोक एहि मे विशिष्टता प्राप्त कएने छलाह । ओना बाद मे पच्चीकारी आ पालिशक काज धानुक, सुनरी आ मुसलमानो कारीगर सभ करय लागल छलाह । 19म शताब्दीक मध्य धरि ई उद्योग खूब समुन्नत अवस्था मे छल । मुदा स्पष्टतः अकारणे हठात् समाप्त भए गेल । सामान्यतया आर्थिक स्तर पर एकर व्याख्या कठिन जे एना किए भेलैक। एकमात्र इएह कारण बुझबा मे अबैत छैक जे एहि कलात्मकता सँ गढ़ल धातुक सामग्री

तैयार करबा मे अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि, निर्दोष तकनीक, मानसिक आ शारीरिक संतुलन, अत्यधिक श्रम, एकाग्रता, ध्यान आ कुशलताक प्रयोजन होइत छलैक-आ से प्रायः सामाजिक स्तर पर त' नहिएँ, वंशानुगतो स्तर पर आत्मसात नहि कएल जा सकल। मिथिलाक ई अत्यन्त कलात्मक आ अतुलनीय शिल्प-उद्योग, अकारणे अलक्षिते समाप्त भए गेल । एहि उद्योग मे श्रम-विभाजन तथा विशिष्टीकरण स्पष्ट रूप सँ देखबा मे अबैत छलैक । एकर सम्पूर्ण निर्माण-प्रक्रिया मे संलग्न कारीगर सभ चारि वर्ग मे विभाजित रहैत छल । पहिल धातु आ अन्य पदार्थ सभकेँ परिशोधित क' कए ओकर संतुलित मिश्रण तैयार करैत छल आ तकरा साँचा मे ढारैत छल-दोसर ओकरा बासन वा जे कोनो आकार देबाक हो, बस्तु बनएबाक हो, तकर रूप, आकार-प्रकार दैत छल-तेसर ओकर कढ़ाइ करैत छल आ ओहि पर चानीक पानि चढ़बैत छल तथा चारिम ओहि पर पच्चीकारी तथा पॉलिश इत्यादि करैत छल । बीसम शताब्दीक प्रारम्भ मे एहि कलात्मक शिल्पकेँ जानएवला मात्र तीन गोटा बचि गेल छलाह-बेलौरीक (पूर्णियाँ) साहू केसरी तथा मौजू केसरी आ कटिहारक उधु साह । एकमात्र व्यक्ति जे एकर पच्चीकारी आ विशेष पालिस करब जनैत छलाह, से छलाह कटिहारक मोहन सोनार । हुनका लोकनिक बाद ई कला कालक गाल मे बिला गेल ।

सम्पूर्ण मिथिला मे माटिक बर्त्तन-बासन बनएबाक उद्योग आदि कालहिं सँ प्रचलित अछि । किछु इतिहासकार एत' तक कहैत छथि जे माटिक मूर्ति बनाएब आर्य लोकनि मिथिलेक अनार्य सभसँ सिखलनि आ एहि कलाकेँ संबर्धित कएलनि। एहि विषय पर मतान्तर भए सकैत अछि मुदा एहि तथ्य पर कोनो विवाद नहि भए सकैत अछि जे मिथिला अपन सुन्दर आ कलात्मक माटिक मूर्त्ति आ कलाकृतिक लेल विश्व मे विख्यात छल । प्रायः मिथिलाक प्रत्येक कोन मे नीक-बेजाए माटिक वर्त्तन-बाँसन आ कलाकृति गढ़एबला कारीगर रहैत छल एखनहुँ अछि । 1901 क जनगणनाक अनुसार एहि उद्योग मे दरभंगा मे 7000, मुंगेर मे 7000, भागलपुर मे 11000 आ पूर्णियाँ मे 4000 कारीगर संलग्न छल ।

7. रंगरेजी तथा रंग-छपाइ उद्योग–रंगरेजी उद्योग मिथिलाक अत्यन्त प्राचीन उद्योग छल । प्राचीनतम महाकाव्य रामायण आ महाभारत इत्यादि मे सेहो एकर पर्याप्त चर्चा छैक । भगवान-भगवती तथा प्रमुख पात्रादिक मूर्त रूपक अवधारणाक काल धरि ई उद्योग पूर्णरूपेण विकसित भ' चुकल प्रतीत होइत अछि-किएक त' बेशी भगवान-भगवती किंवा प्राचीनतम महाकाव्य सभक प्रमुख पात्रादिक वस्त्रक रंग सुनिश्चित कए देल गेल छल । मिथिला क्षेत्र मे प्रकृति-प्रदत्त संसाधनक बाहुल्य छलैक-तैं ई

उद्योग प्राचीनेकाल सँ खूब विकसित छल । कालक्रम मे त' मिथिला विशिष्टरंगक आपूर्ति मे विश्वक सर्वाधिक प्रमुख केन्द्र बनि गेल । एतबहि नहि एतुक्का नील-उद्योग त' विश्वबजार मे अपन एकाधिकारात्मक वर्चस्व पर्यन्त बनओलक । बुकानन एहि क्षेत्र मे प्रयुक्त होबएवला सर्वाधिक लोकप्रिय दसटा रंगक उल्लेख कएलनि अछि । ई उद्योग समस्त मिथिला मे पसरल छल । कतेको ठाम अलग-अलग वा संयुक्तो रूप सँ रेशमी, सूती आ ऊनी वस्त्र सभ रंगल जाइत छल । रंग करएवला दक्ष कारीगर सभ रंगरेज कहाइत छल । एतए मुख्य रूप सँ निम्नरंग सभ तैयार कएल जाइत छल। ककरेज (गाढ़ भूरा वा खैरा रंग), अगरी (भूरारंग), उदा (बैंगनी, धबैत खैरा रंग) बैगनी, हस्सी (शोणित सन लाल), शातरो (फीका भूरा रंग,) तरंजी, आसमानी, फाखता (नील रंग, धबैत छाउरक रंग) शिशहा (फीका नीला रंग); लाही, पेरी(पीयर रंग); खाकी इत्यादि । पेरीरंग तैयार करबाक मिथिला मे विशेष प्रक्रिया छलैक । एहि प्रक्रिया मे गायकेँ विशेष आमक पात-विशेष खुआओल जाइत छलैक-सुनिश्चित मात्रा मे । तखन ओकर गोंत सँ बढ़ियाँ पीयर अर्थात पक्का पेरी रंग तैयार कएल जाइत छलैक। किन्तु ओहि पांत-विशेषक प्रयोगसँ गायके अरुदा घटि जाइत छलैक । ई मैथिल संस्कार आ भावनाक प्रतिकूल होइत छलैक । तैं एकर विरोध कएल जाइत छलैक ।

वस्त्र उद्योगक संग ई उद्योग खूब उन्नति कएलक मुदा जखन बेल्जियम सँ सस्ता रासायनिक रंग आबए लगलैक त' एकरा समक्ष कठिन आ असमान प्रतियोगिता उपस्थित भ' गेलैक । ओम्हर वस्त्र उद्योग से विखण्डित होबए लागल छलैक । अन्ततः वर्त्तमान शताब्दीक प्रारम्भ तक ई उद्योग पूर्णतया समाप्त भ' गेल ।

8. सिन्दूर उद्योग–मिथिले टा मे नहि अपितु करीब-करीब सम्पूर्ण उत्तरभारत मे सिन्दूर सधवा स्त्रीक सोहागक प्रतीक होइत अछि । मिथिला मे त' एकर महत्त्व आओरो बेशी छैक । स्त्रीगणें नहि पुरूषो सभ एकर व्यवहार व्यापक रूप से करैत छथि । मैथिल कर्मकाण्ड, वैदिक अनुष्ठान इत्यादिक संग तांत्रिक प्रक्रिया पर्यन्त मे सिन्दूर अनिवार्यता: प्रयोग कएल जाइत छैक । मिथिला मे गृह-उद्योगक स्तर पर सिन्दूर बहुत प्राचीन काल सँ बनाओल जाइत छल । एतए मूलतः दू प्रकारक सिन्दूर बनैत छल– (i) शीशा, खरी आ अपरिष्कृत शोरा मिलाक' आ (ii) शीशा, अपरिष्कृत सल्फेट ऑफ सोडा या अपरिष्कृत नाइट्रेट ऑफ पोटाश केँ मिला कऽ । एकरा अतिरिक्त मटिया सिन्दूर सेहो बनैत छलैक । एहि उद्योगक दूटा प्रमुख केन्द्र छल पूर्णियाँ आ धमदाहा। सामान्यतया एकर सम्पूर्ण उत्पादन ऐही क्षेत्र मे खपि जाइत छलैक । उन्नैसम शताब्दीक मध्य धरि ई उद्योग खूब नीक जकाँ चलैत रहल-मुदा तकरा बाद अंग्रेज व्यापारी सभ

बाहर सँ सिन्दूर मँगबए लागल । ओना उन्नैसम शताब्दीक अन्तधरि पूर्णियाँ मे सिन्दूर बनैत छल मुदा से निम्नस्तरीय आ घैल, सुराही इत्यादि केँ ढौरबाक लेल।

9. **लहठी आ चूड़ी उद्योग**–सिन्दूरे जकाँ लहठी-चूड़ी सेहो सोहागक प्रतीक मानल जाइत छैक । तेँ स्वाभाविक रूपें ई उद्योग एहि क्षेत्र मे बड़ प्राचीनकाल सँ विकसित भए गेल अछि । एकर प्रमुख केन्द्र छल-दरभंगा, लहेरियासराय, समस्तीपुर, कटिहार तथा भागलपुर, । किछु पैघ गाम सभ जेना सरिसव, पंजासराय, मंगरौनी, सौराठ इत्यादि मे सेहो एकर खूब उत्पादन होइत छल । लहेरियागंज तथा नरहन उत्तम आ कलात्मक लहठीक लेल प्रसिद्ध छल । कटिहारो मे उच्चकोटिक लहठी, किछु मुसलमान परिवार बनबैत छल । सामान्यतया लाह, राँची , गौंड़ (जे कहियो बंगालक राजधानी सेहो रहि चुकल छल आ किछु कालखण्ड मे मिथिलाक अधीन रहल छल) सँ आयात कएल जाइत छल । पुरातत्ववेत्ता सभ खोज कएलनि अछि जे एतए करीब 1000 गाछ विशेष रूप सँ लाह उत्पादनक लेल संबधित-संरक्षित कएल गेल छल ।

चूड़ी उत्पादनक प्रक्रियाक जटिल आ लम्बा संगहि श्रमसाध्य होइत छलैक । शीशा वा काँच बनएबाक मिथिला मे अपन विशिष्ट प्रक्रिया छलैक । एतए सामान्य क्षार केँ माटि-विशेष आ अपरिष्कृत सोडा तथा किछु अन्य वस्तु सभ मे मिलाक' उत्तम शीशा तैयार कएल जाइत छल । तखन ओकर चूड़ी बनाओल जाइत छल । प्रक्रिया जटिल ओ श्रमसाध्य भनहि हो मुदा अंतिम उत्पादक सुन्दरता देखबा जोगर होइत छलैक। एहि उद्योग मे संलग्न लोक 'नाहरि' कहाइत छल । एहि उत्पादक आन्तरिक आ बाह्य दूनू खूब गहन आ संगहि विस्तृतो छलैक । रंग-विरंगक काँचक छोट-छोट टुकड़ी सँ आभूषणादि केँ सजएबामे सेहो एतुक्का कारीगर सभ सिद्धहस्त छल । ई उद्योग एखनहुँ जीवित अछि, मुदा शीश आ काँच बनएबाक स्थानीय तथा परम्परागत तकनीक आ कलात्मक वैशिष्ट्य आब नहि रहल ।

10. **सनपटुआ : बोड़ा आ चट्टी उद्योग** :–सनपटुआ आ जूट-पाट उद्योग मिथिला आ आनुशंगिक क्षेत्रक एकटा महान उद्योग छल । सम्पूर्ण कोशी आ महानन्दाक क्षेत्र, पूर्णियाँ जिला-आ विशेषत: कटिहार, किशनगंज, बारसोई इत्यादि मे एकर उत्पादन व्यापक स्तर पर होइत छलैक । लाखो लोक एकर उत्पादन मे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप सँ लागल रहैत छल । उन्नैसम शताब्दीक अन्त धरि ई उद्योग अपन परम्परागत स्वरूप आ आकार सँ बृहत्तर होइत बृहत उद्योगक स्वरूप लए लेलक आ ताहि मे मिथिला तथा संलग्नपूर्वी क्षेत्रक संग मिलिक' सम्पूर्ण विश्व बाजार मे अपन एकाधिकारात्मक आधिपत्य बना लेलक-काफी समय तक बनओने रहल । मुदा तकर चर्चा करब एतए समीचीन नहि होयत ।

परम्परागत रूप सँ, हाथ सँ आ छोट-छोट फर्मा पर बोड़ा बुनबाक काज मे एहि क्षेत्रक महिला सभ बेशी सिद्धहस्त छलीह । विशेषत: कच, भीम, पलिया आ राजवंशी जातिक मौगी सभ बोड़ा बुनबाक काज मे बेसी विशिष्टता प्राप्त कयने छलीह। ई बोड़ा सभ सामान्यतया पाँच फीट नाम आ तीन फीट चाकर होइंत छल । एहि टुकड़ा के बाद मे सुविधानुसार आ आवश्यकतानुसार अलग-अलग छोट-पैघ आकारक बना लेल जाइत छलैक । ई बोड़ा सभ महानन्दा नदीक कछेरक काते-कात कुटी, रूपहा, दुलालगंज आ किशनगंज इत्यादिक बजार मे खूब जमिक' बिकाइत छल । एकरा अतिरिक्त ई सभ कलकत्ता पटना पचगर, रंगपुर (बांगलादेश) इत्यादि स्थान पर पठाओल जाइत छल । ओहि समय एकर प्रयोग विशेषत: अन्न, तमाकू आ शोरा इत्यादिक लदानी मे कएल जाइत छलैक । उन्नैसम शताब्दीक प्रारम्भिक चरण मे प्रतिवर्ष करीब 25000 रु० क बोड़ा कलकत्ता, 12000 रु० क पटना आ 35000 रु० क बोड़ा पचगर निर्यात कएल जाइत छल । करीब 15,000 रु० क बोड़ा स्थानीय उपयोग मे काज अबैत छल। सन् 1877 मे खाली किशनगंज सँ 50 लाख रुपैयाक पाटक बोड़ा-टुकड़ा निर्यात कएल गेल छल । मुदा क्रमश: एकर व्यापकता एकर सम्वृद्धि आ विस्तारे एकर विनाशक कारण बनल । एहि परम्परागत कुटीर उद्योगक स्थान वृहत औद्यौगिक स्तर पर फैक्ट्री सभ लए लेलक । पाटक बोड़ाक अतिरिक्त एहि क्षेत्र मे पाटक कपड़ा सेहो बुनल जाइत छलैक किन्तु से मोट आ असुविधाजनक होइत छलैक । तेँ एकर प्रयोग बेशीकाल निम्नस्तरीय लोक करैत छल । ओहूना ओ बेसी लोकप्रिय आ प्रचलित नहि भेल ।

11. **बीड़ी उद्योग** :–बीड़ी बनएबाक उद्योग मिथिलाक प्रमुख आ पुरान उद्योग अछि । एहि उद्योग मे एहि क्षेत्रक हजारो व्यक्ति आजीविका पबैत अछि । ई उद्योग तमाकू उद्योगक संग जुड़ल अछि । मिथिला मे नीक तमाकू बेश भारी मात्रा मे उत्पादित होइत छल आ ओकरा तैयार कएलाक बाद क्षेत्रीय उपभोग-आवश्यकता बाद बचल अतिरेक केँ बाहर पठा देल जाइत छलैक । स्वाभाविक रूप सँ एतए बीड़ी उद्योग सैकड़ों वर्ष पूर्वहिं विकसित भेल आ निर्वाध गति सँ चलैत रहल । एकर आवश्यकता आ मांगक निरंतरता बनल रहलैक आ जें कि ई विशुद्ध ग्रामीण आ निर्धन परिवेशक उपभोग सामग्री अछि–तेँ एकरा कहियो कोनो कठिन प्रतियोगिताक सामना सेहो नहि करए पड़लैक। बीड़ी एहि समस्त क्षेत्र मे ठामे-ठामे बनाओल जाइत छल । एहि मे पूंजी निवेश अत्यल्पआ विशिष्टताक कोनो विशेष प्रयोजन नहि । ई पूर्णतया मानवीय श्रम सँ बनैत अछि । मात्र एकरा सोन्हएबाक लेल तार-भट्ठी आ अंगुर मे पहिरए बला 'मिजराफ' सन 'नहकोनियाँ' एकर उपकरण । बीड़ीक उत्कृष्टता तमाकू आकेन्दु पत्ताक

उत्कृष्टताक संग बीड़ी बनबए बला मजूरक निपुणता पर निर्भर करैत छैक । कोनो दक्ष मजूर दिन भरि मे 1000 तक बीड़ी बना लैत अछि; ओहि सँ बेसियो बना सकैत अछि । मिथिला मे सामान्यतया मध्यमश्रेणीक तमाकू पत्ता उच्च स्तरीय पत्ता सँ बेसी मात्रा मे उत्पादित होइत अछि । तैं एकरा अतिरिक्त बढ़िया तमाकू आ केन्दु पत्ता एतए सिंहभूम तथा पलामू सँ मंगाओल जाइत छल । समस्तीपुर बीड़ी कारखाना समस्त भारतवर्षक सभ सँ पैघ बीड़ी कारखाना छल जतए 400 सँ बेशी मजूर काज करैत छल ।

12. **कागज उद्योग**—कागजक उत्पादन आ उपभोग मे वृद्धि शैक्षणिक व्यवस्था आ ज्ञान-विज्ञानक विकासक द्योतक होइत अछि । मिथिला मे ई उद्योग अति प्राचीन कालहिं सँ विकसित भ' गेल से स्वाभाविके । मिथिला मे बहुत पहिनहि सँ स्थानीय तकनीकक आधार पर कागज बनाओल जाइत छल । किशनगंजक इलाका मे 'कगदिया' नामक एकटा विशेष वर्गक लोक सभ रहैत छल जे कागज बनएबाक कला मे पारंगत होइत छल । ओकरा सभहिक तैयार कएल गेल कागज अपन सुन्दरता आ उत्कृष्टताक लेल विख्यात छल । एहि कागज कें बनएबाक परम्परागत तकनीक त' आब लुप्त भ चुकल अछि मुदा ई जूटक लुगदी आ किछु आन स्थानीय बस्तु सभके मिश्रण सँ बनाओल जाइत छलैक । खूब नीक पाटक लुगदी इत्यादि सँ बनाओल गेल एहि कागजक उत्कृष्टता सर्वमान्य छलैक । एकरा 'मुनिपासी' तथा 'कोशता' कहैत छलैक । व्यवहारिक दृष्टिएँ दूनू प्रकार मे कोनो अंतर नहियों रहैत, मूल उत्पादनक गुणवता मे अन्तर होइत छलैक । ई गृह उद्योग मिथिलाक गौरवमय औद्योगिक परम्परा मे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छल । एकर विक्रय मिथिला आ बिहारक अन्यान्य बाजार मे त होइते छलैक-संगहि देश-विदेशक अनेक बजार मे ई उत्पाद निर्यात कएल जाइत छल । मिथिलाक उल्लेखनीय व्यापार वा निर्यात-सामग्री मे एकर महत्त्वपूर्ण स्थान छलैक । मात्र किशनगंज मे 30,000 सँ बेशी परिवार एहि उद्योग सँ संलग्न छल ।

13. **लकड़ी वा काठ उद्योग**—मिथिलाक भौगोलिक स्थिति एहेन छैक जे एतए गाछ-वृक्षक बाहुल्य छैक । प्रकृति बड़ उदार भाव सँ एहि क्षेत्रकेँ हरीतिमा प्रदान कएने छैक । तैं निकट भूत कें छोड़िक' लकड़ी वा काठक एहि क्षेत्र मे कहियो अभाव नहि रहलैक । स्वाभाविक रूपें एतए लकड़ी सँ बनएबला वस्तुक उद्योग अति प्राचीन काल सँ विकसित भ' गेल । कालान्तर मे एहि मे निरन्तर सुधार होइत गेलैक । एहि उद्योगक विकासक मूल कारण छल सभ्यताक विकासक संग-संग मानवीय आवश्यकता क बढ़ैत जायब । आ तकर तुष्टिक लेल काठ बड़ पैघ आ सशक्त संसाधन बनल।

गृह-कार्य हो वा कृषि-कार्य उद्योग हो वा व्यापार सभ ठाम एकर आवश्यकता समान रूप सँ अनिवार्य । काठक उत्कृष्ट बस्तु बनएबाक लेल मिथिला देश-विदेश मे जानल जाइत छल । एहि व्यवसाय मे मुख्यत: कमार जातिक लोक विशिष्टता प्राप्त कएने छल । यद्यपि ई उद्योग समस्त मिथिला मे गामे गाम पसरल छल, तथापि खास-खास स्थान खास-खास वस्तुक लेल विशेष रूप सँ प्रसिद्ध छल । मुजफ्फरपुरक खड़खड़िया आ पालकी वा महफा चकला ग्रामक (किशनगंज) बैलगाड़ीक पहिया तथा उक्खरि-समाठ, मधुबनीक पलंगड़ी तथा बच्चा सभक झुलुआ, भागलपुर तथा मुंगेरक कुर्सी-टेबुल, पलंग इत्यादि तथा सीतामढ़ीक छड़ी, विख्यात छल ।

14. **बाँस तथा प्राकृतिक घासक बस्तु उद्योग**—मिथिला कतेको वस्तुक लेल प्रसिद्ध छल । मुदा बाँस आ प्राकृतिक घास तथा ताड़खजूरक पात सँ बनल बस्तुक लेल विशेष रूप सँ जानल जाइत छल । मिथिलाक एहि अत्यन्त कलात्मक आ सुरूचिपूर्ण वस्तु-कला उद्योग कें मिथिलाक प्रमुख उद्योगक प्रथम श्रेणी मे रखबा मे कोनो बाधा नहि । एतए बाँस, ताड़खजूर तथा घास यथा सिंकी, मोथी, नरकट, साबे, मूंडा इत्यादिक कतेको प्रकारक सुन्दर आ कलात्मक संगहि उपयोगी बस्तु सभ बनैत छल। आबहुँ बनैत अछि । यद्यपि आब कलात्मकताक ह्रास भेल जा रहलैक अछि । मिथिला मे डेग-डेग पर बँसबिट्टी छलैक । जे कि मिथिला भौगोलिक दृष्टिएँ बाढ़ि आ भूकम्प-संत्रस्त क्षेत्र सभ दिन सँ रहल अछि, तैं एत' बाँसे आ माटिक भीतवला घरक बेसी प्रचलन रहलैक । ई सस्तो होइत छलैक आ भूकम्प तथा बाढ़ि इत्यादिक प्रकोप कें सेहो सहैत छलैक । संगहि सुभितगर सेहो । एकरा अतिरिक्त बाँसक अनेक प्रकारक सामग्री बनैत छलैक । एक तरहें बाँस मिथिलाक गृहस्थ आ कृषि-जीवनक अपरिहार्य अंग छलैक । ढाकी, पथिया, सूप, चालनि, चंगेरा, सुपती, कोनिआ, डाला, पौती, छिट्टा, बीयनि, बिटझब्बा, भीत, धारनि, बल्ली, डगरना सभटा बाँसेक बनैत छलैक । बाँसक बस्तु सभ बेशी काल डोम सभ बनबैत छल । किछु सामग्री गोढ़ि सभ सेहो बनबैत छल मुदा से विशेष रूप सँ माछ मारबाक कि पकड़बाक उपकरणादि होइत छल-यथा सरैला, सरकी, टिहुकी, पट्टी, गांज, टापि इत्यादि । सीतामढ़ीक बाँसक चालनि तथा अररियाक बाँसक वर्त्तन-बासन प्रसिद्ध छल । एतुक्का मेंही गूहल बाँसक चंगेराक इएह विलक्षण विशेषता छलैक जे ओहि मे दही पौरल जा सकैत छल ।

बाँसक अतिरिक्त मिथिला मे प्राकृतिक घासक अद्भुत आ कलात्मक बस्तु सभ तैयार कएल जाइत छल । पटिया, सितलपाटी, सिंकी, मौनी, कंतोड़ी, पटेढ़ इत्यादि। ई उद्योग समस्त मिथिला मे पसरल छल । गंगोट आ तिवार जातिक लोक एहि मे

विशिष्टता प्राप्त कएने छल । 1901 क जनगणनाक अनुसार एहि उद्योग मे संलग्न लोकक संख्या क्रमशः चम्पारण मे 4,000 दरभंगा मे 8,000 मुंगेर मे 4,000 पूर्णिया मे 5,000 तथा भागलपुर मे 7,000 छल । एहि सन्दर्भ मे एकटा उल्लेखनीय बात ई जे 'पटिया' शब्द जे प्रचलित भेल तकर मूल आधार विशुद्धतः आर्थिक छल । मिथिला कलात्मक आ सुदृढ़ पटिया बनएबाक लेल प्रसिद्ध छल । संगहि मिथिलाक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारो प्राचीने काल सँ अत्यन्त समुन्नत छल । संगहि मिथिलाक व्यापारिक नाव सभहिक मुख्य विशेषता ई रहैत छलैक जे ओहि नाव सभ मे पटिया ओछाओल रहैत छलैक आ ताहि पटिया पर व्यापारिक बस्तु-सामग्री इत्यादि राखल जाइत छलैक । जे कि ओहि पर राखल बस्तु सभक मोल-भाव कएल जाइत छलैक आ ग्राहक केँ पटाओल जाइत छलैक-तैँ ओ 'पटिया' । एक तरहेँ कही त' प्राचीनकाल मे 'पटिया' मिथिलाक व्यापारिक नाव सभक 'ट्रेडमार्क' छलैक ।

15. **चमड़ा उद्योग**–इहो मिथिलाक प्राचीन उद्योग छल । चाम कमओनाइ आ चामक बस्तु बनएबाक काज समस्त मिथिला मे कएल जाइत छल । एहि व्यवसाय मे चमार जाति लोक जुड़ल छलाह । किछु मुसलमान 'दफाली' तथा 'नूरल' जातिक लोक सेहो एहि व्यवसाय मे लागल छलाह । मिथिला मे ई उद्योग पारम्परिक मुदा प्राथमिक तकनीक पर आधारित छल । आवश्यकतानुसारें बस्तु सभक उत्पादन कएल जाइत छल । उत्पाद अनुत्कृष्ट मुदा जनोपयोगी होइत छल । जूता, पनही, चप्पल आ ढोल, नगाड़ा, डमरू, पखाउज, मृदंग, नाल, ढक आ बाद मे तबला इत्यादि संगीतक उपकरण सेहो तैयार कएल जाइत छल ।

एकटा उल्लेखनीय बात ई जे एतए 'देबगार' उपजातिक लोक एकटा विशेष प्रकारक चामक कुप्पा बनबैत छल । कुप्पा बड़ उपयोगी होइत छलैक । ओहि मे राब, घी, तेल इत्यादि राखल जाइत छलैक । एहि मे राखल बस्तु सभ बहुत दिन धरि सुरक्षित रहैत छलैक खराब नहि होइत छलैक । ई कुप्पा सामान्यतया बनाओल जाइत छलैक बड़दक चाम सँ मुदा प्रत्यक्षतः से कहियो कहल नहि जाइत छलैक । किएक तँ एहि सँ हिन्दू भावनाकेँ ठेस लगितैक । तैँ कहल इएह जाइत छलैक जे ई महींसक चाम सँ बनाओल जाइत छैक । किन्तु ई उद्योग बीसम शताब्दीक प्राथमिके चरण मे समाप्त भ' गेल ।

चाम केँ सुखा क', झरका क' तैयार करबाक काज मे सागरपुर (सकरी) गामक कारीगर सभ जानल जाइत छल । पूर्णियाँ, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, दलसिंहसराय आ पण्डौल इत्यादि चर्म-उद्योगक लेल प्रसिद्ध छल । द्वितीय विश्वयुद्धक बाद तक ई उद्योग बेस

विकसित छल मुदा स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सँ क्रमहिं समाप्त होबए लागल-ओना एखनहुँ अव्यबस्थित आ असंगठित रूपें जीबैत अछि।

16. **टाली-खपड़ा उद्योग**–मिथिला मे एहि उद्योगक इतिहास बड़ पुरान छैक। पक्का मकान एतए बड़ बाद मे बनब शुरुह भेल । किन्तु कच्चा मकान आ बाँसक मकानक छत पर टाली कि खपड़ाक छारनि देबाक परम्परा बड़ पुरान रहलैक अछि। बाद मे पक्को मकान पर बेशी लोक टालिए दैत छलैक । घर पर खपड़ा आ ताहू सँ बेशी टाली लगाएब सामाजिक स्तर पर सम्पन्नता आ समृद्धताक सूचक होइत छलैक। मुगलकाल मे ई उद्योग खूब विकसित भेल । तहिना ब्रिटिश काल मे सेहो एहि उद्योग के खूब प्रोत्साहन भेटलैक । आर. सी. सी. वा कंक्रीटक आगमन सँ अवश्ये एकरा किछु आघात लगलैक मुदा ब्रिटिशकाल मे एकर व्यापक आ कलात्मक उपयोग कएल गेलैक । बीच मे ई उद्योग एकदम सँ लटपटा गेल छल, किन्तु एम्हर फेर किछु दिन सँ वास्तुशिल्पी सभ गृह निर्माण मे एकर सुरूचिपूर्ण व्यवहार करए लगलाह अछि। एहि उद्योगक भविष्य अनिश्चित किन्तु वर्त्तमान बेजाए नहि छैक ।

17. **आभूषण इत्यादि उद्योग**–मिथिला मे आभूषण इत्यादि बनएबाक उद्योग बहुत प्राचीन काल सँ चलि रहल अछि । जहिया सँ धातुक परिष्कृत प्रयोग बुझबा मे अएलैक, तहिए सँ । कालान्तर मे एकर स्तर आ कलात्मकता दूनू मे सुधार भेल गेलैक । ई काज मुख्यतः सोनार जातिक लोक करैत छलाह । प्रमुख धातु जे उपयोग मे अबैत छल से छल-सोन, चानी, तामा, पित्तड़ि इत्यादि । एकरा अतिरिक्त मिथिला मे हाथी-दाँत आ महींसक सिंघ पर काज करबाक आ ओकर सुन्दर तथा कलात्मक वस्तु सभ बनएबाक उद्योग सेहो खूब विकसित छलैक । हाथीदाँत आ महींसक सिंघक कतेको रास वस्तु सभ एतए बनैत छलैक; जेना-कंघी, बाटी, रिकबी, कप, चम्मच, काँटा (केश मे खोसएबला) चाकू आ तरूआरिक मूठ, कंतौड़ी, पनबसना, पनबट्टी, चाभीक झब्बा, कण्ठमे आ बाँहि पर पहिरएबला चकता इत्यादि । एकरा अतिरिक्त बहुत रास लकड़ीक साज-समान मे हाथी दाँत आ महींसक सिंघक छोट-छोट कलात्मक पच्चीकारी कएल जाइत छलैक । एहि काज मे 'खोधियर' उपजातिक लोक विशिष्टता प्राप्त कएने छल।

18. **पुष्प-गुच्छ आ माला उद्योग**–मिथिलाक ई अद्भुत आ अविश्वसनीय उद्योग एकदम सँ विलुप्त आ विस्मृत भए चुकल अछि । ओना एकरा उद्योगक श्रेणी मे राखब, आधुनिक संदर्भ मे बहुत उचित नहि, किएक त मूलतः ई निर्माणक प्रक्रिया सँ संलग्न नहि छल । तथापि रूपान्तरण आ उपयोगिता संवर्धनक दृष्टिएँ एकरा परम्परागत रूपें

कलात्मक उद्योगक रूप मे मान्यता देल जा सकैत छैक । विशेष आग्रह एहू लेल जे मिथिलाक ई उत्पाद विश्व मे अनन्यतम छल । ''न भूतो, न भविष्यति' । अति प्राचीन काल मे विश्वक जे कोनो सभ्य प्रदेश छलैक आ जतए मिथिलाक व्यापारिक समागम छलैक-तत' ई अपन अदभुत आ अतुलनीय सौन्दर्य तथा टिकाउपनक लेल विख्यात छल । मिथिला मे विशेष व्यवस्थाक संग, विशेष प्रकारक फूल-पौधा इत्यादि उगाओल जाइत छल । ओहि फूल आ पात सभकेँ विशेष रूप सँ किछु विशिष्ट रसायन इत्यादि सँ संरक्षित कएल जाइत आ तखन ओहि सँ पुष्प-गुच्छ तथा माला इत्यादि बनाओल जाइत छलैक आ से देश-विदेश मे निर्यात कएल जाइत छलैक । एकर अद्भुत विचित्रता कि गुणवत्ता ई छलैक जे ई छओ-छओ मासक बादो एकदम स्वाभाविक रूप सँ ताजा आ सुगंधित रहैत छलैक । कहबाक प्रयोजन नहि जे ओहि समय मे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे एक देश सँ दोसर देश तक जएबा मे बहुत बहुत दिन लगैत छलैक । तकराबादो ई फूल-पात सभ ओहिनाक ओहिना रहैत छल, जेना एखने तोड़ल गेल हो । स्वाभाविक छैक जे एकर मूल्य बहुत बेसी होइत छलैक आ मात्र राजे-महराजा एकर उपयोग कए सकैत छलाह । एकर उत्पादन सम्भवतः मिथिलाक उत्तरी सिमान पर पहाड़ी वा तराइ क्षेत्र मे होइत छल । खेद जे ओहि स्थान-निर्धारणक सम्बन्ध मे कोनो निश्चित प्रमाणक अद्यावधि अभाव अछि ।

19. खाद्यान्न तैयारी सम्बन्धी उद्योग–एहि उद्योग मे कतेको रास बस्तु सभ अबैत अछि । जेना-चाउर, दालि, चूड़ा, मकइ, आँटा, सरिसो, तोड़ी, तीसी, तिल, अण्डी, इत्यादि तैयार करबाक इकाइ सभ । धान मिथिलाक सर्व प्रमुख कृषि उत्पाद रहल अछि। तैं स्वाभाविक रूपें एतए धान सँ चाउर तैयार करबाक उद्योग व्यापक स्तर पर चलैत रहलैक-जे क्रमहि गृह-कार्य सँ बढ़ि क' गृह उद्योग कुटीर-उद्योग आ पुनः लघु उद्योग मे परिणत भ' गेल । ओना गृह आ कुटीर उद्योग सेहो बनले रहल । प्रत्येक दू-चारि गाम पाछू दू एकटा चाउर आ चूड़ा कूटए बला मिल भेटिए जायत । ओना नेपालक सिमान पर काते-कात बेसी संख्या मे मिल सभ स्थापित अछि । नेपालो मे बेस मात्रा मे धान उत्पादित होइत छैक आ से तैयारीक लेल चोरा-नुका क' एम्हर चल अबैत छैक । एकटा आश्चर्यक बात ई छैक जे स्वतंत्र भारत मे दरभंगा जिला मूल रूप सँ धानक उत्पादक भइयोक' जनसंख्याक उपभोग जोगर चाउर तैयार नहि कए सकैत छल । पारम्परिक रूप सँ एहि क्षेत्र मे चाउर ढेकी मे तैयार कएल जाइत छलैक-सेहो विशुद्धतः शारीरिक श्रम सँ बाद मे ई बिजली तथा तेल पर चलए लागल। तहिना आँटा चक्की सेहो गृह-कार्य सँ ल'क' गृह-उद्योग, कुटीर उद्योग आ लघुउद्योग

तक क' यात्राक' चुकल । तेलो पेरबाक परम्परा एहि क्षेत्र मे आदि कालहि सँ चलल आबि रहल अछि । तेली जातिक लोकक इएह जीवनाधार व्यवसाये छलनि । तीसी, तेल, सरिसो, अण्डी, आदि एहि क्षेत्र मे बाहुल्य सँ उपजैत छलैक । तैं मोटा-मोटी प्रत्येक चाउर वा आँटा मिलक संग तेल मिल सेहो लागले रहैत छलैक । एहि उद्योगक माँग सतत् बनल रहलैक अछि भविष्यो मे रहबे करतैक ।

20. दुग्धाधार उद्योग–ई उद्योग मिथिलाक बड़ पुरान उद्योग अछि । सर्वज्ञात अछि जे मैथिल जीहक पातर आ भोजनभट्ट होइत अछि । घी सँ प्रारम्भ होअए आ अन्नग्रासक बाद दूध, खोआ, छाली, मलाइ इत्यादि किछु रहए त' नीक । दही त' अनिवार्य आ संगहि जँ मधुर रहए त' उत्तम । यद्यपि आब पहिने जकाँ दुग्ध-उत्पादनक प्रचुरता नहि रहलैक अछि-तैयो ई दुग्धाधार उद्योग एखन धरि चलि रहल अछि । एकर स्वरूप मे भने किछु परिवर्त्तन भ' गेल हो । पहिने मिथिलाक लगभग प्रत्येक गाम मे गृह इकाइक स्तर पर ई उद्योग चलैत छल आ बेस विकसित छल ।

21. ताड़ आ खजूरक गुड़ उद्योग– ई उद्योग मिथिलाक पारम्परिक उद्योग सभ मे अपन महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छल । ताड़-गुड़ सामान्यतया मध्यम आ निम्नवर्गीय परिवार मे चलैत छल । मिथिला मे नहि किछु त' हजारो गृह-इकाइ एकर उत्पादन मे लागल रहैत छल-यद्यपि ओहि मे सँ बेसी अनियतकालीन उत्पादक इकाइ रहैत छल। एहि उत्पाद के चीनी 1950 क बाद तेजी सँ प्रतिस्थापित करए लगलैक आ ई उद्योग पतनोन्मुख होइत आब एहि क्षेत्र मे समाप्तप्रायः भ' गेल अछि ।

22. गुड़ खण्डसारी उद्योग– ई बड़ प्राचीन उद्योग अछि आ मिथिलाक विशेष उत्पाद केर रूप मे जानल जाइत अछि । एकर उत्पादन प्राचीनेकाल सँ मिथिला मे भारी मात्रा मे होइत छल । ओना दरभंगा, मधुबनी, रहिका, लोहा, औंसी, झंझारपुर, पूर्णिया, कटिहार, धमदाहा, बनमनखी, अररिया इत्यादि एकर प्रमुख उत्पादन केन्द्र छलैक, मुदा बस्तुतः एकर उत्पादन गृह आ कुटीर इकाइक स्तर पर मोटा-मोटी गामे-गाम मे होइत छल । उज्जर दानेदार चीनीक आगमनक बादो एकर मांग किछु हद तक बनल रहल मुदा स्वतंत्र भारतवर्ष मे घोर उपेक्षाक कारण इहो परम्परागत उद्योग क्रमशः समाप्त भेल जा रहल अछि । चीनीक आगमनक पहिनें मिथिलाक मिष्ठान भोजन पर एहि उद्योगक मोटा-मोटी एकाधिकारे छलैक ।

23. मधु उद्योग–मधुमाछी पोसबाक आ मधु तैयार करबाक उद्योग मिथिलाक प्राचीनतम उद्योग मे सँ एक अछि । मूलतः ई वन-संसाधन पर आधारित उद्योग छल। प्राचीन आयुर्वेद मे मधुकं कतेको औषधीय गुण गनाओल गेल छैक । प्रत्येक वैदिक

अनुष्ठान वा कर्मकाण्ड मे एकर उपयोग अनिवार्यतः कएले जाइत छैक । इहो उद्योग समस्त मिथिला मे पसरल छल । कालान्तर मे एकर प्रमुख कन्द्र दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, पूर्णियाँ, बनमनखी, रानीपतरा, कटिहार, भागलपुर, नाथनगर, रोसड़ा, सहरसा, मधेपुरा, दलसिंहसराय, राजनगर आदि मे बनि गेल । आधुनिक तकनीकक आधार पर एहि उद्योगक विकासक लेल खादी-ग्रामोद्योग बोर्डक माध्यम सँ किछु अधकचरा प्रयासो सरकारी स्तर पर कएल गेल छलैक । मुदा से सभटा व्यर्थ । ई उद्योग क्षेत्र मे समाप्तप्राय अछि ।

उपरोक्त गृह आ कुटीर उद्योगक अतिरिक्तो मिथिला मे बहुतो रास उद्योग सभ समय-समय पर विकसित भेल आ कालान्तर मे समाप्त भ' गेल । ओहि मे किछु एकदम महत्त्वहीन आ किछु बेस महत्त्वपूर्णो भेल । किन्तु जाहि उद्योगक सुदीर्घ परम्परा नहि रहलैक आ जे मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा के प्रभावित नहि क' सकल अथवा जे निकट भूत मे प्रारम्भ भेल तकरा सभक चर्चा एतए सम्भव नहि भ सकल अछि से वांछनीयो नहि । निर्विवाद रूपें मिथिलाक औद्योगिक परम्परा मूलतः कृषि सँ जुड़ल रहलैक । संगहि इहो जे एही कारणे मिथिला निकट भूत के छोड़ि क' हजारो बरसक अपन गौरबमय इतिहास मे आर्थिक दृष्टिएँ पूर्ण-रूपेण स्वावलम्बी बनल रहल । दुर्भाग्य सँ एकमात्र इएहटा बात जे आधुनिक सन्दर्भ मे एहि क्षेत्रक लेल सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण छैक से राजनैतिक आ आर्थिक व्यवस्थाक दृष्टि सँ एकदम साफ छूटि गेल छैक । बलात् बिसरि देल गेल छैक आं एहि क्षेत्रकें अपन दुर्भाग्यक संग असंगत संघर्ष करबाक लेल निरूपाय छोड़ि देल गेल छैक । यद्यपि आर्थिक वा राजनैतिक, एताबता जे सामाजिको स्तर पर निकट भविष्य मे एहेन चेतनाक जागृत होयबाक कोनो टा सम्भावना दृष्टिगोचर नहि भ' रहल छैक, तथापि ई कहबा मे कदाचित कोनो संदेह नहि जे जँ योजनाबद्ध ढंग से एतुक्का औद्योगिक सम्भावनाकें विकसित, संरक्षित आ संबर्धित कएल जाए, त' ई क्षेत्र पुनः अपन गरिमा आ समृद्धता प्राप्त क' सकैत अछि ।



रमानन्द झा 'रमण'

एकैसम शताब्दीक द्वारि पर थाप दैत मैथिली कविता

(सन्दर्भ-ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप)

साहित्य अकादेमी सँ अद्यावधि मैथिलीक उनतीसटा पोथी पुरस्कृत भेल अछि । ओहि मे दसटा काव्य ग्रन्थ थिक । पुरस्कृत रचनाकार मे 34 प्रतिशत कवि भेलाह । दशक क्रम मे गणना कएला सँ सातम दशक मे दू (यात्री आ मधुप), आठम मे चारि (सुमन विधु, मोहन आ तन्त्रनाथ झा), नवम् मे दू (प्रवासी एवं आरसी प्रसाद सिंह) तथा शताब्दीक अंतिम दशक मे अद्यावधि दू (जयमन्त मिश्र एवं कीर्त्ति नारायण मिश्र) कवि पुरस्कृत भेलाह अछि। पुरस्कृत होयबा सँ पूर्व वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' तथा जयमन्त मिश्र मैथिलीक कविक रूप मे अल्प चर्चित छलाह । किछु चर्चित कवि संयोगवश अन्य विधा मे पुरस्कृत कएल गेलाह।

'कविता कुसुमाञ्जलि' (जयमन्त मिश्र) मे छात्र जीवन सँ प्रकाशन अवधि धरिक प्रायः अधिकांश रचना संग्रहीत अछि । मैथिलीक कविक अपेक्षें ओ सफल प्राध्यापक तथा मैथिल विद्वानक रूप मे देश-देशान्तर मे विशेष जानल मानल जाइत छथि । 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' मे 1980 सँ 1990 क बीच लिखित प्रकाशित 42 टा कविता संग्रहीत अछि । कीर्ति नारायण मिश्र मूलतः कवि छथि । मैथिलीक कविक रूप मे ख्याति अर्जित कएने छथि। हिनक कवि-व्यक्तित्वक समक्ष व्यक्तित्वक अन्य पक्ष गौण अछि । एहि हेतु 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' क माध्यम सँ एकैसम शताब्दीक द्वारि पर थाप दैत मैथिली कविताक चिन्हबाक प्रयास विशेष सार्थक भ' सकैछ ।

'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' 1991 मे प्रकाशित भेल । डा. भीम नाथ झा, डा योगानन्द झा एवं प्रो० मायानन्द मिश्र मिलि साहित्य अकादेमीक 1997 क पुरस्कार लेल निर्धारित अवधि मे प्रकाशित मैथिलीक पोथी मे सर्वोत्कृष्ट मानल । एहि मे वर्ष 1990 धरिक कविता अछि। तें कविक चेतना ओही काल धरिक मानय पड़त । एहि पोथीक प्रकाशनक उपरान्त कतेको काव्य ग्रन्थ छपल अछि । कीर्ति नारायण मिश्र सँ बरिष्ठ आ कनिष्ठ दुनू प्रकारक मैथिली कविक संग्रह आएल अछि । ओहि मे केओ पुरस्कृत नहि छथि । तँ ई नहि जे एकैसम शताब्दीक

द्वारि पर थाप दैत मैथिली कविता केँ चिन्हबाक समय ओहि संग्रह केँ अचर्चित छोड़ि देल जाय । मुदा ई धरि अवश्य जे मैथिली कविताक खसैत प्रतिष्ठा केँ कीर्ति नारायण मिश्रक 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' बचा लेलक अछि ।

वर्त्तमान दशक मे प्रकाशित संग्रह मे प्रमुख अछि, 'धार नहि होइछ मुक्त', तकैत अछि चिड़ै तथा खाँड़ो (जीवकान्त), अनेरे (हंसराज), सोम सतसइ' (सोमदेव), कहलनि पत्नी (उदय चन्द्र झा 'विनोद'), यंत्रणाकक्षण मे (उपेन्द्र दोषी) पघिलैत बरफ (भुवनेश्वर पाथेय), प्रवास पिपासल (जगदीश मिश्र), पुनर्नरवा होइत ओ छौंड़ी (विभूति आनन्द), अपूर्वा (राम लोचन ठाकुर), नाम तँ थिक वैह (भीम नाथ झा), आगत क्षण मे (नीरजा रेणु), हम घर घूरि रहल छी (नारायण जी), परती टूटि रहल अछि (अरविन्द ठाकुर), आकार लैत शब्द (केदार कानन), समय-सन्दर्भ सोपान (वैकुण्ठ झा), रस्ता तकैत जिनगी (धर्मेन्द्र विह्वल), समवेत स्वरक आगू (रमेश), परिचिति (सुस्मिता पाठक), हस्तक्षेप (तारानन्द वियोगी) आदि । मैथिलीक रचनाकार मे महाकाव्य रचबाक क्षमता ओ धैर्य छनि जे प्रमाणित करैत अछि मुक्तिपथ (महिनाथ झा) एवं प्रणय परीक्षा (दयाकान्त झा) ।

वर्त्तमान शताब्दीक अन्त अथवा एकैसम शताब्दीक द्वारि पर थाप दैत मैथिली कविता केँ चिन्हबाक हेतु वीसम शताब्दीक द्वारि पर थाप दैत मैथिली कविता केँ समक्ष राखि नीक जकाँ चिन्हल जा सकैत अछि । गत सए वर्ष मे मैथिलीक कविता मे आएल परिवर्त्तन युग-जीवनक प्रति कविक दृष्टिकोण एवं अपन परिवेशक प्रति संलग्नता केँ विवेचित-विश्लेषित कएल जा सकैछ ।

उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम दू दशक मे लिखित-प्रकाशित एवं उपलब्ध साहित्यक अवलोकन सँ स्पष्ट होइछ जे राष्ट्रीय अस्मिताक रक्षा, अपहृत राष्ट्रीय सम्मान, सामाजिक उत्थान आदिक प्रति रचनाकार मे मूलभूत परिवर्त्तन आबि गेल छल । प्रथम स्वाधीनता संग्रामक असफलता, असफलताक कारणक समीक्षा आ आत्मालोचन एवं ओहि सँ प्राप्त शक्ति उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम दशक धरि पुनः संगठित-केन्द्रित होअए लागल छल । एहि हेतु सामाजिक आ राजनीतिक संगठन बनल । सक्रियता बढ़ल । ई सक्रियता दू दिशा मे बढ़ल-राजनीतिक आ सामाजिक स्तर पर । राजनेता लोकनि राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्तिक हेतु जागरण अभियान चलाओल । भारतवर्षक वैभवपूर्ण अतीतक मनोहारी छवि प्रस्तुत करैत वर्त्तमान दासता सँ मुक्तिक लेल प्रेरित कएल । सामाजिक कार्यकर्त्ता सामाजिक दुर्गुण केँ लक्ष बनाओल । धार्मिक अन्धविश्वास, आडम्बर, अशिक्षा नारी उत्थान आदिक प्रति लोक केँ सचेत कएल। महत्त्व बुझाओल । भाषा, साहित्य एवं संस्कृतिक रक्षाक हेतु जागृति आनल । एहि सक्रियताक प्रभाव मिथिलाक शिक्षित वर्ग पर पड़ल । भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक क्षेत्र मे आएल जागृतिक अनुगुंज भेटैत अछि कवीश्वर चन्दा झा, महाकवि लालदास, म. म. हर्षनाथ झा, पण्डित श्री

कृष्ण ठाकुर, म.म. परमेश्वर झा, बाबू तुलापति सिंह आदिक साहित्य मे । ओ लोकनि अपन भाषा-साहित्यक विकास लेल तत्पर भेलाह तथा साहित्यक माध्यम सँ सामाजिक दुर्गुणक निराकरण तथा राष्ट्रीय स्वाधीनताक प्रति जन सामान्यक रूचिकेँ विकसित एवं उन्मुख कएल। संक्षेप मे कहि सकैत छी जे बीसम शताब्दीक द्वारि पर थाप दैत मैथिली साहित्यक समक्ष मूलतः दू टा चिन्तना छल-विदेशी-विदेशी शासन-व्यवस्था सँ मुक्तिक लेल जनमानस तैयार करब तथा सामाजिक दुर्गुण सँ समाजकेँ मुक्त करब अर्थात राजनीतिक जागरण एवं समाजोद्धार। एही दू चिन्तनाक संग मैथिली साहित्य बीसम शताब्दी मे प्रवेश कयने छल।

वीसम शताब्दी केँ विदा करैत जीवकान्त लिखलनि अछि—

'जाउ हे युद्ध जर्जर शताब्दी
अहाँ अगबे हथियार आ युद्धक ओरिआओन मे
घिघरी कटैत रहलहुँ
अहाँ मनुष्यक शोषणक लेल
गढ़ैत रहलहुँ हथियार ।'

(धार नहि होइछ मुक्त)

कविक विदाभाव वर्त्तमान शताब्दी मे मनुष्य द्वारा मनुष्यक शोषण सँ जनमल अछि। अपेक्षा छलैक मनुष्यकेँ मनुष्य बूझि महत्त्व भेटितैक । मनुष्यक कल्याण हेतु विभिन्न स्तर पर चिन्तन कएल जाएत । किन्तु, अगबे हथियार आ युद्धक ओरिआओन मे मनुष्यता घिघरी कटैत रहल । मनुष्यक मूल्य कम भेल । मनुष्यक सुख-सुविधा आ मानसिक-सांस्कृतिक विकासक अपेक्षा भोगवादकेँ विभिन्न ढंगे प्रश्रयक हेतु साधन आ प्रयास बढ़ल ।

भारतक स्थिति वैश्विक स्थिति सँ बाहर नहि रहि सकल । राष्ट्रीय स्वाधीनता यद्यपि भेटलैक । स्वाधीनताक स्वर्ण जयन्ती मनौल गेल । किन्तु लोकक आशा-आकांक्षा पर तुषारपाती चक्रक गति मे वृद्धि भेल । एहन नेताक हाथ मे राष्ट्रक संचालन सूत्र कसाइत रहल जे सामाजिक सौमनस्य, राष्ट्रीय उत्थान एवं राष्ट्रीय सुधारक अपेक्षा व्यक्तिगत अथवा निकट कुटम्बजनक सुख-सुविधा एवं विकासक हेतु नीतिगत परिवर्त्तन मे आकण्ठ डूबैत रहलाह । परिणामतः बेकारी, बैसारी, मँहगी, असंतोष आ अविश्वास बढ़ल । ई आक्रोश केँ जन्म देलक । आक्रोशक परिणति विध्वंसात्मक प्रवृत्ति मे होइत रहल । संक्षेप मे कहि सकैत छी गत शताब्दीक अंतिम दशकक अपेक्षा वर्त्तमान शताब्दीक अन्तिम दशक मे राजनीतिक आर्थिक, वैश्विक आदि प्रत्येक क्षेत्र मे एहन परिवर्त्तन आयल अछि जे एक संवेदनशील रचनाकारक मानसिक क्षेत्र पर अनवरत थाप दैत रहैत अछि ।

कीर्त्ति नारायण मिश्र अपन अन्य संग्रहि जकाँ' ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' मे अपन परिवेश, ओहि परिवेश मे स्थित व्यक्तिक विवशता एवं विकलता केँ फरिछाओल अछि ।

ओ स्थिति केँ स्पष्ट करैत लिखल अछि–'हम जतबे बन्धनमुक्त रहय चाहैत छी, ततबे बन्धन मे जकड़ल जा रहल छी। ई विवशता मात्र हमरे अछि।' जीवकान्त मनुष्य केँ शिकंजा मे कसल अनुभव करैत छथि। ओहि सँ मुक्तिक प्रयास करैत देखैत छथि। लिखने छथि– 'हम साहित्य केँ जीवन सँ प्रतिवद्ध बुझैत छी। आधुनिक जीवनक विसंगति, असुविधा, पीड़ा आ यांत्रिकता केँ अभिव्यक्ति देव एहि कविताक (नव कविताक) लक्ष्य थिक।'

कीर्त्ति नारायण मिश्र आ जीवकान्त दुनू मुक्ति चाहैत छथि। किन्तु दुनूक मुक्तिक अवधारणा अथवा प्रयास मे किछु अन्तर प्रतीत होइत अछि। कीर्त्ति नारायण मिश्र दायित्व मुक्तिक कामना करैत छथि–पछिला पनरह वर्ष सँ नौकरी छोड़ि लेखनकेँ सम्पूर्ण समय देबाक बात सोचि रहल छी। किन्तु पारिवारिक दायित्व कहैत अछि–गीत कवित बिसरि हरक मूठ थामने रहू, बहैत रहू अपटी खेत मे जाधरि बहि सकैत छी।' समाज मे रहितो लोक समाज मे नहि अछि, एक सामाजिक प्राणी होइतो व्यवहारतः सामाजिक प्राणीक गुणधर्मक सम्मुच्चय ओ नहि थिक। एकर कारण थिक समाजक टूटि छहोछित होएब। लोक मे असुरक्षाक भाव क्रमशः घनीभूत होइत जाएब तथा पारिवारिक दायित्व बढ़ब। पूर्वक अपेक्षा आजुक रचनाकारक दायित्व द्विगुणित अवश्य भए गेल अछि। संयुक्त परिवार रहल नहि। खेती-बाड़ी सँ आवश्यकताक पूर्ति होयब असंभव भए गेलैक। शहर मे जीविकापन्न नहि होयत त' खाएत की खुआओत की। पहिरत की पहिराओत की। गाम छोड़ि तँ चल जाइछ किन्तु ओकर मन खुटेसल रहैत छैक गामे मे। शहर मे जीवनक अधिकांश भाग वितयबाक लेल वाध्य रहितो शहरक गाछ-पात सँ अपरिचिते रहि जाइत अछि। आत्मीयता नहि औपचारिकता ओकर क्रिया-कलाप आ आहार-व्यवहारक अत्याज्य अंग भए जाइत अछि। रचनाकार एक व्यक्ति सेहो रहैत अछि। एक व्यक्तिक किछु खास व्यक्तिगत आकांक्षा होइत छैक। एहि आकांक्षा केँ पारिवारिक दायित्व सदिखन चपने रहैत छैक। जे रचनाकार पारिवारिक दायित्वक वन्धन केँ शिथिल कए सामाजिक सत्यक अनुसन्धान मे बोने-बोने बौआइत अछि, सांसारिक सुख-सुविधाक प्राप्तिक हेतु अनुखन प्रयत्नशील नहि रहि असंख्य भूखल-पियासल आ अभावग्रस्त जन समुदायक यथार्थक अनुसंधान मे अपना केँ रमा लैत अछि यात्री भए जाइछ आ जे आधुनिक सुख-सुविधाक अधिकाधिक प्राप्ति आ उपभोगक पाछू अपन जीवनक प्रत्येक क्षण आ अपन उर्जाक प्रत्येक कण केँ उत्सर्ग करबा लेल सदिखन प्रवृत्त रहैत अछि कीर्त्ति नारायण मिश्र बनि जाइत अछि।

जीवकान्तक मुक्तिक अवधारणा अपेक्षाकृति व्याप्ति लेने अछि। वर्त्तमान परिवेश मनुष्यक मुक्ति अभियान मे बाधक अछि। परिवेश अमूर्त होइतो विभिन्न घटक जेना राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक आदिक सम्मुचय थिक। तें परिवेश मे मुक्तिक अनुकूल परिवर्त्तन सँ मनुष्यक विकासशील चेतनाक सम्यक विकासक मार्ग मे बाधा-व्यवधानक

निराकरण स्वतः भए जाएत। स्तूप प्रतीक थिक शान्तिक। दानवीय शक्ति पर मानवीय शक्तिक विजयक प्रतीक थिक। शान्तिक प्रतीक ध्वस्त भ' रहल अछि। स्वतः नहि, ककरो हाथें। ओ हाथ थिक विज्ञानक दानवीय शक्तिक। एहि शताब्दी मे विज्ञानक प्रतापे विश्वक भूगोल छोट भए गेल। संचार साधन बढ़ल अछि। किन्तु ओहिना आयुधक भंडार विनाशकारी भए गेल अछि। युद्ध जर्जर अथवा विनाशकारी युद्धक आशंका सँ सदिखन आच्छन्न आजुक परिवेश मे मनुष्यक स्थिति यातना शिविरक भए गेलैक अछि। एहन यातना शिविर जतए विभिन्न आकार-प्रकारक विषसिक्त सुलफा चारूकात सँ भैंसा रहल छैक। एहि स्थिति मे शान्तिस्तूप दू स्तर पर ध्वंस होइत अछि। पहिल थिक युद्ध जकर विध्वंसकारी स्थिति केँ स्वर दैत कीर्ति नारायण मिश्र लिखैत छथि–

अहाँके कैने अछि विस्मित
युद्धपोत पनिडुब्बी शस्त्रास्त्र
युद्धक विमान आ प्रक्षेपास्त्र
हमरा केने अछि व्यथित-मथित
जाति-भेद
माछ सभक पंच बनल 'शार्क ह्वेल'
जल समाधि लेने घरिआर
ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप
शिखरासीन रडार

कीर्ति नारायण मिश्र शान्ति स्तूपक ध्वस्त होयब तथा सामूहिक विध्वंस लीलाक प्रतीक रडारक शिखरासीन हएब कहि मानवीय अस्तित्त्वक सर्वथा प्रतिकूल परिवेशक चित्र प्रस्तुत कए देल अछि। 'कोलतार सँ राँगल आकाश में होइत रहल हमर शौर्य सुर्यक अस्त' मनुष्यक अन्तरतम मे व्यक्तित्वक रक्षाक चिन्ताकेँ द्योतित करैत अछि। यद्यपि वास्तविकता इहो अछि–

'पण्य वस्तु जकाँ बेचल जा रहल अछि
नैतिकता चरित्र
कौमार्य सतीत्व मातृत्व आ देवीत्व
लोक भजा रहल अछि
अपन वंश उपाधि आत्मिक उपलब्धिक
चौबटिया पर फोलने अछि दोकान
आ बेचि रहल अछि आत्म सम्मान।'

शान्तिक प्रतीकक ध्वस्त होयब सामाजिक नैतिकताक ध्वस्त होयब सेहो थिक । सामाजिक नैतिकताक ध्वंस सँ विभिन्न स्तर पर शोषणक उजाहि आएल अछि । सभ ठाम एक्के रंग पेट पर बोनिक दाना छिड़िआएल भेटत, (जादूक खेल) । एहिना श्रमिकक शोषण (भिनसर सँ साँझ धरि समुद्रक ढेहु पर तथा पंजाबक चिट्ठी) बाल श्रमिक (कुकूर) आदिक स्थिति पर कविता अछि ।

स्वाधीनताक बाद कतेको वर्ष धरि लोक प्रत्याशा मे जीबैत रहल । किन्तु प्रत्याशाक मेघ सँ तूबैत रहल निराशा । ई निराश जन–जन केँ किछु वर्ष धरि अचंभित आ स्तब्ध रखलक। किन्तु जेना लोक आशंकित भय सँ रक्षाक हेतु स्वत: तैयार होइत जाइत अछि ओहिना एहि शताब्दीक नवम दशक मे प्रतिरोधक चेतना जागृत भेल । चुपचाप सहि लेब आ संतोष कए निष्क्रिय बनल रहि जायब अस्वीकार भए गेलैक । एहि स्थिति केँ स्पष्ट करैत कीर्तिनारायण लिखल अछि–

जहिया सँ होस भेल अछि
पौलहुँ अछि अपना केँ
कृपा दृष्टि पर जीबैत
गुज्ज अन्हरिया मे टोइया मारि–मारि
चोरि गेल सुर्य केँ जोहैत ।'

चोरि गेल सूर्यके जोहब शक्तिक अनुसंधानक द्योतक थिक । संघर्षक मानसिकताक परिचायक थिक, ई मानसिकता एक व्यक्तिक नहि, आजुक परिवेशक संवेदनशील रचनाकारक थिक, एहि सँ रचनाकारक प्रहारक शक्ति बढ़लैक अछि । लोकक एहि मानसिकता केँ चीन्हि उदय चन्द्र झा 'विनोद' लिखैत छथि–

एखनो सत्य लेल अड़ै छैक लोक
पड़ोसिया लेल दीप जकाँ वरै छै
कवच-कुंडल बनै छै नाम लेल
मारि करै छै श्मशान लेल
अहाँ अपने पहिने
झालि जकाँ बाजब तँ छोड़ियौ
एखनो किछु नहि बिगड़लैए-बाबू ।'

(कहलनि पत्नी, पृष्ठ–36)

ओहिनामे 'कोनटा मे ध' लेने अछि आगि कम सँ कम अपनाके बचबियौ' एही मानसिकताक परिचायक थिक । उपेन्द्र दोषी 'भावी पीढीक दर्द' (यन्त्रणाक क्षण मे) अनुभव कए स्पष्टत: कहैत छथि–

'ओ अजन्मा भगीरथ !
पहिने पीढ़ीक उद्धार करू
तखन एहि बिकायलि धरती पर पएर धरू
ओना अहाँक नाम
महाजनक खातामे टिपा गेल अछि
सूदि सहित मूर सभ लिखा गेल अछि
जन्म लेबासँ पूर्वहिं अहाँक
जीवन बिका गेल अछि ।'

यन्त्रणाक क्षण मे अथवा यातना शिविर मे जखन वाह्य प्रकाशक बाट पूर्णत: छेकाएल भए जाइत अछि, आन्तरिक चेतना जगैत छैक । आत्मबल अबैत छैक । आजुक पीढ़ीक एहि मानसिकताकेँ तारानन्द वियोगी स्वर दैत छथि–

मुदा स्मरण राखब हमर प्रभु !
हमर बाट एतहिं सँ निकसत
एतहि सँ प्रारम्भ हैत विजय यात्रा
एहि दुनियाँ सँ नीक दुनियाँ बनेबाक संकल्प
एहीठाम जन्म लेत । जनमताह विश्वामित्र ।
अहाँ चाही तँ
हमरा थोड़े आर दुख दिय प्रभु
थोड़े आर यन्त्रणा ।'

(हस्तक्षेप, पृष्ठ–37)

यातना शिविरक मध्य प्राप्त चेतना दू स्तर पर कार्यरत अछि । प्रथमत: यन्त्रणाभोगी स्वयं आस्था अनैत अछि आ दोसर दिस अग्रज पीढ़ीकेँ प्रभावित करबाक प्रयास सेहो करैत अछि–

भैया हमर भैया
समय केर शिकाइत पुस्तिका पर
अपन असहमति तूहूँ तँ कने लीखह आब
नोछाड़ तँ पाड़ह
इतिहासक शिलालेख पर ।

कीर्ति नारायण अपन रचना प्रक्रियाकेँ स्पष्ट करैत लिखने छथि–वाल्यकाल मे नदीक कात मे रेत पर हस्ताक्षर करैत रही, सम्प्रति समुद्रक रेत पर करैत छी । हमर रचना प्रक्रिया

रेत पर हस्ताक्षर करब थिक । रचना प्रक्रियाक ई रहस्योदघाटन कतेको अन्तर्निहित तथ्य केँ समक्ष अनैत अछि । नदी जीवन्तताक प्रतीक थिक । जीवन, प्रवाह थिक । नदीक प्रवाहे जकाँ जीवनक प्रवाह कतहु चाकर आ कतहु टेढ़-बकुली भए चलैत अछि । ई प्रवाह अनुभवक क्षेत्रकेँ व्यापक बनबैत अछि । एहि सँ रचनाकारक रचनात्मक उधियान कनिके आँच पर ने तँ उधिया कैँ खसैत अछि आ ने आँचे के मिझबैत अछि । गंगाकात सँ समुद्रकात धरिक यात्रा इएह आत्मस्वीकृति थिक । 'सीमान्त' सँ ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' धरिक कीर्ति नारायणक काव्य-यात्रा कविक स्फीत रचनात्मक दृष्टिक परिचय दैत अछि । 'सीमान्तक प्रहार आ स्वीकृति मूल्यक विरोधभाव' ध्वस्त होइत शान्तिस्तूप' मे आबि कविक एहन चिन्तनाक परिचय दैछ जे एक दिस ध्वंसक आशंका सँ चिन्तित अछि तँ दोसर दिस निर्माणक हेतु गाबिस उघबाक साहस दैत अछि ।

कीर्ति नारायण प्रवाह पर हस्ताक्षर करैत छथि तँ तारानन्द वियोगी शिलालेख पर नोछाड़ पारबाक हेतु अग्रजकेँ आग्रह करैत छथि । ने तँ प्रवाह पर हस्ताक्षर संभव अछि आ ने पाथर केँ नोंछरब । किन्तु महत्वपूर्ण अछि प्रयास । असंभव केँ अपन एकनिष्ठताक संग संभव करबाक हेतु यत्नशील रहब । ई प्रयास, साहस आ आत्मविश्वास-एकैसम शताब्दीक द्वारि पर ठाढ़ मैथिली कविताक एक स्पष्ट चिन्तना थिक ।

'जाउ हे युद्ध जर्जर शताब्दी' मे वर्त्तमान शताब्दीक प्रति कवि जीवकान्तक उपालम्भ अछि । खौंझाहटि अछि । अकछायल मानसिकताक परिचय दैत अछि । किन्तु अबैवला युगक प्रति निराशा नहि अछि । खाँड़ो मे आबि लिखैत छथि–

'नीम चमेलीक गाछ मे लुबुधल अछि फूल
बीच नरक मे अछि एक फांक स्वर्ग
एहि गाछ लग फोलल जा सकैछ आँखि
खोलल जा सकैछ नाक ।'

नीम आ चमेलीक लुबुधि फुलाएब-सौन्दर्यक सृष्टि थिक । सौन्दर्यक सृष्टि सर्जनात्मकताक द्योतक थिक । सर्जनाशील होएब अथवा एहन परिवेशक निर्माण मे अपन सार्थक आ सक्रिय योगदान करब जे आँखि आ नाक खोलबा लेल प्रेरित करैत रहैक, आशाक किरिन फूटब थिक ।

'खता-खुती मे बचल छैक थोड़ेक थाल
थोड़ेक पानि
शकुन्ती पारने छैक मडुआक बीया
जेठक सूर्य ठरैत छैक बैर मे

उघैत छैक खत्ताक पानि बसनी मे
भिजबैत छैक विरारकेँ
छलकैत छैक पानि
खसैत छैक गरदनि आ पीठ पर
नीक लगैत छैक पानिक स्पर्श
जेठक तबधल रेह मे
उँच होअए दहीक शकुन्तीकेँ
करय दहीक यत्न ।'

'खाँड़ो'क एहि कविता मे श्रम, सक्रियता आ आत्मविश्वासकेँ स्वर भेटल अछि । कीर्तिनारायणक 'गुज्ज अन्हरिया मे टोइया मारि-मारि चोरि गेल सुर्य केँ जोहैत'–एकैसम शताब्दीक द्वारि पर थाप दैत मैथिली कविता मे अभिव्यक्त भए रहल एही मानसिकताकेँ स्पष्ट करैत अछि । सम्पूर्ण शताब्दी युद्धक विमानक घर घर नाद सुनैत रहल, भूखल आ अभावग्रस्त, पीड़ित जनसमुदायक आर्तनाद सुनैत रहल । मनुष्य द्वारा मनुष्यक शोषण भोगैत रहल । जाति, धर्म, सम्प्रदाय भाषा आदिक नाम पर लोककेँ कटैत आ काटैत देखैत रहल । नेताक आश्वासन सँ घरक देवालकेँ मोटाइत देखलक । तथापि आजुक पीढ़ी निराश नहि, आत्मविश्वास पूर्वक उठाओल अ[illegible]ला धाप एकैसम शताब्दी केँ आंगन मे रखबा लेल प्रस्तुत अछि, धखाइत नहि अछि । ❑

कविता

विभूति आनन्द

बाँस

बाँस आदि अछि
सहचर अछि, साक्षी अछि
अंत अछि बाँस

कामनाक प्रतिरूप बनिक' फुलाइत अछि
इच्छाक बाढ़ि मे सदिखन हरिआइत अछि
समूह मे उगैत, अपन संस्कृति मे जीबैत अछि बाँस

छठिहारक बीयनि सँ महायात्राक अरथी धरि
मड़बाक बरेड़ी, चुमाओनक चंगेरा
हाथक लाठी आ पयरक दोसराइत अछि बाँस
मेहक खुट्टा सँ ढ़ाकी-छिट्टा धरि
भारक बहिंगा सँ टेंगारीक बेंट धरि
सुपती-मौनी सँ खरिका-सूप धरि
सर्वव्यापी अछि, अपरिहार्य अछि बाँस–
कहलनि बाबा । सोचलनि बाबी

जीवनक संगीत, जीवनक शाश्वत गीत गबैत
बाबी लिखलनि कोबर । बाबी लिखलनि बाँस
बाँस लिखलनि बाबी । वंश लिखलनि बाबी
महफासँ लक्ष्मी उतारि, पहिल डेग डालामे रखलनि
आ मोनक एकान्त मे दुनू परानी
बाँसुरीक स्वर सँ अनुगुंजित
जीवनक नाहकेँ लग्गा लऽ खेबैत गेलाह

बाँस प्रतीक भेल । बाँस अर्थ भेल
जाधरि शेष अछि मानवक अवस्थिति,

अपन संपूर्णताक संग बनल रहत बाँस
बाँसक एहि उदारता पर
सोचलनि बाबू । सोचलनि माँ

बाबा जकाँ बाँस रोपलनि बाबू
बाबी जकाँ बाँस भेलीह माँ
माँ लिखलनि कोबर । माँ लिखलनि बाँस
बाँस लिखलनि माँ । वंश लिखलनि माँ
बाबू सोचलनि बाँस । वंश सोचलनि बाबू
बाबू सोचलनि जहिना । माँ कयलनि तहिना
दुनू मे सँ क्यो नहि सोचलनि भवितव्य
दुनू मे सँ क्यो नहि लिखलनि भवितव्य

बाँस प्रतीक भेल । बाँस अर्थ भेल
अर्थ बदलल । आँखि बदलल
बाँस हँसैत अछि । उन्नत-किसिम गबैत अछि
रोग चतरैत अछि । देश सोचैत अछि–
बाँस गराड़ भ' गेल । बाँस भरार नहि भेल

बाँस अपना लग
ककरो पनपऽ देब' सँ परहेज कयलक
एहि क्रम मे क्यो-क्यो कंद भ' क' जील
एहि क्रम मे क्यो-क्यो मंद भ' क' जील

बाँसक अर्थ बदलल । वंशक दृष्टिकोण बदलल
मुदा ताहि सँ पहिने
बाँस ध्वजा भ' गेल । बाँस धर्म भ' गेल
धर्म मे तर्क नहि होइछ । बाँस मे 'बस' नहि होइछ

कहलनि बाबू–
अहाँक बेटा बंगट बड़ बढ़ अछि
सदिखन तर्कक छौंकी लेन्नहि घुरैत अछि
बीट पर माटि चढ़बैत काल, कहलक एक दिन–
बाबा, बंसफूल देखने छिऐ ?
लोक एकरा मादे किए ने सोचैए !

बंगट हमरे माटिक कोपड़ थिक
हम बाबू-मोनक निरंतरता त्यागि-

बंगट - आँखिक छीप पर स्वातीक बुन्द बनि जाइत छी
ओ वंश-लोचन भ' जाइत अछि

पत्नी-मोनक रंग

एखन भोर नहि भेल अछि
ओ अपन एकान्त मे बैसलि
ऊनक लच्छी केँ गोलिया रहलि छथि
सोझरयबाक क्रममे
बेर-बेर ओझरा जाइत छनि लच्छी
छोर नहि पकड़ा रहल छनि

नस-नस मे दर्द छनि
घोकचि रहल छनि ललाटक चाम
खौंझ बढ़ल जा रहल छनि
सोझरबैत छथि । ओझरा जाइत छनि
बेर-बेर ई ऊनक लच्छी

एखन भोर नहि भेल अछि
कुहेस बढ़ल जा रहल अछि
ऊष्मा पराजित-सन भ' रहल छनि हुनकर
तथापि, थकैत नहि छनि एकाग्रता
थम्हैत नहि छनि तन्मयता
मोन घमायल जा रहल छनि
चंचल आ व्यस्त छनि नजरि

एखन भोर नहि भेल अछि
ऊनक लच्छी गोलिया रहल अछि
ई की ! ई की !

ओझरायल लच्छी सोझरा गेलनि
छोर पकड़ा गेलनि
एकटा सम्पूर्ण गोला बनि गेलनि लच्छी
मोनमे खुशी कूद' लगलनि अछि
उमंग मे फनैत
फेकलनि गोला क्षितिज दिस

भोर भऽ गेल अछि

अन्हरिया केँ चीरैत प्राची
अपन भीतर सँ टुह-टुह लाल गोला निकालब आरंभ क' देलक अछि

अपन सोह मे बुलैत ओ, ठाढ़ होब' लगलीह अछि
खोलक बाहर अयबाक चेष्टा मे
हुनकर मोनक ऊष्मा फुलाय लगलनि अछि

ई स्वप्न थिक, अथवा सत्य-
स्वेटर बुनैत
जाड़क विरूद्ध युद्धक तैयारी करैत
ओ सोचि रहलि छथि........

❑

केदार कानन

नेपथ्य मे

सोचैत छी
सोचैत रहैत छी
सोचिते रहैत छी
आखिर ई कोना संभव भेलैक
जे हमर सभ्यता आ संस्कृति धरिक
व्याख्या
हमरा सँ नीक जकाँ
वैह क' रहल अछि
ओ जे एखन
नेपथ्य मे अछि
आ आब ओ धीरे-धीरे
परदाक पाछाँ सँ
अकस्मात
दृश्य मे अवतरित होब' बला अछि
ओकर आयब
निश्चित छैक ओहिना
जेना प्रत्येक भोर
सुर्यक आगमन
हमरा सँ बेसी
ओ चीन्हि रहल अछि हमरा

ई तँ जुलूम थिक
अद्‌भुत आ विलक्षण
मुदा ई सत्य थिक
यैह सत्य थिक जे ओ ठीके
पसारि लेलक अछि अपन चद्दरि
हमरा-अहाँक ओछाइन पर
ओ कहैत अछि
व्यर्थ थिक आब
पहिने जकाँ गृहिणीक पेड़ाइत रहब
दिन-राति
चूल्हि लग छनर-मनर करैत रहब
ओ सद्यः तैयार माल
परसि रहल अछि सभक आगाँ
सजमनि आ तिलकोरक तरूआ
अरिकोंचक चक्का
आ पिठार
आब पोलीपैक मे
भ' रहल अछि तैयार

कोनो तरद्दुत नहि करबाक अछि आब
निश्चिन्त भ' जाइ हम सभ
ओ अख्यासि रहल अछि
हमरा सभकेँ लगातार
कतोक बर्खं सँ
बहुत समधानि क'
हमर सभक एक-एक तौर-तरीका
एक-एक डेगक बारे मे
हमरा सँ बेसी बूझल छैक ओकरा
ओ धीरे-धीरे
हमर सभक सभ्यता-संस्कृति
बुद्धि-विवेक केँ नष्ट करबाक
बहुत मेंही
योजना मे रत अछि

सोचैत छी
सोचैत रहैत छी
सोचिते रहि जाइत छी हम
जे जीवन कोना भ' सकैत अछि
आब शुद्ध गमैया ?

नियति

एखने-एखने बहरायल अछि
रंग-बिरंगक बगुला सभ
टोपी-अचकनक संग

आब ई बगुला सभ
पसरि जायत यत्र-तत्र
बांटत अनेक आश्वासन
सौंसे सम्पत्ति आ वैभवकेँ
लुटा देबाक
करत डपोरशंखी घोषणा
जनता भेल अछि माछ
डरें नुकायल अछि
कखनो एहि चर-चांचर मे
कखनो ओहि पोखरि मे
मुदा कतय पड़ायब
चारुकात सँ घेरल-बेढ़ल
एहि पोखरि मे सँ ?

यैह लिअ'
उतरि गेल अछि
रंग-बिरंगी बगुला सभ
पसरि गेल चौबगली

फँसब प्रत्येक बेर
नियति थिक जनताक
हे जनता-जनार्दन !
तोरा मे मात्र

रहि गेल छह जनता
बड्ड कौशल सँ
गायब क' देल गेल छह
जनार्दन !

रमण कुमार सिंह

जा धरि बाँचल रहत नेना

पृथ्वीक गति मे नुकायल अछि
दिन आ राति
चिड़ैक पांखि मे नुकायल अछि
उँच, बहुत ऊँच उड़बाक संकल्प
गाछक हरियरी मे नुकायल अछि
रंग-बिरंगक फूल, फर आ सुगन्धि
माछक प्रकृति मे होइत छैक
धारक विरूद्ध चलबाक शक्ति
जेना नुकायल छल एकटा महाकाव्य
क्रौंचक करुण विलाप मे
तहिना, बाँचल रहैत छैक
बहुत रास सपना
एकटा नेनाक आँखि मे
जा धरि बाँचल रहत एहि धरती पर
एक्कोटा नेना
खतम नहि होयत
संसारक कोमलता
आ सुन्दर, सुखद भविष्यक
सपना

कने टा श्रम.....

कनेटा श्रम कयला सँ
बदलल जा सकैत अछि बहुत किछु
जेना
मिझायल दीप कें बारल जा सकैछ

एकटा सलाह नेसला सँ
धरती के बनायल जा सकैछ हरियर
कनैत नेनाके कनेटा दुलारि के
बनाओल जा सकैछ देशक सभ्य नागरिक
बचायल जा सकैछ संसारक
नीक-नीक चीज कनेटा श्रम कयला सँ

दिनकर कुमार

साम्प्रदायिकता

ई हमर पूजागृह छी
ई तोहर पूजागृह छियौ
ई ओकर पूजागृह छियै
ई हमर देवता छथि
ई तोहर देवता छथून्ह
ई ओकर देवता छथीन्ह
मात्र हमर सभक भूख एकेटा अछि

स्पर्श

हम छू क' देखैत छी हथियार
हम छू क' देखैत छी देशप्रेम

हम छू क' देखैत छी दरिद्रताक रेखा
हम छू क' देखैत छी गांधीवाद

हम छू क' देखैत छी विकासक प्रचार पोथी
हम छू क' देखैत छी नवतुरिया सभक हताशा

छूला सँ ओओर बढ़ैत अछि विरोधाभास

कथा–१

उषा किरण खान

अजनास

असुआएल भाटा सन मुँह आ कदीमा सन पेट डोलबैत आबि क' बैसलखिन पहद्दीबाली, मन्त्रीजीक लोक । तीस बरिस सँ सत्ताक स्वाद चाखैत आबहु ओ कुर्सी पर बैसए मे असौकर्य अनुभव करैत छथि से धम्म द' पलंग पर जा बैसली । गारल आम सन चोखटल मुँह आ मटकूरी सन पेट बला मन्त्रीजी अपना धांतीक सांची हाथ सँ पकड़ने चिन्तित मुद्रा मे कोठरी मे एम्हर सँ ओम्हर टौआइ छलाह । पत्नीक धमक सुनि स्थिर भेलाह । पड़घ ऊँच पलंगक रंगाइ-पोताइ हालहि मे भेल छलैक। ई पलंग मन्त्रीजीक सासुरक छनि । दू दिस सँ मोर-मजूर आ बीच मे ऐना लागल; पौथाना दिस सेहो लत्ती-फत्ती आ चिड़इ चुनमुनीक दृश्य खोधल छलैक । ई हिनका कनियाँक मामा अजोधीबाबू खगड़िया सँ बनबाक' पठौने रहथिन । धनबीत मे मन्त्रीजी कोनो कम नहिं रहथि, हुनकर परिवार अदौ धनिक । समाराज रहैक तखन बाइस टा हर बहैन मुदा अइ इलाकाक मोटचालि छलैक । सोना-चानी आ जर-जमीन के कमी नहि रहैक मुदा ऐशन-फैसन नहि रहैक । पक्का बला घर नहि रहैक पहिने, कोसिकन्हा मे भइये नहि सकैत रहैक । खेत पर स्त्रीगण जाइक । जन सङे मूंग तोड़ैक, खेसारीक बोझ गछारिक' अनैक । बेटी-डाँटी अपन अपन आँटी अपनहिं ओकाति भरि काटि माथ पर ल' क' खरिहान अबैक । खूब गतगर गोनरि ओछाक' निभेर निन्न सुतैक। कोच पलंग कहाँ रहैक । टूटा बड़की चौकी दलान पर रहैक से पहद्दीबाली जखन दुरागमन क' क' अएलखिन तखन लोक कनियाँ सँ बेसी कोच देखए जूम' लागलै। गाम गमाति सोरहो भ' गेल छलैक जे फल्लां गाम मे फल्लां गामक कनियाँ कें कोच अइलनि अछि । आ इलाका मे एकटा नबका चलनि शुरूह भ' गेलै । शहादत मियाँक बेगम कहलखिन,–'गौने पर छौंड़ी के एहीनती न भेजहू, पहिने कोच बनाहू । कहू त' हमरा से दुब्बर घर के जनानी कोच पर सूतियो हए आ हम्मर बिटिया सतरंजी पर।'

शहादत मियाँ के अपनो सएह विचार छलनि मुदा घरनीकेँ मान दैत बजलखिन–'आब ई कहती है त' हम कहियो है परमेसर कमार से, देख आबे जाके मरड़के गाम जाके आ वैसेही उतार के बना देबे ।'

–'टालहू न ।' वेगम छलथि ।

–'धुरतोरी के बुरबक जनाना, कहियो है तो बुझबे ने करै है ।' अहिना अगल-बगल के सभ सेसर लोक अपना-अपना बेंटी लए आब कोच-पलंग बनबाब' लागलाह । ताहि पलंगक सीसा बहुत मलिन भ' गेल छलनि ।

मुदा पालिस सँ पलंग चमकै छलनि । भारी शोलापुरी चद्दरि ओछाओल छलनि। मन्त्रीजी आ मलिकाइन जखन आबै छलखिन तँ जेनरेटर चलैक । गाम तक बिजुरीक लाइन रहला सँ की, कखनहुँ की दर्शन होइ छै ? से जेनरेटरक फटफट गुंजायमान होम' लागै त' लोक बुझै मन्त्रीजी किंवा मलिकाइन आएल होइथिन । एम्हर मन्त्रीजी चुप्पेचाप गाम आबि जाइ छलखिन । समस्ये तेहेन भ' गेल छलनि ।

त' मन्त्रीजी साकांक्ष भेलाह । जेनरेटरक स्वरक संगे कने दूर पर मचान तर बैसल गामक गमाइत लोकनिक झालि मृदंग सुनि पड़ैत रहैक । तखनहिं झालिक स्वर कम भेलैक आ ग'र खखसि क' सुरजा जोर सँ कवित्त गाब' लागल–

धार छलै उतफाल, जैं तैं कोसिका कोड़ने जाइ छल
बनाले छलि काल । ताहि अवसर ध्यान देसकें

घोड़ा पर आएल एक असवार–

असवार के ? जोर सँ समवेत स्वर
नौ गज देह आ छौ गज सीना
ओ छल रन्नू सरदार !

–फेर झालि मृंदग ।

–'ई सभ त' बारह-एक बजे राति तक अहिना हल्ला करैत रहत ।' पहद्दीबालीक खौंझाहटि ।

–'की करबैक, इयेह त' संस्कृति छैक अपना सभक।' विद्वान आ सांस्कृतिक होयबाक दाबा ठोकनाहर मन्त्रीजी बजलाह । कुर्सी घसकाक' पलंग लग अनलनि आ कनियाँ सँ खानगी पुछलथिन–'की छौंड़ी तैयार भेल ? की कहलक ?

–'नहि भेल तइयार । हमर कोनो गप्प नहि बुझइत अछि । अहीं कहियौ ।'

–'की कहियौ ? ओ त' भेंटे नहि दैत अछि ।'

–'कनेकाल भेलैक ओ आएल अछि। गामे–गाम घुरैत रहैत अछि। हम पन्द्रह दिन सँ अइठाम ओकरा सँ गप्प करय लेल बैसल छियइ आ ओ गैंचा माछ जकाँ हाथ सँ संसरि जाइत अछि.।'

–'हूँ, तखन काल्हि भोरे हम ओकरा सँ फाइनल गप्प क' लेब। एखन थाकल–ठहिआएल होयत सूतय दियउ। करबे की करब।'' पत्नी कहलखिन आ दूनू गुम्म बैसल रहलाह। वातावरण मे रन्नू सरदारक कथा आ जेनरेटरक फट्फट् संगे व्याप्त छलैक।

मन्त्रीजी केँ जेना होइ छै, जखन पढ़िते छलाह तखनहिं वियाह दुरागमन भेल छलनि। यावत ओ एम. ए. पी. एच.डी.क' नोकरी करए गेलाह तावत तीनटा कन्या रत्नक प्राप्ति भ' गेल छलनि। एतेक बेसी पढ़ल आ डिग्रीधारी अइ इलाकाक अइ समाज मे मन्त्रीजी पहिल विद्यार्थी छलाह। तैं विशिष्ट त' छलाहे। कॉलेज मे प्रोफेसरी त' धएले छलनि से भेटलनि आ ओम्हर सासुर मे पुत्र–कामनाक यज्ञ–जाप से होमए लगलनि। यज्ञ–जाप मे ताइ दिन मे मन्त्रीजीकेँ विचारधाराक कारणें रूचि नहि छलनि मुदा पुत्रकामना अवश्य छलनि। ओम्हर यज्ञ होइत छलैक आ एम्हर शुद्ध जीव वैज्ञानिक कारणें चारिम बेटी धरती पर आबि तुलएली। 'मार बाढ़नि'–नानी कहलखिन आ छौंड़ीक नाम बढ़नियाँ पड़ि गेलैक। एम्हर बढ़नियाँक जन्म आ ओम्हर आम चुनाव, प्रोफेसर साहेब एमेल्ले भ' गेलाह। 'गे दाइ, ई त' हमर अजनास अछि।' दादी भरि कोरक' पोतीके लेलखिन आ बढ़नियाँक पैतृक नाम भ' गेलनि अजनास। अजनास दुधकट्टू भ' गेलीह मुदा पीठ चेकी भरि गूड़ सँ पूजल गेलनि किएक त' हीरा प्रसादक जन्म भ' गेलनि जखन ई मात्र डेढ़ बरिसक रहथि।

एमेल्ले साहेब अपना क्वार्टर मे पहद्दीबाली केँ पुत्र सहित आ दू टा जेठकी बचिया के विद्यालय मे पढ़य वास्ते ल' गेल छलखिन। तेतरी आ अजनास गामे मे रहली। अजनास सभ सँ सुन्नरि आ स्वस्थ नेन्ना रहथि। माए–बाप सँ अलग पाँच हाथक नाम–चाकरि, बलिष्ट आ पनिगर। किछु दिनुका बाद मन्त्रीजी के भाग चरचरओलनि आ सहज टूट–फूट दल बदलक झोंक मे ओ मन्त्री भ' गेलाह। से सिलसिला आइ धरि नहि टूटल छनि। जौं कहियो कहियो हारिक मुँह देखबो केलनि त' मनोनीत भ' कुरसी नहिं त' कुरसीक हत्था पर बैसल रहलाह। हुनकर उन्नति सब प्रकारें भेलनि। भाट–चारण केर कमी नहि, सरस्वती आ लक्ष्मी स्वयं आरती उतारैत रहथिन।

तेतरी आ अजनासकेँ ओ अपना लग आनि सुन्दर साहित्यिक नामकरणक' स्कूल मे पहुँचा देलखिन। स्कूल मे होस्टल छलैक आ क्रिश्चियन मिशनरीक द्वारा ओ चलाओल

जाइत छलैक। मन्त्रीजीकेँ मोन भेल छलनि जे बेटी अंगरेजी सिखए मुदा ई लोकनि मैथिली छाड़ि किच्छ ने जानए। बूझू जे फुदना नामक एकटा मेसक नोकर छलैक जे दुभाषियाक काज करय। मैथिली सँ छौंड़ी सभ हिन्दीक राजमार्ग पर पएर धएलक। आब जखन अंग्रेजीक कक्षमे प्रवेश करक समय अएलै त' बड़ा दिनुका तातील जे पूस मे पड़ैत अछि छौंड़ी सभ गाम गेलैक। तेतरी घुरिक' अएलै मुदा अजनास किन्नहुँ नहि अएलै। हाक्रोसक' कानय लगलै। जखन समदिया सभ सँ नहि भेलनि, पहद्दी बाली सेहो हारि गेलीह, त' स्वयं मन्त्रीजी गेलाह। कतबो बुझएला पर बेटी नहि मानलकै। माए कहलखिन–'जाए दहक, अहीठाम स्कूल मे पढ़तैक ठेकनगर हेतैक त' ल' जइहक।' माएक आग्रह पर मन्त्रीजी मानि गेलखिन आ अजनास केँ छोड़ि देलखिन। अजनास स्कूल जाए मे कहियो पाछाँ नहि रहथि। माए–बहीन सँ भेंट करए कहियो–कहियो नगर दिस सेहो जाथि आ नगर दिस सँ ओ लोकनि सेहो आबथिन। अजनास अपना दियादक आन छौंड़ी सभ जकाँ जीवन बना नेने छलखिन। सिताएल खेसारीक साग खोंटब ओकर झक्का बनाएब, धनखेतीक स्वयं भ्रमण, अपन आंटी भरि पांज बान्हि माथ पर आनब–सभ करथि। दादी आ आन पितियाइन सभ हुनका बरजबो करथिन–'हे अहाँ ओतेक बड़का लोकक बेटी भेलहुँ अपने किएक ई सभ करै छी'–मुदा अजनास मानबे ने करथिन। नीक आ शहरी हिसाब सँ सेट्ल ब'र देखबाक कारणें अजनासक जेठकी बहिन सभक बियाह मे सेहो देरी भेलनि। आ अइ बीच मे ई स्कूल पास क' लेलनि।

गामे–गामे ग्रामीण विकासक प्रकाश होअ' ताहि लेल सरकारी आ गैर सरकारी संस्था सभ सक्रिय रहैक। एकटा एहने कार्यक्रमक उद्घाटन मे मन्त्रीजी मुख्यमंत्रीजी केँ आनबा मे सफल भ' गेल छलाह। मुख्यमंत्रीजी केँ अएला सँ मन्त्रीजीक प्रतिष्ठा बढ़लनि। एम्हर हल्ला छलैक जे मन्त्रीजीक महत्वाकांक्षा आ सीनियर भेलाक अहंकारक प्रदर्शनक कारण मुख्यमंत्रीजी तमसाएल छलखिन से ओ अपना असुआएल भाटा सन घरनी के कहने छलखिन–

'–ई चीफ मिनिस्टरबा बिन हूरल खाम्ह अछि कहिया दूधक माछी बनाक' फेकि देत से नहि कहि।'

–'कहइ छी जे जकरा तकरा लग किछु ने बाजू त' अहाँ फटर–फटर बजिते

रहै छी । मन्त्रियो ने रहब त' इज्जति रहत ! आब मुँह की तकै छी अपनहिं जइयौ आ कोनो परोगराम गाम दिसक कए दियउ।'

–'ठीके कहइ छी ।' मन्त्रीजी निर्णयक' लेलनि जे स्वयं जाइथ आ अपना गाम मे कोनो कार्यक्रम राखि चलबाक अनुनय विनय करथि । हुनकर योजना सफल रहलनि। दुनूकेँ दुनूक काज छलैन । मुख्यमंत्रीजी गामक सभा मे साक्षरता प्रचार-प्रसार आ स्वास्थ्य शिक्षाक आवश्यकता पर भाषण देलखिन आ अपना लोकरंजक स्वभावक अनुकूल पूछि बैसलखिन जे 'गामक स्त्रीगण जे पढ़ल-लिखल छथि से आगू आबथि आ अहि महायज्ञ मे हिस्सेदारी करथि । से के अओतीह हाथ उठाबथु ।''

अजनास सोंझा आबिक' ठाढ़ि भ' गेलखिन । सभ चौंकलै । मुख्यमंत्रीजी चाबसी देलखिन । ओकरा पाछां आर चारिटा छौड़ी ठाढ़ि भेलि । मंत्रीजी मूड़ी गोंति लेलखिन। मुख्यमंत्रीजी लक्ष्य केलखिन ।

–'की बात छइक ?

–'ई हमर कन्या थिक ।' सायास हँसलाह मन्त्रीजी ।

–'अहा...हा.., ई त' बड़ पैघ काज । अहाँके बधाइ जे अपना बेटीके एहन प्रशिक्षण देलहुँ अछि । अइ मे माथ निहुराक' किएक बैसल छी, ई त' मस्तक ऊँच करक गप्प अछि । मंत्रीजी दाँत निपोरि देलनि कहुना । सभटा समारोह निर्विध्न सम्पन्न भ गेल छलैक मुख्यमंत्रीजी प्रसन्न भ' क' विदा भेल छलाह । हुनके संगे मंत्रीजी सेहो विदा भेलाह । बाकी लश्कर मन्त्राणीजीक संगे एलै । अजनास केँ माए फेर कहलखिन।

'–चल राजधानी । किछु दिन रहिहें, माए-बाप लग रहक मोन नइं होइ छौ? कतेक दिन पर भेंट होइत अछि । बियाह-दान होएतहु त' सासुरे बसए लागबें । चल ।'

–'नहिं, हमरा राजधानी मे नीक नहि लागैत अछि । तोरा लोकनि केँ हमरो सँ आ अपना क्षेत्रों सँ भेंट-घाँट करए मासे-मास आबए चाहियौ । आ हे, सुन, अपना मोने चट् बियाह नहि ठीक करिहें । हम बियाह नहि करब ।'

–'आ धुर बताहि ।' माए स्नेह सँ कहलकै आ बेटीक शरीर सौष्ठव के निङ्हारैत चल गेली । पाँचो संतान मे कहाँ कियो छनि एहेन सुरूपवान । रोलल देह, मोम संग रंग आ चिड़इ सन छहछही । ई सभ गाम-घरक शुद्ध हवा आ महीसक छल्हिगर दूध दहीक प्रतापे छैक ।

मन्त्रीजी केँ राजधानी पहुँचितं मुख्यमंत्रीजीक अन्दर हवेली सँ सपत्नीक भोजन लेल आग्रह भेलनि । अइ प्रकारक आग्रह हिनका पहिल बेर भेटल छलनि । कहू त', किएक बजौलक हिनका मोन भालरि जकाँ डोलि उठलनि । पहद्दीवाली मुदा छथि जब्बर नारि । ओ कहलखिन औ, अपने बड़ा साहेब गाम गेल छलाह, आम-खास देखलनि, स्वागत सत्कार भेलनि मेम साहेबक दुलरूआ भाइ सेहो छल तकरे फेरा-पालट ले बजौने हेताह आर की ?'–जे होउक ई दुनू प्राणी गेलनि भोजन पर । भोजन भाव भेल । मुख्यमंत्री दुनू बेकति अपनैती संगें बैसलाह आ हिनका सभ सँ कहय लागलखिन।

–'दीदी जे अपनेक जे कन्या गाम मे छथि तकरा हमर छोट भाए पसिन्न क' लेलकनि अछि से कत्तहु आन ठाम बर नहि देखथु ।' मन्त्री जी आ पहद्दीबाली केँ कान पर जेना जानकी एक्सप्रेस चलए लागलनि । विश्वासे ने भेलनि जे की ई सत्त कहइ छथि ? हुनका सभक भकुआ मुँह देखि मुख्यमंत्री जी बजलाह;

–'अहीं सभ जकाँ हिनकर भाइ सभ सेहो अदौ धनिक । बूझू जे बरोबरिमे कुटमैती हयत । बी.ए.पास केने अछि उचित लाल आ समाजिक काज मे मोन लगै छै ।अहूँक बेटी सएह छथि तैं जोड़ी नीक रहत ।'

–'अहाँ हमरा आर नइं लजाबी । अहाँक प्रस्ताव हम मुकुट जकाँ धारण कएल ।' मंत्रीजी गद्गद् छलाह । फेर-फेर मुँह मीठ कएल गेल ।

मुदा आब ? आब की ? ई अजनास त' ठीके भ' गेल अजनासक पुड़िया। कहलकनि तीन डरीर पाड़िक,–'हम बियाह करबे ने करब ।'

–'किएक बेटा ? किएक ने करबह बियाह ? सबकक बेटी सासुर जाइत छैक। सब बाप कन्यादान.....।'

–'नाइ, देखियौ सीरपूरक कतेक ब्राह्मणी पैंतीस वर्षक भ' गेलैक अछि । रामनगरक गोआरि गोर दसेक बियाहल त' छैक मुदा जैतुकक वास्ते गौना नहि भ' गेल छैक । बुधनगराक कएक टा रजिपुतनी आ कैथिन कुमारि, परित्यक्ता आ विधवा अछि । ककरो कोनो काज रोजगार नहि छैक, ओ लोकनि अन्न-वस्त्र लय कलपै छै । अहाँ ओकरा सभ लए किएक ने कोनो इन्तजाम करै छियइ ? कतेक छौंड़ी के त' बापो पित्ती नहि छै । बाबूजी अहाँ किएक ने ओकर बाप बनि जाइ छियइ । ओ सभ अहाँक भोटर अछि '

–'बेटी, हम किछु ने किछु अवश्य करबै । आ हे, तों बियाह क' क' हमरा ओकरा सभक समस्या एक-एक क' सुनबियह' हम समाधान करबै ।'

–'बाबूजी, हमरा संगे राजनीति नहि करू । हम अहाँक कहला मे नहि आएब।'' हादी काकीक बुझओलो सँ ओ नहि मानल । माए कएक बेर अयलीह । कम सँ कम पटना त' चलओ । मुदा माए जखन अबैक त' ओ साक्षरता मिशनक काज सँ घुरबे ने करए । कोनो आन गाम मे राति बितब' लागल ।

–'आब की करब ? ई त' मानिते नहि अछि ।'

–की कए सकैछी ? छौंड़ी पकठोसल भ' गेलै मानिते ने अछि । जोर जबरदस्ती सँ की सुनत ? ओम्हरो सँ गेलौं । की कहता मुख्यमन्त्रीजी । हमरा बुझने तेतरीक कथा करा दियौक ओत्तय ।'' कनियाँ बुझेलखिन ।

–'ऐं ? ''–सोच मे पड़ि गेलाह मन्त्रीजी । अजेय, अभिमानी मन्त्रीजी ।

'ऐंऽऽऽ कोसिका भेलै उत्फाल,
हहाएल फुहाएल गामक गाम
उजाड़ने गेलै । घरक घर
खसाओने गेलै । गाछ बिरिछ
उपाड़ने गेलै । कोठा सोफा
मेटने गेलै यौ–
रन्नू सरदार.......।'

कोसिकाक धारक कात मे प्रलोभन जकाँ ठाढ़ छलैक अजेय अहंकारी रन्नू सरदार। कोसिका किएक उत्फाल ? कुमारि छैक तैं ।

'नौ गड़ी सिन्नुर हे कोसिका
देलियह उझिलि हए
कोसिका तोरा सँय
कएलिय' बियाह हए ।'

रन्नू नौ गाड़ी सिन्नुर खसा धारके बान्हि देलकइ । ऐं ई मजाल ! सिन्नुरक

बोरा खसा हमरा बियाहि लेत ? धार मे जेना कोदारिक सान चढ़ि गेलै, धरती-पिरथी एक क' देलकइ कोसिका । बोराक बोरा सिन्नुर तामसक फेन संग कतबइक बालु पर फेकि देलकइ । आइयौ कासक जड़ि मे ओ ललका सिन्नुर सटल छैक । रन्नू अपन सन मुँह लए घुरलाह ठामहि । कोसिका कुमारिये छथि ।

–'बाबूजी, अहाँ हमरा दिक नइं करू । हम अहाँके आ अहाँक प्रलोभन के चिन्है छी । हमरा चुप्पे रह' दिय' नहि त' गामे-गाम अहाँक खिस्सा पसारि देब । अहाँ पर कहियो हम भार नहि छलहुँ ने रहब । जाउ ।' अजनास कहने छलि । अजनास कोसिका भ' गेलै बापक अहंकार रूपी धनखेती पर हरहराइत जल जकाँ पसरि गेलै, मुख्यमंत्रीजीक भविष्णु सारक प्रलोभनक आग्रह केँ पाकड़ि गाछ सन जड़ि सँ उपाड़ि देलकै । माएक कानब सन चार परक लत्ती-फत्ती केँ अपना संग बहा ल' गेलै ।

आधा राति बीति गेलइ । झालि मिरदंग बला सभ अन्तिम टाहि देलकै कोसिकाक गोहार मे । रन्नू सरदार अपन श्यामकर्ण घोड़ा संगे घूरि गेल छलाह । कथा आब भजन पर चल आएल छलैक–

'पार दियउ ने उतारि मैया कोसिका...।'

मंत्रीजीक आँखि मे नीन्न कहाँ छलनि । हुनकर आसन डोलै छलनि । कहू, एक त' लड़काबला भ' स्वयं हाथ मँगलनि बेटी के आ इम्हर ई रकन्ना लगौने अछि। कोन ठेकान, कोसी कातक अललाही गोपी भ' गेल छौंड़ी; जोर-जबरदस्ती करबै त' अगिला आम चुनाव ने गड़बड़ा दिअए ।

ओम्हर झालि मिरदंग झप्प द' बैसलै एम्हर मन्त्रीजीक आँखि अन्हराए लगलनि। ओ कटल पाकड़ि जकाँ कोच पर धम्म द' खसलाह ।



मैथिल समाज रहिका द्वारा 'किरण' आ यात्री पुरस्कार सँ सम्मानित होयबाक लेल मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाज आ कवि विनोदानन्द ठाकुर केँ वधाई ।

कथा–२

विभा रानी

रहथु साक्षी छठ घाट

'कौआँहकनी' कथा सँ अपन परिचय स्थापित करएवाली मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार त्रिभारानीक हेबनि मे कथा-संग्रह आयल अछि-खोह सँ निकसइत । मैथिली पाठक केँ विभाक कथा-संग्रहक बहुत दिन सँ प्रतीक्षा छल। से मनोकामना पूर्ण भेल अछि ।

'खोह सँ निकसइत' संग्रहक कथा सभकेँ पढ़ैत पाठक केँ मिथिलाक सामान्य जन जीवनक सुख-दुख,नेह-छोह सँ सरोकार स्थापित भ' जाइत छैक। लोक-भूमि सँ उठाओल विभाक कथा भाषा पाठक के सहजहिं स्पर्श केने चल जाइत अछि । विभारानीक कथा पढ़ब अपन घर-आंगन, लगपासक समाज आ माए-बहीन के चिन्हब थिक । जेकर मिथिला समाज मे अखनहुँ पुरूषवर्ग मे अभाव अछिये ।

विभारानीक कथा मे स्त्रीक संघर्ष, जीजीविषा अद्भुत रूपें अभिव्यक्त होइत अछि । संगहि स्त्रीक त्याग, ममत्व, उदारता सेहो प्रगट होइत अछि । विभाक स्त्रीपात्र 'नारी स्वतंत्रता'क देखाउँस मे अपन नकली परिचय स्थापित करैत नहि देखाइत छथि अपितु अपन संघर्षशील जीवनक माध्यमे स्नेह सँ लबालब भरल व्यक्तित्व अर्जित करैत बुझाइत छथि । स्त्रीक ई व्यक्तित्व ओकर क्रियाशील आ परिश्रमी जीवन पर आधारित अछि ।

विभाक ध्यान एम्हर मिथिला समाज मे विभिन्न पावनि-तिहार, रीति-व्यवहार, मनोकामना-कबुला-पाती आ पौरूषक अहंकार मे फँसल आ दुर्दशा भोगैत स्त्रीक अनवरत चलैत शोषण दिस गेल अछि । प्रस्तुत कथा मे विभाक शिल्प देखबा जोगर अछि । जाहि मे रसन चौकी आ ढ़ोल-पिपही क आसमदं करैत स्वरक बीच अवोध स्त्रीक अव्यक्त रूदन हृदय के वेधि दैत अछि ।–सम्पादक

''रौ बाप रौ बाप । भोला रामचन्नर केर घर मे त' डकैती पड़ि गेलै । किछु नञि रहलै आब ओकरा आउरक जीवन मे हादैव । एहेन दिन त' किओ दुश्मनों के नहि देखाबय । कहू त' भला । इएह दस दिन पहिने त' सभ किओ छठ घाट पर मौजूद छल--आने आन साल जकाँ–भोला, रामचन्नर, दुनूक घरवाली गौरी आ गायत्री, दुनूकेर तरेगन सनक बेटा सभक मध्य चान जकाँ चमकैत मुनिया । लाल बनारसी साड़ी आ टीका-नथिया सँ 'ल' क' सीताहार, डँड़कस, पाजेब धरि सँ भरल वा कही त' लदफादएल वाल शरीर । लाल चोटी संग बान्हल बड़का खोंपा आ जुट्टा माँग । बारह तेरह वर्षीया मुनियाक देह पर एतेक भारी साज सिंगार कखनो असहज लागै त' कखनो अत्यन्त सुमधुर बालबधू-आमक नव पल्लव जकाँ--कोमल, सुचिक्कन ।

भरि मोहल्ला के कहय, पूरा के पूरा गामे ओम्हर दौगल जा रहल छल–हदासल, पियासल । एह ! एतेक बड़का अनर्थ ! अंगना आ दलान दुनू जनीजात आ मरद मानुस सँ ठकचाएल छल, भरि गामक रोड विधवाक सिउथ जकाँ सून छल, जँ किओ देखाइयो जाए त' ओकर गन्तव्य एकहिठाँ छल । भोला आ रामचन्नर के दाँती पर दाँती लागि रहल छलै । लोक आओर जाधरि एक भाइ के दाँती छोड़ाबथि, ताधरि दोसर भाइके लागि जाए । जकरा पलखतियो लेल होश हुअए, ओ ''हा देब !'' कहि क' दुनू हाथ जोर सँ छाती पर मारि बेहोश भ' जाइत छलाह ।

अंगनाक हाल त' आओरो बेहाल छल । भोलाक घरबाली बताहि जकाँ अपने हाथे अपना केश नोचि रहल छली–''रौ मुदइया रौ मुदइया ! रे, हमर सबके एको दिन के हँसी तोरा से देखल नहि गेलौ रे मुदइया । आ तू हमरा ल'ग मे । जरती लुआठी सँ नई दागि देलियौ त' हम अपना बापक बेटी नहि !'' अधपगली भेल ओ मुदइया माने दैब माने बिधाता के गरिया रहल छली । छाती पीटि रहल छली ।

दोसर कोठरी मे रामचन्नर केर घरबाली छली । जनीजात सभ ओकरो घेरने छल । ओ तेना ने गुम्म छल जेना ओकर मतिए हेरा गेल हुअए । कनेकाल गुम्म बैसल रहय, फेर तेना ने धड़फड़ाक' उठय जेना कतहु जाएब बिसरि गेल हुअए–''बाप रे बाप। हमरा जाए दे, हमरा जाय दे, हमरा...कहैत-कहैत स्वर मद्धिम होइत-होइत बन्न भ' जाए जेना नींद लागि गेल हुअए ।

नेनपने सँ भोला-रामचन्नर अपना पिता केर काज मे मददि करय । पिता बाँस पर लगा क' फुकना, घिरनी, सीटी सभ बेचै छलाह–भरि शहर घूमि-घूमि क। साधारणत: हुनक व्यवसाय स्थल छल टीसन केर बाहर रिक्शा-स्टैंड ल'ग । ओत भरि दिन मे चारि बेर गाड़ी अबैत छल–दूटा अप, दूटा डाउन । अप सात बजे भिन्सर आ छओ बजे साँझ तथा डाउन नौ बजे भिन्सर आ एगारह बजे राति, ओ एगारह बजे बला

ट्रेनक बाट कहियो नय जोहैत छलाह । एक त' राति बहुत भ' जाइत छल दोसर ट्रेन सँ 'उतरिक' लोक रिक्शा-ताँगा क' क' अपना-अपना गंतव्य धरि पहुँचबाक फेराक मे लागल रहैत छल । तेसर नेन्नो सभ सूति रहैत छल । ककरो हुनकर समान कीन' के कहय, ने मोका लागय ने मोन । साल भर मे झूलन, जन्माष्टमी जकाँ पर्व पर लागल मेला-ठेला मे सेहो ओ अपन बाँस पर राखल दोकान नेने पहुँचि जाइत छलाह । तहिया बेसी बिक्री हुअए । भोला-रामचन्नर के बेसी काज कर' पड़य, बेसी फुकना फुलाब' पड़य बेसी घिरनी बनाब' पड़य । गुड्डी उड़ेबाक मौसम मे गुड्डी बनाबय, माझा कसय, माय एक गोट बकरी पोसने छल । पारा-पारी दुनू भाइ ओकरा चराबय ।''

दुनू भाइ के पढ़ै के बहुत मोन छल । स्कूल केर मास्साब रामनाथ बाबू कएक बेर दुनू के ल' क' क्लास मे बैसा देथि । मुदा, बेगर सिलेट, पेन्सिल आ पोथी के पढ़ाइ कोना संभव छल । बाउजीयो मोन रहितहु असमर्थ छलाह । तइयो बाउजी एतेक जरूर केने छलाह जे रामे-राम, रामे दू, रामे तीन सँ' ल' क' सयधरि गिनती, बीस धरि पहाड़ा सवैया, अढ़ैया, साधारण जोड़, घटाओ, गुणा, भाग काजक संगे-संगे सिखा देने रहथि । आ ई अल्प ज्ञाने सही, भोला-रामचन्नर लेल बड्ड सहायक भेल ।

धरती परक जोड़ घटाव मे सभ किओ माहिर भ' जाइत अछि । मनुष्य अईठाँ अपन गणित बैसाब' मे व्यस्त रहैत अछि, ओम्हर बिधना अपन । दुनूक संगति मिलि गेल त' बाह-बाह, वरना...।

सएह त' भेल छल भोला-रामचन्नर केर संग, बापक संग फुकना फुलबैत, घिरनी बनबैत, माझा कसैत ओ दुनू जवान भ' गेल । आब ई सभ काज मे मोन नञि लागय। बकरी बियाअल छल—तीन टा छागरि—चिक्कन, चुनमुन, नान्हि-नान्हिटा छागरि चलए त' बड्ड सोहनगर लागए । माय मनता मानने छल—दुनू बेटाक ठौर-ठेकान लागि जाएत त' अई मे सँ' एकटा छागरि भगवती के चढ़ा देबैन्हि;

''निमियाके डार मैया लागल हिडोलबा कि रून-झुनू,
मैया खेलेलैं शिकार कि रून-झुनू;

रामआसरा बाबूक किरानाक दोकान मे भोला लागि गेल आ रामचन्नर बलदेव बाबूक ''मिथिला वस्त्रालय'' मे । बाउजीक कमाई सँ, घर पहिनही जकाँ चलि रहल छल। मायकेर दुनू छागरि बिका गेल । तेसरो लेल दुनू भाइ जोर देल—''हमरा आओरक नीक ठेकान लागैत-लागैत त' ई बुढ़ा जेतौ । तहन किओ दुइयो टा पाइ नञि देतौ एकरा पर । दोसर छागरि आब' दही । फेर मनता पूरा क' लिहें । अखनिए कोनो जल्दी हई की ।''

माय छागरक पाइ सँ' एक जोड़ टीका गढ़बा लेल—दुनू पुतौहु लेल । दुनू भाइ अपना पगार सँ' आधा पाइ बाउजी के देइत छलाह । बाउजी सँ बरजोबरी ल' लेइत छल माय, पाइ जमा करैत-करैत अई बेर दूटा नथिया बनबा लेल ।

माय छठ करैत छल । दस दिन पहिनही सँ' भोला-रामचन्नर दूटा नव सूप मे एकरंगा राखि भिन्सरे सँ निकसि जाइत छल—छठकेर भीख लेल । मुख्य आधार इएह भीख सँ प्राप्त सामग्री होइत छल जकरा सँ अर्ध्य बनैत छल । अपना सामर्थ्य आन-आन वस्तु कीनिक' आनैत छलाह बाउजी । माय भगवतीक छागरि जकाँ छठ मैया के सेहो मनता मानने छल—सूप चढ़ेबाक-भोला-रामचन्नर अपना ठिये लागि जाए हे छठ मइया ।

दुनू भाइ लग किछु पूँजी जमा भ' गेल । दुनू अपन व्यवसाय शुरूकर' लेल सोचल । भोला किराना दोकान लेल प्रस्ताव कएल । रामचन्नर कपड़ाक दोकान मे छल । दोकान मारबाड़ीक छल—खूब पैघ रंग बिरंगक कपड़ा आ तकरा कीन' आब' बला रंग-बिरंगक लोक । गरीब गुरबा सँ' ल' क' शहर केर चेयरमैन साहेबक घरवाली आ बेटी सेहो । ओकरा आओर लेल दामी कपड़ा सभ देखबैत-देखबैत ओहो एहने कोनो दोकानक सपना देख' लागल छल । तैं भोलाक प्रस्ताव ओ नकारि देल—''नञि। हमरा आओर कपड़ाक दोकान खोलब !''

भोला तीनिए बरख जेठ छल । मुदा बेसी बुझनुक हँसय लागल—''रौ भाइ। एतबा पूँजी मे त' दस थान सँ बेसी कपड़ा नञि एतौ । कपड़ा-लत्ताक दोकान छजै छैक पैघ पूँजी सँ पैघ दोकान आ भरल माले गँहकी केँ आकृष्ट करै छै । लोग आध गज कीनत आ पचीस टा थान देखत । ई दस टा थान ल' क' बैसबै दलिद्दर जकाँ त' किओ मुंहो उठाक' नञि देखतौ । दोसर, कपड़ा रोज दिनुका जरूरत नञि छैक। एक बेर कीनल त' छओ मास लेल छुट्टी । किराना त' रोज दिनुका चीज छैक । किओ नून लेत त' किओ हरदि । कमो पूँजी मे धंधा नञि डूबत । दोकान खोल' दे । नफा खर्च नञि करब । पूँजी बढ़ाएब । पूँजी बढ़ा 'दोकान बढ़ाएब । आ एकबेर ई दोकान बढ़ि जएत त' तोरो कपड़ा बला दोकान खोलबाक जोगार भ' सकैत छौ। मुदा, एखनि त' किन्नहु नञि ।

मुनिया चुपचाप ओहि कोठरी मे बैसल छल । ओकरा किछु नञि बुझ' मे आबि रहल छल जे घर मे एतेक आतंक कियैक पसरल छैक । रोआ-कान्ना कियैक मचल छै ? एम्हर बड़का बाउजीआ छोटका बाउजी के दाँती लागि रहल छै त' ओम्हर दुनू माय के । सभकिओ कहि रहल छै जे डाका पड़ि गेलै । मुदा घर मे नञि त' चोरे आएल न डकूबे । सरो-समान सभ ओहिनती छै । तहन केहेन डकैती आ केहेन डकूबा?

समय भोला-रामचन्नर केर सखा बनि गेल । नान्हिाटा पूँजी सँ शुरू कएल किरानाक दोकान बढ़ैत' गेल । माय हँसुलियो गढ़ा लेल, डँड़कसो आ छागड़ि सेहो भगवतीक मानता पूर्ण भेल, छठ मैया के सूप सेहो चढ़ल आब ओकर एके गो साध छल घर मे पुतोहु आबि जाए । मायक मोन छल-एके संगे दुनू बेटाक बियाहक-भने मंदिर मे करए पड़ए । बेटीबला कहलकै-"जौं उचित बूझी त' हमर छोटकी बेटी गायत्री सेहो विवाह जोगर भैये गेल अछि, गौरीक संगे-संगे यदि गायत्री के रामचन्नर बाबू लेल स्वीकार क' ली त' हमहू एके संग गंगा नहा लेब ।"

होइत नहि छल एहेन विवाह हुनका आओर मे मुदा बाउजी आ भोला दुनू बाजल-ठीक छै । दुनू बहीन रहत त' आपस मे प्रेम बनल रहतैक । गोतिया-देयादबला टंटा सभ नञि होत । एखनि हमरा आओर लेल ई बहुत आवश्यक अछि जाहि सँ किछु पूँजी बढ़य ।

मुनिया घर सँ निकलि क' बड़की माय केर कोठरी मे पैसल । सभ जनीजात ओकरा दिसि देख' लागल । सभक आँखि मे जेना असहय पीड़ा, करेज मे हूक आ ठोर पर हाय आबि गेलै । मुनिया बड़की माय लग जा क' बैसि गेल आ हुनक हाथ अपना हाथ मे ल' लेल । बड़की माय कनेक चैतन्य भेल आ सोझा मे मुनियाँ के दखितही ओकरा भरि पाँजा ध' क' डहक' लागल । मुनियो के गरा बकोर लागि गेलै। ओहो कान' लागल मुदा दुनू के कानब मे अन्तर छलैक । बड़की माय सभ किछु जानिक' कानि रहल छल आ मुनिया बिनु किछु जनने-बुझने ! अनमन कोनो छोट नेना जकाँ, जे माय के फूसियो कनैत देखि कानय लागैत छल ।

गौरी आ गायत्री क्रमशः भोला आ रामचन्नर सँ विवाह क' क' आबि गेल । मायक गढ़ाओल गहना मे ओ दुनू चाँद सुरूज जकाँ दमक' लागल । दोकान मे भोला रामचन्दर केर मेहनत आ घर मे गौरी आ गायत्रीक । घर जेना स्वर्गो सँ सुन्दर, मोहक आ सोहनगर भ' गेलै । माय बाउजी आब पूजा-पाठ, दान दक्षिणा दिस प्रवृत्त भेलाह। माय दुनू पुतौहु संग घरक काज छिनगाबय आ बाउजी दोकान पर बैसथि ।

माय छठ करिते छल । भोला-रामचन्नर सेहो एखनि धरि छठ केर भीख माँगिते छल । मुदा आब ओ प्रतीकात्मक भ' गेल छल । एक साँझ पहिने नहा-सोन्हाक' नव सूप मे पाँच-पाँच घर भीख माँगि अबैत छल । परनो दिन अहिना पाँच घाट प्रसाद माँगि लेइत छलाह ।

मुनिया एखनो धरि बड़की मायकेर पाश मे छल । जनीजात सभ नोर चुआ रहल छल । एकटा स्त्री आँखि पोंछैत आ रूदन कँ नियंत्रित करैत मुनिया हाथक लहठी

तोड़' लागल । लाल पीयर नक्खी लहठी चट्-चट् केर मद्धिम आवाज करैत टूट' लागल। पाँच माह पहिने धारण कएल लहठी हाथ सँ अलग भ' गेल। खंडित-खंडित भ' क'।

चौदह बरस धरि कठोर प्रतीक्षा, मधुबनी-दरभंगा सँ 'ल' क' पटना धरि कोनो डाक्टर नञि बाँचल । माय कोनो ओझा, गुनी, पीर मजार नञि छोड़ल आ गौरी, गायत्री सभ व्रत-उपवास करैत गेल । डाक्टरी रिपोर्ट--सभ किछु ठीक अछि; बाबा, संत सभ कहय; धीरज धरू । माय अधीर भ' उठल । भोला-रामचन्नर के सेहो कखनो-कखनो अधैरज लागि जाए । एतेक जान-प्राण सँ ठाढ़ कएल गेल मुखक ई तनावा के भोगत जहन संताने नञि ।

माय अशक्त भेने छठ गौरी केँ सौंपि देली । भोला पानि मे ठाढ़ होबैत छल। सभ साल छठ मैया सँ एकहि बिनती । भोला आ गौरी नोर सँ' दहो-बहो भ' जाए। घाट पर अर्घ्य धराबैत गायत्री आ रामचन्नर केर सेहो गरा बकोर लागि जाए । गीत होबैत रहैत छल-

केरबा जें फरले घउद से
ओपर सुगा मँडराए
x x x
अइहें गे सुगनी छठी माय
होइहें उनहीं सहाय ।"

आ सत्यें, छठ माय सहाय भेली । एकहि साल गौरीआ गायत्री दुनू गर्भवती भेली आ दुनू एक-एक गोट बेटा के जन्म देल । फेर त' एक केर बाद एक दुनू के दू-दू गोट बेटा भेल । अद्भुत साम्य-उमिर, मुँहक काट सभ मे । तेसर बेर चारो बेटा-पुतोहु सहित मायो कहलक-अईबेर छठ माय बेटी दौथु । बिनु कन्यादान कएने गंगा नहयबाक पुण्य नञि भेंटै छैक । "नञि ! नञि ! आब बेटी ।" भोला आ रामचन्नर गौरी आ गायत्री सँ कहितथिन्ह-'धुर हटथु।' जेना बेटा-बेटी अपना हाथक बात हुअए ।"

गौरी पुनः बेटा के जन्म देल । मुदा सभक चिर-प्रतीक्षित साध पूरा कएल गायत्री आ नान्हिटा मुनिया के देखि दुनू भाइ गौरीक नवजात के जेना बिसरिए गेलाह। गौरी सेहो । "हमर बेटी" "हमर बेटी ।" दूनू भाइ मे लड़ाई होब' लागल । गायत्री मुस्का रहल छल । अन्त मे गौरी बाजल-"लड़ि-लड़िक' बेटीक जान नञि ली । अई घर मे आई कोनो एहनो चीज रहलए जे खाली हमरे हुअए वा अहींक, फेर ई मुनिया खाली कोना क' हिनके आओरक भ' जैतै ? ई त' हमर सभक मुनिया अछि।"

मुनिया बढ़ैत गेल, साले-साल छठ घाट पर सभ किओ ओकरा देखए । कोरा मे मुनिया, आब नान्हि-नान्हिटा गोर मे पाजेब पहिरने ठुमकइत चलैत मुनिया । ललका डैक्रोन केर फराक आ खरगोशक कान जकां दूटा चोटी बनौने मुनिया । पाँचे बरख केर भेल मुनिया कि अई बेर छठ घाट पर लोक सभ देखल-पीयर नाइलॉन केर फ्राक आ दूटा चोटी संगे-संगे मायबाला बड़का मँगटीका पहिरने भोलाक आंगुर धएने एम्हर-ओम्हर फुदुक रहल छल । जेना बाउजी एक दिन दोकान पर बैसले-बैसले ओंघरा गेल छलाह तहिना मायो तुलसी जी के जल देइत-देइत बैंकुठबासी भ' गेल छलीह। मुनियाक विवाह देखबाक साध हुनकर मोने मे रहि गेल छल । साधक ई तोता भोला रामचन्नर आ गौरी गायत्री सभ केर भीतर पोसा रहल छल । बड़ अधीरता सँ ओ सभ मुनिया के पैघ होबाक प्रतीक्षा मे छल । हुनकर बस मे होइतियन्हि त' क्षण-क्षण मे मुनिया एक एक बरखक सीमा फाँदि जइतियैक ।

पोखरि पर सभ साल छठ घाट केर स्थान निश्चित छल जे कंकर चौकी कत' बैसत । भोलोक चौकीक स्थान निश्चित छल-कच्चा घाट सँ ठीक बाम दिस। दहिना भागमे चौबाइन केर चौकी होइत छल, दुनू साँझ अर्घ्य देबाक बाद चौबाइन नियम सँ छठक पाँचटा कथा कहैत छली । भरि घाटक लोक जुमैत छल । सँझुका अर्घ्य केर भिन्न खिस्सा, भिन्सुरका अर्घ्य केर भिन्न । एके रहैत छल त' मात्र तुलसी गाथा-

''साँवर सुवर काँवर बांधल
नन्द महल घर लेल अवतारा
x x x
जे तुलसी मे ढारे पानी
जन्म - जन्म होए रानी
जे तुलसी मे बारे बाती
जनम-जनम होए अहिबाती

सभ साल गौरी आ गायत्री मुनिया सँ तुलसी पर दीप जरबबैत छल-भरि कातिक मासा तइयो कोन चूक भेलै जे तुलसी माइ जनम-जनम के कहय, अही जनम मे अहिबातक पातिल ओंघरा देल-सेहो अई काँच उमिर मे ?

साले-साल छट घाट पर फराके-पेन्ट पर सभ किओ ओकरा टीका-नथिया पहिरने देखैत छल। एकदम कोनो गुड़िया जकाँ लागय । लोक मुस्कीक इजोत सँ भरि उठैत छल ।

पूराक पूरा शहर जुमि गेल छल बरियातक बेर । इंतजाम बात छएबो कएल

अति उत्तम । मरद-जनीजात सभक नाश्ता आ भोजनक व्यवस्था छल । एगारह रंग केर मिठाई। पुरी-बुनियाक त' कोनो ठेकाने नञि । जकरा जतेक मोन करए, खाएत जाउ । जमाइयो छल सुदर्शन । सोलह-सत्रह केर वयस । पम्ह फुटैत । विधवा माय आ दू गोट भाइ केर परिवार । अथाह सम्पत्ति । नहियो पढ़त दुनू भाइ आ बैसियो क' खाएत तइयो सात पुश्त धरि लोक भोगत । भोला रामचन्नर सभ किछु फरिछा नेने छलाह-''हम पूरा घर भरि देब । लड़की एखनि छोट अछि । बिदागिरी नञि करब। पाँच साल बाद करब ।''

सासु तनि गेली-'एहनो कतहु भेलैय' । बरियाति हाथ डोलौने घुरत की ? जे रस्म छैक से त' निभाबहि पड़तन्हि ।''

''त' ठीक छै । चौठारीक प्रात भेने विदा क' दी । अहूँक मान रहि जाएत। हम अपना सिहन्ताक मारे एहि कांच उमिर मे बेटीक विवाह केलहुँए । ओकर पूरा ध्यान राखब हमर सभक जिम्मेदारी अछि ।''

आ दूब धानक खोंइछा, पीयर गोटा लागल साड़ी आ ढलढल करैत ब्लाउज मे एकटा गेठरीए जकाँ मुनिया सासुर पहुँचि गेली । अनमन माटिक काँच दीप सन नरम, सुकुमार, स्निग्ध । वर हतप्रभ रहि गेल । सोलहे सत्रहकेर वयस छलै, तैं सँ की-विवाह आ वर-कनियाक संबंधक गहराई आ प्रथम रात्रिक महत्त्व कें नीक जकाँ बुझैत छल । तइयो एहेन काँच दीप के छुबाक हिम्मति नञि भेलै । बुझेलै जे हाथ लगबिते दीय। लरबराक भांगि जाएत, मुंह देखि, किछु गप-शप क' ओ सुति रहल।

चौठारीक दिने मे भाई पुछारी ल' क' पहुँचि गेल छल । दोसरे दिन बिदागिरी भ' गेलै । नान्हिटा मुनियाँ चिरई-चुनमुन जकाँ फुर्र-फुर्र उड़ै, फुदकै-एम्हर सँ ओम्हर लाल, पीयर साड़ी, भरि हाथ नक्सी लहठी, दू टा चोटी आ भरि माँग पीपा सेनूर। भोरक स्वर्णिम आभा सँ झलफल करैत मुनिया के जे देखै, देखिते रहि जाए ।

पूरा छठ घाट अई बेर हतप्रभ छल । गौरी अर्घ्य द' रहल छल-हाथ मे सूप आ आँख मे नोर नेने । भोला पोखरि आ आँखिक जल मध्य ठाढ़ छल कल जोड़ने, लोक आओर कोनो ने कोनो बहाने आबए आ एकटा हुलकी द'क' चलि जाए । मुनिया के सभ किओ देखए आ ''हाय दैव'' उचारैत चलि जाए । लोक सभ साले-साल डेक्रोन केर फराके पर पेन्हाओल टीका-नथिया केर ततेक अभ्यस्त भ' गेल छल आ परुक्कें त' ओ छल लाल बनारसी आ भरि देह गहना आ भरि माँग सेनूर सँ लकदक भेल। सद्यविवाहित मुनिया विवाहक अर्थ नञि जानेत छल । मुदा ओकर बाल-वधू बला रूप बलचंदा जकाँ सभक मोन पर प्रतिबिंबित छल । सएह मुनिया के अई

बेर साधारण सफेद सूती साड़ी सून हाथ आ सून माँग देखि ककरो मुंह सँ हाय निकलब स्वाभाविक छल । नञि हाथ मे चूड़ी, ने माथ पर ठोप, ने ठोर पर मुस्की, लागए जेना एके बरीख मे ओ तीस-चालीस बरख केर उम्र पार क' गेल छल ।

अल्पायुए मे विधवा भेल सासुक दहिना-बामा हाथ छल रामकुमार आ रामप्रकाश, पुतौहु अनबाक ततबे सिहन्ता छल जतेक भोला रामचन्नर के बेटी बियाहक छल, खगता ककरो नञि छल--ने हुनके ने हिनके । मात्र सिहन्ताक डोरी सँ दुनू पक्ष बन्हायल छल। ई दुनू भाई विरोधो कएल--एतेक कम उमिर मे विवाह ने हम बालिग ने आ, फेंदे की जखन बियाहक बाद पाँच बरख ओ अपना नइहरे रहत ।

''त'' की भेलै । बुझि लेब जे तखन द्विरागमन नञि, बियाहे भेलए, बाउजी चलिए गेलथुन, जौं हमहुँ उठि गेलहुँ त' टूअर बालक सँ विवाह के करत आ के कराओत? तोहर विवाह भ' गेल रहतौक त' हम मरियो जाएब त' रामप्रकाश टूअर नञि कहाओत। भाई-भौजाईक हाथ रहतैक ओकरा माथ पर ।

मुदा हाथ देब' बला अपने हाथ छोड़ा कतहु बिला गेल । की त' डागदर कहलकै–हार्ट फेल । माने ? एतेक छोट उमिर मे ई बीमारी ? बिधनाक खेल किओ जानलए आई धरि ? सासुक वैधव्यपूर्ण जीवन मे पुत्र वियोगक दुख सेहो टँगा गेल।

''मुदा, एतेक छोट उमरि सँ' ओ ई पूर्ण वैधव्य कोना कँ काटत ? अपना आओर मे ओना त' ई नञि होइ छै, मुदा बेटी लेल हम लड़ि जाएब समाज सँ किंतु पहिने अपनेक अनुमति........''

''अनुमति नञि, सहमति कहू । हमर सहमति चाहीं ने । हे, ई लिय ।' वैधव्यक कष्ट हमरा सँ' बढ़ि क' के बुझत ? मुदा, हमरा सांझा मे त' जिनगीक आसराक रूप मे ई दुनू बालक छल, ई दुनू जीवन केर सहारा छल, जीबाक बहाना छल । तैं, ई दुनूक मुंह देखि खेपि गेलहुँ, मुदा, ई त' अपना बरक मुंहो नञि देखलकई । हम जनै छी, परम्परा आ रीतिरिवाज त' बनाब' सँ' बनै छै, तोड़ सँ ओकर नवनिर्माण होइत छै, अधिक तार्किक, अधिक युक्तिसंगत । अहाँ ओकर पुनर्विवाह' कर' चाहैत छियै, सच पूछी त' हमहूँ इएह चाहैत छी । मुदा आब ओ ई घरक पुतौहु भेली त' हन हुनका कोनाक' कोनो आन दुआरि पर जाय देबै ? ओ एतहि रहतैक ।

''मुदा, ई संभव कोना छैक ?'' रामचन्नर किछु नञि बूझि सकल ।

''कियैक ? ई संभव कोना नै छैक ? हमरा आओर सँ त' रामेकुमार मुंह फेरलए ने ! रामप्रकाश त' साच्छात ठाढ़ अछि । भगवान ओकरा जुग-जुग जीयाबथु', हमरो बाँचल उमिर ओकरा लागि जाओ । हमरा अपना पुतौहु सँ' मतलब अछि । आब ओकरा किन्नहु हम नञि छोड़ब ।''

भोला-रामचन्नर अवाक छल । ओ दुनू त' ई सोचि क' आएल छल जे जवान बेटाक मौत केर सोग सँ भारी भेल हृदय सँ ओकरा सभ लेल प्रेमक झरना त' झरत नञि, ओकरा आ ओकर मुनिया के निठट्ठ गारि आ सरापक अलावा आओर भेटबे की करतै । बिनु कोनो दोखे ओ सभ बेईमान आ डाकू भ' जाएत आ मुनिया डायन, चुड़ैल, सँयखौकी आ कीदनि--कहाँदनि । मुदा अईठाँ त' जरैत दावानल केर बदला मे चन्दन केर झरना प्रवाहित भ' रहल छल–शीतल, सुगंधित, मनोहारी । घाव सँ भरल अंत:करण पर प्रेम, विश्वास आ अधिकारक फाहा छल–नर्म आ गर्म । धरती फेर भीज' लागल ।

पुन: साक्षी भेल छठ घाट, अई बेर भोला-रामचन्नर केर घाट पर रसनचौकी बाजा छल । गौरी अर्घ्य देब' पानी मे उतरल, भोला त' पहिनहि सँ ठाढ़ छल पानि मे । बाहर रामचन्नर धिया पुता सभके फटक्का, फुकना दिया रहल छल । गायत्री अर्घ्यक ओरियान क' रहल छल । भरि छठ घाटक आइ माइ दाई एकबेर भोला-रामचन्नर केर घाटक चक्कर जरूर लगाबए आ निरखि लेइत छल मुनिया के जे फेर लाल बनारसी, भरि सिऊथ सेनूर, टीका, नथिया आ भरि हाथ नक्खी लहठी मे छल । कनेक सोहनगर उम्र मे सेहो आबि गेल छल, तैं जेना सौंदर्य पानि पर पड़ैत सूर्यक जकाँ झलफल-झलफल क' रहल छल ।

बरख पुरलाक बाद रामकुमार केर बरखी भेल । भोला-रामचन्नर मुनिया के चढ़ाओल साड़ी गहना सभ ल' क' पहुँचल छलाह रामकुमार ओहिठाँ, जत' रामकुमार के माय मुनिया के अपना घर सँ मुक्ति देबाक बात साफ इन्कार क' देल । ओ स्पष्ट बाजल-साल भर रूकि जाउ ताहि केर बाद रामप्रकाश सँ' अहाँक बेटीक विवाह हम कराएब । मुदा अई बेर बरियाति साजि क' नञि जाओत । कोनो मन्दिर मे विवाह होएत ।

आ मुजफ्फरपुर केर प्रसिद्ध गरीब स्थान मे भगवान शिव आ माँ पार्वती केर आशीर्वाद ल' रामप्रकाश आ मुनिया एकटा नव जिन्दगी मे प्रवेश कएल । भोला-रामचन्नर त' सासुक पएर पर खसि गेलाह । एहेन-एहेन लोग धरती पर हुअए त' कोनो पुतौहु के सासुर मे कहियो कोनो दुख नञि भेटतैक । गौरी, गायत्री आ आब बुझनुक भेल मुनियो के चौबाइन द्वारा कहल तुलसी कथा मोन पड़ि-पड़ि जाए–

''जे तुलसी के करे सेवा
जन्म-जन्म पावे मेवा

जे तुलसी मे बारे बाती
जन्म-जन्म होए अहिबाती ।''

ऊँहू ! छठ घाटक कथा एतबे पर समाप्त नञि भेल । अगिला बरख फेर लोग देखल-मुनिया अक सक भ' रहल छल । उठ' बैस' मे आलस्य आ कष्ट होइत छल। मुंह पर पीताभ आभा पसरल छल । आइ माइ-दाइ केर आँखि मे उमेदक ज्योति जागल जे अर्घ्य सभ पर राखल प्रज्ज्वलित दीप सँ निकसि सभक आँखि मे प्रवेश कएल छल। आ फेर अगिला साल । समय साक्षी होथु वा नञि, हमरा नञि बूझल, मुदा छठ घाट साले-साल ई सभटा परिवर्तनकेर साक्षी छल-ई बरख मुनियाक देह पर लकदक बनारसी आ माथ पर टीका आ नाक मे नथिया त' नञि छल, मुदा हाथ मे नान्हि-नान्हिटा तिकोनी झबला सँ भरल एकटा झोरी अवश्य छल, लोक सभक आँखि मे लाल डैक्रोन केर फराक सँ ल' क' लाल बनारसी, सफेद नुआ आ फेर लाल बनारसी घूमि गेल आ सभ मे डूबल मुनिया सेहो । घाट पर गीतगाइन सभ गीत गा रहल छली-

''अइहें गे सुगनी छठी माई
होइहें उनहीं सहाय !''

रामचन्नर छओ मासक एकटा नेन्ना के ल'क' आएल आ मुनिया के थमा देल। मुनिया ओकरा दीप दिस इशारा कएल । नेन्ना हिलैत टेमी सभ के देख' लागल । हिलैत टेमी सभ ओकरा बड्ड प्रिय लगलैक । ओ थपड़ी मारिक' किलकारी भर' लागल। मुनिया स्नेह सँ चूमि लेल । साँझ भ' रहल छल । लोग अर्घ्य देबाक तैयारी कर' लागल। गायत्री सेहो गौरी के अर्घ्य देब' लगली । अई बेर गायत्री आ गौरी दुनूक ठोरक कोन पर एक पातर छीतर मुस्की बरकि रहल छल । बच्चा थपड़ी मारि रहल छल।



राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा ग्रियर्सन पुरस्कार सँ सम्मानित होयबाक लेल मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक डा. रमानन्द झा 'रमण' के वधाइ

पुनर्मुद्रण

रामदेव झा

'भोल' उपनामक कुमार गंगानन्द सिंह रचित

मनुष्यक मोल

[कुमार गंगानन्द सिंहक जन्म 1898 ई० मे भेल रहनि । एहि वर्ष (1998) ओहि महान रचनाकारक जन्मक सए वर्ष पूरि गेल छनि । शतवार्षिकी पर प्रसन्नताक संग कुमार गंगानन्द सिंहक 'मोल' नाम सँ लिखित रचना 'मनुष्यक मोल' पुनर्मुद्रित कएल जा रहल अछि । ई अनुपलब्ध रचना डा० रामदेव झाक सौजन्य सँ प्राप्त भेल अछि-सम्पादक]

आधुनिक मैथिली गद्यमे पौराणिकी कथानकक आधार पर रचित कथात्मक विधा आख्यायिका-उपाख्यानक आरम्भ 1906 मे परमेश्वर झाक कृति सीमान्तिनी आख्यायिका सँ भेल छल । परन्तु एहि सँ भिन्न समसामयिक सामाजिक घटनाकेँ कथानक बनाय आधुनिक कोटिक कथा-उपन्यासक रचनाक आरम्भ जीवनाथमिश्र प्रसिद्ध पुलकित मिश्र द्वारा रचित 'मोहिनी-मोहन-उपन्यास'क 1907-8 मे प्रकाशन सँ भेल। भोल द्वारा रचित कथात्मककृति 'मनुष्यक मोल' 1924 मे प्रकाशित भेल छल । एहि सँ पूर्व जनार्दन झा जनसीदनक तीन गोट उपन्यास 'सतीसर्वस्व', 'निर्दयी सासु' ओ 'शशिकला' मिथिला-मिहिर मे प्रकाशित भऽ चुकल छल । स्वतन्त्र ग्रन्थक रूपमे रासबिहारी लालदासक 'सुमति' उपन्यास 1918 मे प्रकाशित भेल छल । पुण्यानन्द झाक उपन्यास 'मिथिला-दर्पण' यद्यपि 1914 मे लिखल गेल मुदा प्रकाशित भऽ सकल 'मनुष्यक मोल'क प्रकाशनक पश्चात् 1925 मे । एही अवधिमे बंगला उपन्यासक मैथिलीमे अनुवाद करबाक प्रवृत्ति सेहो मैथिली लेखक मे जाग्रत भेल । डॉ० जयकान्त मिश्र एहन अनेक बंगला उपन्यासक उल्लेख कयलनि अछि जकर अनुवाद 'मनुष्यक मोल' सँ पूर्व वा पश्चात् भेल जे ग्रन्थ रूपमे वा मिथिल-मोद ओ मिथिला-मिहिर मे प्रकाशित भेल अथवा पाण्डुलिपिहिक रूप मे रहि गेल । एही कोटि मे जीबछ मिश्रक

'रामेश्वर' ओ 'बिचित्र रहस्य, उपन्यास सेहो परिगणित अछि जाहिमे केवल 'रामेश्वर' उपन्यास 1915 मे (प्राय:) प्रकाशित भऽ सकल ।

'मनुष्यक मोल' सँ पूर्वक मैथिली उपन्यासमे लेखक लोकनिक एकटा सुनिश्चित दृष्टिकोण रहैत छल, से रहैत छल समाज सुधारक । एहि सम्बन्धमे रासबिहारी दासक उक्ति विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि । 'सुमति' सँ पूर्व ओ हिन्दी भाषामे मिथिलाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-सामाजिक परिचय विषयक ग्रन्थ लिखने छलाह 'मिथिला-दर्पण'। परन्तु 'सुमति'क प्रसंग अपन मित्रगणक विचार कहने छथि 'निज मातृभाषाक उन्नतिए सभ उन्नतिक मूल होइत अछि अतएव येहि बेरि मिथिला-भाषा-साहित्येक सेवन करब परमावश्यक थीक । हमरा सभक आधुनिक सामाजिक दशा परम अधोगति केँ प्राप्ति भै चललि अछि तैं येहि बेरि मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यासक रचना रचू जाहि सौं समाज पर प्रचुर प्रभाव पड़ैक ।' समाजक लोक 'उपन्यासाङ्कित दुर्घटना सौं पूर्णतया' परिचित भै समाज-सुधारक विवेचना करथि तथा सर्वसम्मत्यानुसार एक यहन नियमावली निर्माण करथि जाहि सौं अपार अपव्यय, अनुचित विधि-व्यवहार तथा फफड़दलालीक बाढ़ि सौं भासित समाजकेँ बचाबथि।'

एहने परिप्रेक्ष्यमे 'मनुष्यक मोल', एकैस पुष्ठक उपन्यास, 1924 मे मैथिली प्रिंटिंग वर्क्स (मैथिल छापाखाना) मधुबनी सँ मुद्रित-प्रकाशित भेल । भोलक दोसर कृति 'विवाह' प्रकाशित भेल कहिया से ज्ञात नहि, मुदा पहिल संस्करण बेस लोकप्रिय भेल, तें एकर दोसर संस्करण 1935 मे मैथिल प्रेस, मधुबनी सँ एक हजार प्रति मुद्रित-प्रकाशित भेल। 'विवाह'क दोसर संस्करणमे प्रदत्त सूचनानुसार 'मैथिली-गल्प-माला'क प्रथम पुष्प 'विवाह' छल जकर लेखक 'भोल' ओ सम्पादक छलाह 'श्रीयुत कुमार गंगानन्द सिंह, एम. ए. एम.आर.ए.एस., श्रीनगर (पूर्णियाँ) । मैथिली-ग्रन्थ-माला'क प्रथम पुष्प तेरह पृष्ठक 'विवाह' नामक गल्पकेँ सेहो इतिहासकार लोकनि उपन्यासहिक रूपमे चर्चा कयने छथि ।

'मनुष्यक मोल' ओ 'विवाह'क लेखक 'भोल'केँ इतिहासकार लोकनि भोलझा, भोलाझा इत्यादि रूप दऽ देलनि । एकटा भोलझा छलाह, कन्हैयालाल कृष्णदास द्वारा चारि भागमे प्रकाशित मिथिला-गीत-संग्रहक सम्पादक । परवर्त्ती समय मे 'भोल' ओ 'भोलझा' केँ अभिन्न मानि लेबाक भ्रम पसरि गेल ।

भोल द्वारा रचित कोनो कृति, उपर्युक्त दुहू कृतिसँ भिन्न कहियो कतहु देखबामे नहि आयल ।' मनुष्यक मोल' ओ 'विवाह' सन रचनाक कथा-शिल्पी वास्तवमे के

छलाह जे दुइएटा विशिष्टकृति मैथिलीकेँ प्रदान कऽ सर्वथा मौन भऽ अज्ञातवास मे चल गेलाह ।

एहि रहस्यक उद्घाटन 'मनुष्यक मोल'क प्रकाशनक छत्तिस वर्ष पश्चात् भऽ सकल। 1960 मे मायानन्दजी 'अभिव्यञ्जना' पत्रिकाक प्रकाशनक आयोजन कयलनि। ओ आकाशवाणी पटना मे छलाह आ हम पटना विश्वविद्यालय एम. ए. (मैथिली)क छात्र रही आ कंचन-भवन होटल मे आवास छल । अभिव्यञ्जनाक प्रबन्ध-सम्पादक छलाह पं०जयनाथ मिश्र आ मुद्रण-स्थान छल अजन्ता प्रेस, पटना। सामग्री-संकलन-चयन मे हमरा पर भार देल गेल ज्यौ० प० बलदेव मिश्र ओ कुमार गंगानन्द सिंहक इण्टरव्यूक आधार पर हुनक साहित्य-सर्जन विषयक आत्मकथ्य तैयार करब । कुमार गंगानन्द सिंह छलाह ओहि समयमे बिहारक शिक्षामन्त्री ओ आवास छलनि छज्जूबागमे । हुनकहि आवासमे ओहि समयमे साकेतानन्द सेहो रहैत छलाह। हुनकहि हार्दिक प्रयत्न ओ सक्रिय सहयोग सँ कुमार साहेबक इण्टरव्यू सम्भव भऽ सकल जकरा 'अभिव्यञ्जना'क वैयक्तिकी स्तम्भ मे प्रकाशित कयल गेल । एहिमे ओ पहिल बेर स्पष्ट कयलनि जे-

'नाम आ उपनाम सँ लीखल बहुत रास वस्तु आब मोन नञि अछि । 'मनुष्यक मोल' आ 'विवाह' आदि कथा हमर कालेजे-कालुक रचना थिक ।'

आरम्भिक रचनामे अपन प्रकृत नाम नहि देबाक पाछाँ निहित कारण ओ संकोचे ओ धाख कहने छलाह । अपन नाम देबामे संकोचक अनुभव भेलनि तें पारिवारिक दुलारक नाम 'भोल'क उपयोग कयलनि । किन्तु प्रौढ़त्व अयला पर 1935 ई. क मिथिला-मिहिरक मिथिलाङ्क मे प्रकाशित प्रसिद्ध कृति 'अगिलही' मे लेखकक रूपमे अपन प्रकृत नाम कुमार गङ्गानन्द सिंह देलनि । 'अगिलही'क प्रकाशन सँ ओ सिद्धहस्त कथाकारक रूपमे जानल-मानल जाय लगलाह । मिथिलाङ्क मे 'अगिलही' पर सम्पादकीय टिप्पणी मे कहल गेल अछि-

'पाश्चात्य साहित्यमे जीवन-आख्यानक रूपमे लिखित उपन्यासक बड़ आदर अछि । एहि प्रकारक उपन्यासमे व्यक्ति विशेषक स्वाभाविक चित्रण स्पष्ट एवं एकमुखी रहैछ । प्रस्तुत लेख एही प्रकारक उपन्यासक एक अंश थिक जाहिमे एक (मैथिल) बालिकाक स्वाभाविक चित्रण अछि । आशा अछि कथा-साहित्यक मर्मज्ञकेँ ई रूचिकर प्रतीत होएतन्हि ।'

रचनाक अन्तमे लेखक टिप्पणी देने छथि-'ई व्यक्तिचित्र अपूर्ण अछि, मनोरञ्जक प्रतीत भेला पर यथावकाश एकर पूर्तिक चेष्टा करब ।'

प्रतिज्ञानुसार 'अगिलही'क कतिपय अग्रिम परिच्छेद रमानाथ झा द्वारा सम्पादित ओ दरभंगा सँ प्रकाशित साहित्य-पत्र (१९३७-३९) मे प्रकाशित करौलनि। पुनः आगाँ चलि १९४८ मे मासिक पत्र स्वदेश मे (अंक-२) तदग्रिम परिच्छेद प्रकाशित भेल। एहि ठाम सम्पादकीय टिप्पणी मे कहल गेल अछि।

'मैथिलीक आङन मे 'अगिलही' ककर चिन्हारि नहि ? बारह वर्ष पूर्व ई 'मिथिलाङ्क' मे जन्म ग्रहण कैल। पुनि 'साहित्यपत्र'क कोर मे छुटि खेलैलीह। आब 'स्वदेश' आयलि छथि ओ बराबरि अबैत रहतीह।'अगिलही' उपन्यास नहि औपन्यासिक चित्र थीक–शैशव-सुलभ चपलता ओ मिथिलाक माटि-पानिक संस्कार लै स्वाभाविक उद्‌गारमे एक मैथिल-बालिकाक। बिनु विशेष घटनाक कथा प्रवाह एकर विशिष्टता थिकैक। यैह हेतु थीक जे गत छौ परिच्छेदक कथा-विच्छेदहु पर 'अगिलहीं'क प्रस्तुत 'लैऔनक यात्रा' मे भूमिका अनावश्यके।'

एहि सँ आगाँ 'अगिलही'क कथा-विकास रूद्ध भऽ गेल। यद्यपि हिनक आन कतोक कथा सब सेहो प्रकाशित भेल, यथा–आमक गाछी, बिहाड़ि, पंडित पुत्र ओ पंच-परमेश्वर। डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा कुमार गंगानन्द सिंहक कथा सभक सम्पादन कऽ 'अगिलही' एवं अन्य कथा' नाम सँ १९६६ मे प्रकाशित करौने छलाह जाहि मे 'अगिलही'क मिथिलाङ्कवला अंशमात्र लेलनि। यदि समग्र प्रकाशित समेटि लेने रहितथि तँ अधिक उपकारक होइत। ई तथ्य अभिज्ञात होइतहु जे 'मनुष्यक मोल' कुमार गंगानन्द सिंहक कृति थिकनि, विशिष्ट कृति थिकनि तकरा स्वसम्पादित संग्रहमे स्थान नहि देबाक पाछाँ यथार्थ कारण ई छल जे 'मनुष्यक मोल' क एकहु गोट प्रति सर्वथा अलभ्य छल। एक गोट प्रति पटना कॉलेजक पुस्तकालय मे विद्यमान छल जे हम १९५९-६१क अवधिमे पढ़ने रही। परन्तु उपर्युक्त पुस्तकक प्रकाशनक क्रममे १९६६ मे ओ पोथी पुस्तकालय मे नहि छल।

'मनुष्यक मोल' कुमार गंगानन्द सिंहक ओहि वयसक रचना थिकनि जखन ओ युवत्वमे प्रवेश कऽ रहल छलाह। सहजहि लोक एहि अवस्थामे अत्यन्त संवेदनशील ओ आदर्शानुप्राणित विचारधारासँ उच्छलित होइत रहैत अछि। कुमार साहेब ओहि समयमे राष्ट्रीय विचारधारा सँ अनुप्राणित भऽ रहल छलाह। जकर एकटा पक्ष सामाजिक सुधार सेहो छल। ओ अपन देशीय समाजमे व्याप्त कुरीति, विकृति ओ ओकर दुखद परिणति देखैत छलाह। अतः ओकर विरोध ओ परिवर्त्तनक अभिनव सन्देश देबाक प्रयास अपन कथा-गल्पमे करऽ लगलाह। 'मनुष्यक मोल' समाज-सुधारक दिशामे हुनक पहिल पदनिक्षेप छल। एहि औपन्यासिक कथामे हर्षनाथ ओ मनोरमा नामक

नवदम्पतिक जीवनक करूणकथा कहल गेल अछि। कुलीनताक प्रति विनाशक सीमा धरि व्यामोह, कुलीन कन्याकेँ धनक रूपमे विक्रय, नैहर, सासुर ओ समाज मे नारीक प्रताड़ना, नारीक अशिक्षा सन विकृत-वीभत्स आचार-व्यवहारक प्रति समाजमे चेतना जगयबाक प्रयास कयल गेल अछि।

कथानकक कलात्मक संरचना, नायक ओ नायिकाक संघर्ष पूर्ण जीवनमे स्वाभिमानक सन्निवेश पूर्वक स्वाभाविक चरित्र चित्रण, विश्वसनीय परिवेश, स्वाभाविक भाषा-प्रयोग, समाज सुधार ओ नारी-शिक्षाक प्रति रूझान सँ 'मनुष्यक मोल' एकटा विशिष्ट कृति बनि गेल अछि।

'मनुष्यक मोल' आधुनिक मैथिली गद्य साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण धरोहर थीक। सत्तरि-पचहत्तरि वर्ष पूर्व रचित प्रकाशित औपन्यासिक कृति सँ साम्प्रतिक पीढ़ीक पाठककें ध्यानमे राखि 'भोल' उपनामक कुमार गंगानन्द सिंह (1898-1970)क' 'मनुष्यक मोल' प्रस्तुत कयल जा रहल अछि।

पुनर्मुद्रण हेतु मूलपोथीमे कोनहु प्रकारक परिवर्त्तन संशोधन श्रेयस्कर नहि। अतः लेखकक भाषा-सम्बन्धी प्रयोग ओ वर्त्तनीकेँ यथावत छोड़ि देल गेल अछि। परन्तु प्रेस जन्य अशुद्धिक संशोधन आवश्यके छल। एहिना कतोकठाम अनुच्छेद ओ कथोपकथनादि मे पैराग्राफक दृष्टिएँ यत्किंचित् संशोधन कयल गेल अछि जाहि सँ पाठककेँ अर्थबोध मे सौविध्य होनि। एहिसँ पोथीक स्वरूपक कोनो प्रकारक हानिक सम्भावना नहि।

आशा अछि जे इतिहास आलोचना ओ सन्दर्भ-सूत्रक माध्यमसँ 'मनुष्यक मोल'क नाम मात्र जननिहार मैथिली साहित्य मे अभिरूचि ओ प्रवेश रखनिहार प्रबुद्ध पाठक मूल कृति स्वतः पढ़िकऽ रस-ग्रहण कऽ सकताह।



कुमार गंगानन्द सिंह

मनुष्यक मोल

दिनक दू बाजि गेल अछि । कनेक बदरियौन्ह छैक । सड़क पर थाल भय गेल छैक । सभ अपना अपना घर मे भोजनादि सँ निश्चिन्त भय विश्राम कय रहल अछि । क्यो-क्यो जे अपन खेत केँ वटाइ नहि लगवने छथि, अपन खेत जयबाक तैयारी मे छथि । भामा सरको लग वैसलि ककरो प्रतीक्षा कय रहलि छथि । नजरि सड़कहि पर छैन्ह । बैसलि-बैसलि जखनि पैर भरा जाइत छैन्ह तखनि आङ्गन दिस कनेक टहलि फेरि सरकी लग आबि बैसि रहैत छथि । जखन कोनो गप्प मे लागि जाइत छथि कि हठात् जेना किछु मोन पड़ैन्ह तेहन चेष्टा करैत गप्प के असम्पूर्णे छोड़ि सरकी लग आबि सड़क दिस ताकय लगैत छथि । एतेक उत्कण्ठा कथी ले छैन्ह से ओहि पड़ोस मे प्रायः सभ केँ बुझल छैक । अतएव एहि तरहक आचरण ककरहु ततेक अप्रासङ्गिक नहि लगैत छैक जतेक पाठक लोकनि केँ । बड़ी काल बैसलि-बैसलि जखन हुनकँ मोन अगुताय गेलैन्ह तखनि हारिकय सुतय गेलीह । पटिया विछाय तकिया आनय गेलै छथि कि कैला केँ सोर करैत ककरो कण्ठशब्द सुनलन्हि । ई बाजब हुनक परिचिते छलैन्ह । जहिना छलीह तहिना झटकि कय दलान दिस गेलीह । योगेए बाबू अपन दरवाजा पर सँ कैला केँ बजबैत छलथीन्ह । ता कैला आबि गेल रहैन्ह और योगे बाबू पयर धोइत रहथि । कैला तेलक माली हुनकलग राखि काँख तर धोती लेने पाछू मे ठाढ़ रहैन्ह । भामाक आङ्गन तथा योगे बाबूक आङ्गन सटले छैन्ह । भामाक उत्कण्ठा भामा कं योगे बाबूक आङ्गन जाय हुनका हेतु प्रतीक्षा करै ले विवश कयलकैन्ह ।

योगेक स्त्रीक नाम छैन्ह सुभद्रा । एतीकाल ओ भुखले सुतलि छलीह । भानस भात भेल पड़ल छलैन्ह । नेना सभ खा लेने छलैन्ह । अपने छलीह योगे बाबूक आसे। कैला केँ सोर करव हुनको निद्रा केँ भङ्ग कयलक । निद्रा भङ्ग होइतँहि भूखक आवेग प्रवल भय उठलैन्ह । भामा केँ चल अबैत देखि मोनहिमोन अत्यन्त क्रोध भेलैन्ह ।

आबिक भामा बहरी दिसुका घरक सरकी लग बैसि गेलीह । एम्हर सुभद्राक क्रोधाग्नि बढ़ले जाइन्ह । मोन मे होइन्ह जे कतहु जँ भामा योगे बाबू सँ गप्प लधलैन्ह तँ नहि जानि ये 'संध्यासेषँहु भोजन भेंट वा नहि । भामा तँ योगे बाबू दिस टकटकी लगौने छलीह । हुनका सुभद्राक मनोगत भावक कि खबरि ? पल-पल मे मोन उद्विग्न भय जाइत छलैन्ह । मोनक उद्गार कहाँ धरि रोकल जाय । योगे बाबू केँ अबैत देखि बाजि उठिलीह "आब योगे बाबूकँ भय गेलैन्ह । अबैत छथि ।"

जहिना बान्हक धार केँ कतहु मुँह खोलि देला पर एकाएक अत्यन्त वेग सँ बान्हक ओहि पार जाय ओ धार प्लावित करैत अछि और मुँह पैघ करैत करैत बान्हकें एकदम तोड़ि दैत अछि, अथवा जहिना बारूद मे आगि लगबितँहि कंहनो-कंहनो पहाड़क चट्टान सभकेँ खण्ड-पखण्ड कय ओ खसाय दैत अछि, तहिना ई कथा सुनितँहि सुभद्राक एती काल सँ मोन मे हौंड़ैत क्रोध व्यक्तभय भामाक उत्सुकता पर पानि फिरा देलकैन्ह। सुभद्रा कहय लागलथीन्ह "अय बहिना ! खाइयो पिब देबन कि नहि ? देखू जे एती दूर छाहरि आबि गेल अछि । हकासल पियासल एती दूर सँ अयले टा छथि कि ता अहाँ आबिकय अखाढ़ा खसाए देल । कनेक मोन ठण्ढा कयलेव दियौन्हि तखनि गप्प कयलेब । कतहु कि पड़ायल जाइत छथि ? जखन अहींक काजे गेल छलाहे तखनि अहाँकेँ बजा क सभ बात कहबे ने करताह । एना एहिले अगुतायल कियैक छी ?"

भामाक उत्सुकताक ढेउ तँ एकदम नीचा खसि पड़लैन्ह परन्तु आत्मग्लानि तथा आमर्षक रूप मे ओ फेरि अत्यन्त भीषण रूप धारण कयलकैन्ह । अपना आङ्गनदिस उनटे पयरे बजैत विदा भेलीह जे "हँ से ठीके अनका काजक आन अगुताइ कि बुझतैक? गुड़क मारि धोकड़े जनैत अछि ?"

ता योगे आङ्गन अयलाह । भामाकँ चल जाइत देखि कहलथिन्ह–"भौजी-कतय जाइत छी ? कनेक सुनि तँ लिय...परन्तु भामा रूकलीह नहि । जाइते जाइते कहलथिन्ह "पहिने अहाँ खा पीबि क मोन ठन्ढा कय लिय तखनि सुनब ।"

योगे जखनि खाय बैसलाह तखनि सुभद्रा कहलथिन्ह "हमही तँ बहिना केँ कहलियैन्ह जे दोसर काल गप्प कय लेथि । भुखले पेटे कि इहो सभ कतहु भेलैक अछि ? तँ ओ तमसा कय चलि गेलीह । एहन टिरीसकें के कय घड़ी रोकि सकैत अछि ?"

योगे०–"व्यर्थे अहाँ हुनका एना तमसा देलियैन्ह । मोन मे बड़ दुःख होइत हयतैन्ह।"

सुभद्रा मनोभिलषित उत्तर नहि पाबि मुँह फुलाय बिअनि हुँकय लगलथीन्ह । भोजन कय योगे लगले भामाक आङ्गन गेलाह । देखथि तँ भामा पटिया पर पेटकुनियाँ

देने तकिया मे मुँह गाड़ि कनैत । योगेक पयरक शब्द सुनि भामा तकिया पर सँ मुँह उठौलैन्ह । योगे ई दृश्य देखि कहय लगलथिन्ह-''आहि ! एना कियैक भौजी-की भेल अछि ।''

भामा-''हमरा हयत की ? किछु नहि ''

योगे-''तँ एना वगय कियैक वनौने छी ?''

भामा-''अपने बनौने छी ? दिने एहन अछि तँ की करू ! अहाँकेँ बड़ कष्ट देल से माफ करब ।''

योगे-''एहि मे कष्ट कोन ? ई तँ हमरा अपने काज छल ।''

भामा-''कष्ट तँ अवश्ये ने । गरीबक काज कतहु धनीक करै ?''

योगे-भेलैक-ई सभ बात आब छोड़ू । जाहि काज ले पठौने रही से सुनूह।''

भामाक मुँह सँ योगे कें बुझि पड़लैन्ह जे हुनक हृदयकुसुम प्रस्फुटित होइत छैन्ह। भामा कहलथीन्ह 'कहू''

योगे-''बेचन मिसर कोनहुना २०००) (दू हजार) सँ कम पर राजी नहि भेलाह।''

भामा-''तखनि की करब ?''

योगे-''अधिकार तँ वैह एकटा बौआ केँ छैन्ह, तखनि करब कि ? ई काज नहि भेने तँ कतहु बिकयबे टा उपाय !''

भामा-''बिकयबाक कथा की बजैत छी योगे बाबू ! अहाँ लोकनिक पुरूषा कि एही ले साग खाय जातिक रक्षा कयने छलाह ? हम अपनहि जीवन मे कि कुल मे ऐतेक टा कलङ्क लगायव ? जँ जातिये जनौ नहि रहतैन्ह तँ बौआ केँ रहतैन्हे की ?''

योगे-''तखनि तँ ओहिठाम छोड़ि और कतहु कोनो अधिकार नहि छैन्ह । कनयाँ द तँ प्राय: अहाँ बुझनहि हयब !''

भामा-''हँ कन्या द तँ हमरा बूझल अछि । सकचीक माइक बहिनधी ओहि गाम मे रहैत छैक । चारिम दिन एतय आयलि छलि । हम सभ हाल पुछने रहियैक। ओ तँ सभटा नीके कहलक । हमर तँ इच्छा होइत अछि-पूरा जे ई काज जेना हो तेना हयबे करे ।''

योगे-''एहि काज मे और तँ कोनो भाङ्गट नहि । जँ किछु तँ रुपैयहिक । ओ तँ दू हजार सँ एक दमड़ियो कम नहि लेताह । 'कतहु डोलाउ मोर कटियटि धार'। एहन लोक सँ हमरहु भेट नहि छल । बुझलन्हि जे अधिकारक हिनका शिकस्ती छैन्ह तँ अगराय लगलाह ।''

भामा-''तकरो तँ वन्दोवस्त अहीं धरा देबैन्ह । हमरा तँ अहींक अवलम्ब रहैत अछि । बौआ कें तँ जहिया ज्ञान प्रान हयतैन ग तहिया ने । एखनि तँ जे बूझी से अहीं

छी । तहू मे हमरा लोकनि जिवतँहि छी तखनि कतहु अपना विवाहक भार बौआ के दियन्हि ! एहि मे त अहाँ जे जेना कराय दियन्हि, तहिना हयतैन्ह । हुनका हम कोन मुँहे की कह जइऔन्हि !''

योगे-''एहि मे बौआ केँ की पुछबैन्ह ? ई तँ हमरे लोकनिक काज थीक । परन्तु आइ काल्हि तँ एहन टाँट समय बितैत छैक जे की कहू ? हमहु तँ अहाँ जनितँहि छी जे एखनि केहन शिकश्त भय गेल छी । जे रुपैया एतबा दिन मे जोड़ि तङ्गड़ि कय भेल छल से सभ जमीने खरीदल तही मे चलगेल । ऊपर सँ 400, (चारि सौ) रुपैया ऋणो लेम पड़ल । और एहिठाम रुपैया द कहबो करबैक तँ ककरा कहबैक? एहि विषय मे तँ एहिठाम सभ हमरे लोकनिक मुँह तकैत अछि । एहन कुसमय सँ आइ धरि कहियो भेट नहि भेल छल । जमीन तँ जहिया पैदावार देत तहिया, एखनि बड़ शिकस्त कय देने अछि ।''

भामा-''हमरो हाल तँ जनितँहि छी । आइ तीन वर्ष सँ उपजा वाड़ी एहने ओहने भेल गेल । खर्च तँ एको घड़ी माननिहार नहिं । सभटा भेले । ताके पहिलुका अहाँक भाइक जे किछु छलैन और अपनो जे किछु थोड़-बहुत गहना-तहना छल ताहि सभ सँ एतेक दिन चलौल । आब तँ किछु अछि नहि जे गुजरो चलत । तखनि दू हजार कोना हयत से नहि बूझि पड़ैत अछि ।''

योगे-'हँ से तँ यथार्थे !''

भामा-''तखनि तँ बौआ कुमारे रहताह ?''

योगे-''की कहू-बड़ मुश्किल लगैत अछि !''

भामा-''एना देह नड़वने कोना हयत बाबू ? हमरा लोकनि तँ अहीं पर छी।

योगे-''ऋण लेब छाड़ि दोसर तँ हमरा कोनो उपाय नहि सुझैत अछि ।''

भामा-''बेस तँ तकरे ठीक करू ।''

ऋण लेल गेल । योगेक कतेक आयास कयला पर दल्लूचन्द मारबाड़ी ऋण देलकैन्ह । भामाकेँ जतेक जमीन-जाल रहैन्ह से मकफूल कय देम पड़लैन्ह । सूद फी रुपये दू आना माहवारी । बेचन मिश्रक 8 वर्षीया कन्या मनोरमाक सङ्ग भामाक ''बौआ'' 16 वर्षीय हर्षनाथक विवाह सम्पन्न भेल । विवाहैक वर्ष हर्षनाथक द्विरागमन भेलैन्ह । चन्द्रमाक उदय भेलासँ जहिना लोक केँ अन्हरियाक दु:ख लोप भय जाइत छैक, तहिना पुतहुक मुँह देखितँहि भामा केँ ऋण प्रयुक्त संताप मोन सँ एकदम चल जाइत रहलैन्ह । आब सँ मनोरमे हुनक भरि दिनुक अनमना, आबेस क खेलौना अथवा प्रेमक पालना छलथिन्ह । परन्तु हा ! भामाकेँ ई सुख अधिक दिन धरि नहि लिखल

रहैन्ह । चारि वर्षक बाद अकस्मात् मृत्युक कठोर हाथ भामाकेँ मनोरमा लग सँ फराक कय देलकैन्ह । आब अपना आङ्गन मे रहलाह हर्षनाथ तथा हुनक अर्द्धाङ्गिणी मनोरमा।

माइक श्राद्ध ले हर्षनाथकेँ कतहु ऋणो नहि भेंटैन्ह । ऋण देन्हि लोक तँ कथी पर ? सभ तँ 'दल्लूचन्दायनम:' छलैन्ह । सहायक छलथिन्ह एक पित्ती योगे बाबू ।ओहो अपन दू बालिकक उपनयन हालहि मे करवने रहथि ताहि सँ अत्यन्त खर्चदारी मे पड़ि गेल छलाह । तथापि हुनकहि उद्योगे कहुना दल्लूचन्द और किछु टाका देलकैन्हि । ताहि सँ हर्षनाथ षोड़शी कय उत्तीर्ण भेलाह । परन्तु दल्लूचन्द एहना अवसर केँ कतहु हाथ सँ जाय देथि ? भामाक लिखल दस्तावेज केँ हर्षनाथ सँ पक्का करवाय लेलैन्ह।

x x x

आइ एकरा तीन वर्ष भय भेल । कालक कठोराघात सँ पीड़ित कुशतनु हर्षनाथ केँ विपत्तिक पङ्कमे धसल देखि हुनक इनार लगक पाथरो पसीझि करूणाक सागर मे निमग्न भय गेल । आइ हुनक जमीन जाल, घर-आङ्गन, सभ पर दल्लूचन्दक अधिकार भय गेलैक । हर्षनाथ ले संसार मे एको बीत स्थान नहि रहलैन्हि । मनोरमा कें अद्यावधि दुखसँ कहियो भेट नहि भेल रहैन्हि । हठात् एहि विपत्तिकेँ आगाँ देखि अधीर भय गेलीह । चारूकात अन्धकारमय बूझि पड़य लगलैन्हि । एहि अन्हरिया मे जे किछु भरोस छलैन्हि तँ भुगुजुगनी जकाँ हर्षनाथक पुरूषत्त्वक प्रकाशक । कि सुखल काठो पर लता अवलम्बित नहि रहैत अछि ? लताक हेतु वृक्ष आवश्यक छैक । वृक्ष चाहे केहनो होउक लताक लेखे समाने ! मनोरमा जाय हर्षनाथ के कहलथीन्ह-"कि करब ?"

हर्ष०-"जे दैव करबताह !"

मनो०-"से तँ अवश्य । परन्तु एखनि तात्काल कतय जायब ? एहि ठाम तँ आब जुनि रही । एहिठाम रहबे आब करब तँ कोन ठाम ? जँ भीखो माङ्गब तँ कतहु दोसरहि ठाम जा क।"

हर्षनाथक शोक उमड़ि उठलैन्हि । फूटि-फूटि कय कानय लगलाह । मनोरमोक आँखि सँ नोर खसय लगलैन्हि, परन्तु बड़े यत्न कय ओकरा सम्हारलैन्हि । योगे बाबू केँ मुइना आइ एक वर्ष भेलैन्हि । सुभद्रा केँ तँ ई लोकनि फुटलो आँखिये नहि सोहाइ छथीन्ह । हर्षनाथक पितियौत लोकनि नेनें छथीन्ह । तहू पर "न वन्धु मध्ये धनहीन जीवितम्"क शिक्षा ! जाथि त' जाथि कत ? परम अथुत मे दुनू गोटे पड़ल रहथि। एको कयने नहि बनैन्ह !

हर्षनाथ केँ कनैत देखि मनोरमा कहलथिन्ह-"कनने तं कोनो उपकार हयबाक सम्भव नहि । बिपत्तिक काल मे लोक कहैत छैक जे धैर्य धारण करक चाही ।"

मनोरमाक कोमल शब्द हर्षनाथक मोनक बिकलता केँ किछु शान्त कयलकैन्ह। हर्षनाथ कहलथीन्ह-कतय जाउ ?'

मनो-'चलू हमरा नैहर ।"

हर्ष०-'ई अनुरोध जुनि करी । अहाँकेँ बिसरि गेल जे ओहिबेर हम केहन अपमानित भेल रही । जे मनुष्य ओना करे, रुपेयेहि केँ अपन धर्म-कर्म सभ मानै, से कतहु हमरा लोकनि केँ राखि सकै ?"

मनो०-"हमरा भरोस अछि अपना माइक । लाखो किछु भय जाय ओ फेरि वैह अछि । जखन पेटे पोसब भेल तखनि माइएक सेवा कय पेट पोसी, सैह हमरा नीक बूझि पड़ैत अछि ।"

हर्ष०-"हँ से तँ ठीक । परन्तु हम दोसरे विचार मे छी ।"

मनो०-"कोन ?"

हर्ष०-"हम छी जे कतहु नोकरी करी ग'

मनो०-"कतय नौकरी करब ग ?"

हर्ष०-"बहुत लोककें देखैत छियैक जे कलकत्ता जाय मारि कमाइत अछि। हमहु ततहि जयबाक विचार कयने छी ।"

मनो०-"से जे नीक बुझी । परन्तु जा धरि नोकरी नहि हयत ताधरि तँ हमरा लइयो नहि जा सकैत छी !"

हर्ष०-"हँ ता धरि तँ नहिये । चलू ता अहाँकेँ अहाँक नैहरे क दय अबैत छी।"

x x x

आइ छौ मास हर्षनाथ के नोकरी करय गेना भेलैन्ह । एतबे दिन मनोरमा केँ नैहरो अयना भेल छैन्ह । हर्षनाथक आइ धरि ककरो किछु खबरि नहि आयल छैन्ह। कतय छथि, की करैत छथि, से बुझबाक सभकेँ उत्कंठा छैन्ह । परन्तु उत्कंठे रहने की ? हयबाक जे जखनहि होइ छैक तखनहि । आइ तक बटोही ओहि गाम बाटे जाइत छल । वेचन मिश्र सँ संयोगवस भेट भेलैक । ओहो कलकत्तहि सँ आयल छल । अतएव हर्षनाथक विषय मे वेचन मिश्र ओकरा पुछलथिन्ह । बूझि पड़लैन्ह जे हर्षनाथ निकें छथि और बड़ीबजार मे सुखचन्दरायक ऑफिस मे कोनो काज करैत छथि । ई कथा बेचन मिश्र आबि अङ्गना मे बजलाह । चातककेँ स्वातीक बुन्द भेंटलैक । मनोरमाक सुखायल हृदय जलसिक्त वनस्पति जेकाँ हरियर भय गेलैन्ह । "बड़ीबाजार" "सुखचन्दरायक ऑफिस" हुनक हृदय मे अङ्कित भय गेलैन्ह ।

मनोरमा जाहि दिन सँ अपना नैहर आयलि छथि, ताहि दिन सँ प्राय: एको दिन एहन नहि बितैत छैन्ह, जाहि मे हुनका अपमानित नहि होम पड़ैत छैन्ह । कहियो भामा

पर कटाक्ष होइत-होइत हर्षनाथ पर आबि मनोरमा पर बिसाइत छलैन्ह । कहियो मनोरमहि सँ दूर्वाक्षत शुरू होइत छलैन्ह और भामा पर जाक अन्त होइत छलैन्ह । जखनि पायर सन कठोर वस्तु पर घर्षण लगैत दाग भय जाइत छैक तखनि एक युवती स्त्रीक कोमल हृदय पर एहन मर्मभेदी कथा सभक दाग नहि पड़ै से कोना संभव ? परन्तु एतेक दिन मनोरमाक मनक संताप मोनहि मे रहि दिनानुदिन अधिकतर मनहूस बनौने जाइत रहैन। हर्षनाथक पता ठेकान बुझला पर आशाक किरण आइ हिनक ह्दयकलिका कें किछु विकसित कयलकैन्ह । मनोरमा संक्षेप मे अपन सभ हाल हर्षनाथ कें लिखलथिन्ह। चिट्ठीक अन्त मे छलैन्ह 'हम अहाँक निन्दा एहिना सुनैत रही, अपमानित एहिना होइत रही, से हमरा सहबा सँ बाहर बात अछि । तँहि जँ अहाँकें हमरा अपना लग रखबाक विचार नहि हो त' खुसी सँ मरबाक हुकुम दिय ।''

गामहि मे चिट्ठी खसयबाक ढ़ौल छलैन्ह । परन्तु टिकटक पैसा के दियै ? अगत्या एसकरे राति क बहराय बिन टिकटहि चिट्ठी डाकघरक ढ़ोल मे खसाय देलथीन्ह।

x x x

दिन पर दिन बीति गेल । मनोरमा कें चिट्टी खसबना आई डेढ़मास भेलैन्ह। किछु उत्तर नहि आयल छैन्ह । जै दिन बितैत छलैन्ह सन्ताप सँ मनोरमाक तय कनमा शोणित सुखायल जाइत छलैन्ह । कहाँ गेल हुनक रूप ? कहाँ लावण्य ? परन्तु बाहरे स्वभाव ! वाह रे शील ! अवश्य तोरा लोकनि विपत्तिक सङ्गी थिकाह ! धन्य छह!!

आइ भोजन कयला पर मनोरमा कें पत्रक चिन्ता करैत कनेक आँखि लगले छलैन्ह कि बेचन मिश्र अङ्गना अयलाह । हुनक स्वरूपे देखला सँ बूझि पड़ैत अछि जे क्रोध सं पकपकायल छथि । अपन स्त्री कें असोरा पर देखि जोर-जोर सँ कहय लगलथीन्ह ''देखै छी ! आइ काल्हिक लोकक चर्या । ओझा कें मनोरमा चिट्टी लिखने रहथीन्ह । ओत सं आपस अयलैन्ह । बैरनक सती दू आना कैंचो दंड लागल । देखु एहनो भला होइत छैक । हम पढ़ि दैत छी-सुनू ।''

ई कहि आद्योपान्त ओ चिट्टी कें पढ़ि देलथीन्ह । बेचन मिश्रक स्त्री सावित्री दम उपरे कयने सभटा सुनलैन्ह । जखन चिट्टी पढ़ब समाप्त भेलैक, तखनि हुनक दम नीचा अयलैन्ह । कहलथीन्ह-''आगे दाइ ! हमरा लोकनि पर एतेक घृणा ! कहै छै लोक जे जाहि गाछ तर रही तकरा नहि काटी । मनोरमा तँ सैह करय बैसलि छथि।''

जखनि बेचन मिश्र पत्र पढ़ैत छलाह, तखनि मनोरमाक नीन टूटि गेलैन्ह । ई सभ बात जकरे असोरा पर होइत रहैक मनोरमा ताही घर मे छलीह । बात बुझितहि मनोरमाक जी धक सनी उठलैन्ह । अनठाक फेरि पड़ि रहलीह और सभ बात सुनय लगलीह ।

अपन स्त्रीक कथा समाप्त होइतहि बेचन मिश्र कहलथीन्ह ''नहि-नागिन के दूध पियाक नहि पोसी । मनोरमाकें जत मन आबन्हि से जाथु । एहि ठाम आब एको घड़ी हम नहि रहय देबैन्ह ।''

सावित्री कें अपन पतिक प्रकृति बुझल छलैन्ह । बुझलैन्ह जे अनर्थ होम चाहैत अछि । बेचन मिश्रक माथ मे जे कोनो विषय जमि गेल तकरा ब्रह्मोक साध्य नहि जे हटाबथि । सावित्री कपैत 2 कहलथीन्ह-''अरे से कोना हयत ? लाख किछु हो फेरि थीक तँ सन्ताने । कत कय देबैक ? रहू हम ओकरा बुझा दै छियैक । एना नहि आब करति ।''

बे०मि०-''एहन सन्तान सँ विन सन्तानहि रहब नीक । कोनहु तरहें हुनक एहि आङ्गन मे रहब आब नहि भय सकैत छैन्ह ।''

सा०-''बेश अहाँ जाउ-ओ दोष मानि लेति । दोष तँ सभ सँ होइत छैक ।

बे०मि०-''दोषो से भेद छैक । एहन स्त्रिगण कें हमर घर मे वास नहि भय सकैत छैक । कहाँ गेलि कुल बोरनि ?

ता मनोरमा एहि कथा सभ सँ मर्माहत भय चित्ती चलावल नागिन जेकाँ घर सँ बहरैली । बेचन मिश्र झट् केस पकड़ि आङ्गन मे खसाय हुनका खुब लतियाय फज्झति करैत घर सँ बाहर कय देलथिन्ह । मनोरमाक एखनुका मोनक हाल पाठक अनुमाने कय लेथु । लेखनी मे ई शक्ति नहि जे तकर वर्णन करे ।

x x x

कलकत्ता आबि हर्षनाथ सुखचन्दरायक कोठी मे सरकारी[1] गछलैन्ह । पता छलैन्ह १० नं० पगाया पट्टी । कलकत्ता में तँ कतेक सुखचन्द राय छथि । मनोरमाक चिट्ठी पर त' कोठीक पता छलैन्हे नहि । हर्षनाथ ओ पावथि त' कोना पाबथि ? डेडलेटर ऑफिस[2] सँ होइत विशेषतया वैरन रहबाक कारणें ओ चिट्टी डेढ़ मास पर बेचन मिश्रक हाथ मे पड़लैन्ह। तकर परिणाम पाठक बुझियें गेल छथि ।

1. **सरकारी शब्द कलकत्ता मे अत्यन्त प्रचलित छैक । सरकारी शब्दें विल (अर्थात पौना) ओसूल करबाले नियुक्त, प्यादा विशेषक वोध होइत छैक ।**
2. **जाहि चिट्टीक पौनिहार नहि भेटैत छैक, से चिट्टी जाहि आफिस मे पठा देल जाइत छैक तकर नाम थिकैक ''डेड लेटर ऑफिस'' (अर्थात् मृत पत्रक ऑफिस)। एहि ठाम सँ पहिने चिट्टी लिखनिहारक पता लगौल जाइत छैक । जँ पता नहि लगलैक त' चिट्ठी फाड़ि देल जाइत छैक । अन्यथा लिखनिहार कें वापस कय देल जाइत छैक ।**

सुखचन्द राय कत नोकरी करैत 100 (एक सौ रुपया) अपन देही खर्च वर्च कय हर्षनाथ बचौने छलाह । ताहि सँ कहियो-कहियो मारवाड़ी सभक-सङ्गसौड़िये फाटका बाजी[3] खेलाय लगलाह । भाग्यक फेर एहने जे फाटकाक एक दलाल हिनका अत्यन्त मानय लगलैन्ह । ताहि सँ हिनका भितरिया हाल सभ बूझि पड़ैन्ह और हानि कम होइन्ह । अपना मोन मे हर्षनाथ सङ्कल्प कयने छलाह जे बिन दस हजार उपार्यन कयने मनोरमा के कलकत्ता नहि अनबैन्ह । आइ से दिन ईश्वर देखौलथीन्ह । आइ तूरक दाम बेसी चढ़ि गेलैक । हर्षनाथ केँ बीस हजार टका नफा भेलैन्ह । लोक हुनक भाग्यकेँ सराहय लगलैन्ह ।

नहि लगलैक त' चिट्ठी फाड़ि देल जाइत छैक । अन्यथा लिखनिहार केँ वापस कय देल जाइत छैक ।

ई लाभ भेलाक दोसरहि दिन मालिक सँ छुट्टी लय हर्षनाथ गाम जयवा ले छथि । मोटा भिनसरेसँ बन्हैत छथि । चिन्हार-जनार सँ जे देन-पौन छलैन्ह, से सभ साफ कयलैन्ह । आब ट्रेन इत्यादिक विषय मे बुझबा ले उत्कन्ठित छथि । सुखचन्दरायक मास्टर अखबार पढ़ैत बरण्डा पर बैसल छलाह । हर्षनाथ हुनका पुछलथिन्ह ''बाबू दरभङ्गा जाने का सब से कौन ट्रेन सुभीते का होगा ?''

मा०-''तीन बजे वाली गाड़ी मे चले जाव । आराम से चले जावगे । तुम दरभङ्गे मे कहाँ जावगे ?''

हर्ष०-''बाबू हम तो रहिका जाँयगे ।''

मा०-''अरे ! रहिका !! वहाँ की तो बड़ी भयानक खबर आज छपी है ।

हर्ष०-''क्या है बाबू ?''

मास्टर 'भारतमित्र' जोर सँ पढ़य लगलाह । ''दरभङ्गे का सम्वाद दाता लिखता है कि रहिका के बेचन मिश्र की लड़की मनोरमा बाप के चिढ़ाने पर आज रात को आत्महत्या कर ली । पुलिस जाँच कर रही है । सर्वत्र इसकी सनसनी है ।''

मास्टर कागज पर सँ आँखि उठाय देखथि तँ हर्षनाथक ठोर एकदम कारी, आँखि बाहर हयबा वर वृत्त देह थर-थर काँपैत । पुछलथिन्ह-''अरे तुम को क्या हुआ है? मनोरमा तुम्हारी कौन थी ?''

---

3. कम्पनीक 'शेयर' (अर्थात् हिस्सा)क खरीद विक्रीकेँ फाटकाबाजी कहैत छैक। ई एक प्रकारक-व्यापारी जूआ थिकैक । भाव खसला पर व्यापारी सभ शेयर खरीदि लैत अछि। भाव बढ़ला पर बेचि देत अछि । बीच मे जे नफा होइत छैक से ओकर अपन होइत छैक । एहि मे खरीद बिक्री बिन माल देखनहि खाली खबरिये पर होइत छैक । कलकत्ता मे जाहि स्थान पर एहन खरीद विक्री होइत छैक तकरा शेयर मार्केट (हिस्साक बजार) कहैत छैक ।

हर्षनाथकें-''स्त्री...अरे...सर्वनाश......'' कहैत-कहैत अन्हार भय गेलैन्ह । ओहि ठाम बैसि गेलाह । मास्टर तथा जे क्यो ओतय रहै से सान्त्वना देबय लगलैन्ह । इहो कतेक गोटे कहैन्ह जे कागज मे फुसियो छपैत छैक । मालिक अत्यन्त दयाशील व्यक्ति छलैन्ह । बहुत बोल-भरोस देलकैन्ह । सासुर जयवा पर राजी कयलकैन्ह और धर्मखाता सँ एक हजार रुपैया खैरात कय हिनका देलकैन्ह ।

हर्षनाथ रहिका पहुँचलाह । पहुँचितँहि सभ विषय ज्ञात भेलैन्ह । सासुर गेवो नहि कयलाह । फिरि, सिमरिया घाट जाय मनोरमाक अन्तिम क्रिया कयलन्हि । उत्तीर्ण भेलाक बाद निम्नलिखिल पत्र अपना मालिकक नामे लिखलन्हि ।

''श्री मान सेठजी ।

राम राम । हम यहाँ आये । कागज मे ठीक छपा था । हम अब किसके लिये रुपया बटोरें । हमारा तो अब दुनियाँ मे कोई नहीं रहा । आपने जो हमको एक हजार दिया था उससे क्रिया कर्म किया । मेरा जो बीस हजार रुपया नेशनल बङ्क मे जमा है उसका चीक' भेजते है। यदि गरीब पर दया हो तो सेवक का एक अन्तिम बात मान लीजिये । इससे मेरी स्त्रीके आत्महत्या करने के जगह पर एक इमारत बनवा दीजिये। बेअदवी माफ किजीये । अगर कोई गलती भई हो तो सो भी माफ कीजिये । सदा सुभ। [''चीक'' सँ ओहि पुर्जीक वोध होइत छैक जकरा देखवितँहि वङ्क ओहि मे लिखल रुपैया दयदैत छैक। प्रत्येक वङ्कक अपन-अपन फराक ''चीक'' रहैत छैक। प्रत्येक जमा कयनिहार के बङ्कक ''चीक बही'' दैत छैक ।]

आपका दीन सेवक

हर्षनाथ ।''

पत्रक सङ्गे चीक पठाय हर्षनाथ रातिये कतहु चल गेलाह । कतय गेलाह ?

X X X

मनोरमाक आत्मघात करबहिक दिन सँ बेचन मिश्रक प्रायश्चित करब प्रारम्भ भेलैन्ह । पहिने पुलिसक झंझट घरक आँटा खूब गील करौलकैन्ह । ताहि सँ उद्धार भेला पर स्त्री तथा दू छोट बालकक देहान्त भय गेलैन्ह । धने जने एकदम बैसि गेलाह। सङ्गहि सङग मानसिक अनुतापक द्वारे अपन शरीरो बैसि गेलैन्ह । अन्त मे कुष्ट रोग सँ आक्रान्त भय एहि संसार सँ विदा भय गेलाह । दश वर्षक एक बालक केँ छोड़ि क्यो कननिहार नहि रहलैन्ह ।

ओहि टोल पड़ोसक लोक मे क्यो वाजै जे ''नीक भेलैन्ह जे मरि गेलाह । वड़ कष्ट मे छलाह ।''

क्यो टिप्पणी करैन्ह–"क्यो अपने कयल पबैत अछि ने–एहि संसार मे तँ एक हाथे करू एक हाथे पाउ । जेहन करनी तेहन फल ।"

एकरा वितना आई नौ वर्ष भय गेल । लोक क्रमहि क्रम सभ बिसरि गेल। सुखचन्द राय हर्षनाथक कहलाक मोताबिक बीस हजार रुपैया सँ मनोरमाक आत्मघात करबाक स्थल मे एक मकान बनवाय एक मिडिल इङलिश स्कूल खोलि देलथीन्ह । ताहि मे जे बेसी लगलैक से अपनहि देलथीन्ह । छौ वर्ष सँ ई स्कूल नीक जेकाँ चलि रहल छैक । कि एहि सँ मनोरमाक आत्माकेँ शान्ति पहुँचबाक संभव ?

X X X

आइ काल्हि आनन्दानन्द नामक एक सन्यासी दरभंगाक प्रान्त मे घुमैत छथि। हिनक जेहने दिव्य स्वरूप छैन्ह तेहने गुणो । रोग कंहनो सँ कंहनो कियैक नहि हो, तकरा छोड़ायब तँ हिनक बामा हाथक खेड़ि छैन्ह । परोपकार करबा मे अपन जीवन केर ई घासो सँ कम परवाहि करैत छथि । अतएव देश भरि हिनक दासानुदास छैन्ह। जतय जाइत छथि गरोहक गरोह लोक हिनक पाछू चलैत छैन्ह । लाख मनो कयला पर एहि विषय मे हिनक हुकुम क्यो नहि मानैत छैन्ह । परसू सँ सौराठक सभा हयतैक। रहिकहि जाय आइ संध्या भेलन्हि । लोक केँ ओहि मनोरमाक स्मृति मे बनौल गेल पाठशाला द पुछलथीन्ह । हाल सुनैत-सुनैत नोर खसय लगलैन्ह । कि मानसिक दुर्बलता हुनका पर अधिकार पौलक ? अथवा मनुष्यक अधःपतन पर विचार करैत हुनक ई दशा भेलैन्हि ? पाछाँ कातर स्वरे कानय लगलाह । लोक पुछलकैन्ह–"एना कियैक कनैत छी ?"

उत्तर देलथीन्ह–"स्मृति कनबैत अछि । समाजक दशा कनबैत अछि । हमहुँ सन्यासी हयवा सँ पहिने मैथिले छलहुँ । हमरे नाँव छल हर्षनाथ झा । ई पाठशाला पाठशाला नहि, हमर मृत पत्नी मनोरमाक मूल्य स्वरूप थीक । यावत् ई मकान रहत तावत् विन किछु बजनहि कन्या विक्रयक भीषण परिणाम मे सँ एकटा उदाहरणक गवाही दैत रहत । यद्यपि सभ विषय अहाँ लोकनि जनितँहु छी । ई स्कूल यद्यपि वारम्वार ओकर स्मरण करबितहुँ अछि, अहाँ लोकनि मनुष्यक मोल-मोलाइ करब नहि बन्द करैत जाइत छी । एहि सँ बाढ़िक कनबाक और कोन विषय हयत ?"

सभलोक किछुकाल तक विस्मित रहल । ई कथाक सर्वत्र प्रचार भय गेलैक। लोक कन्या विक्रय पर विचारय लागल । तकर फल स्वरूप एहि बेरि सँ सौराठ मे रुपैयाक गननाइ एकदम बन्द भय गेल ।

॥ इति ॥ 

अध्ययन

पंकज कुमार झा

शोषण सँ प्रतिरोध धरि

यात्रीक बलचनमाक एक अध्ययन

आधुनिक कालक अनेक साहित्यिक कृति मे समाज-विज्ञानक विभिन्न क्षेत्रक उपलब्धि सँ विलक्षण तालमेल देखबा मे अबैत अछि । तथ्यात्मक एवं विचारात्मक स्तर पर ई समानता सामाजार्थिक परिवर्त्तनक क्षेत्रमे अनुभवक एकरूपताक कारणें आयल अछि । परिवर्त्तनक एहि कालचक्र केँ गतिमान बनेबा मे ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतिक महत्त्वपूर्ण योगदान रहल अछि। वस्तुतः उपनिवेशवादी आर्थिक व्यवस्था सामाजिक संरचना केँ सेहो प्रभावित कएलक । कृषि आधारित सामाजिक संरचना मे परिवर्त्तन होएब शुरू भऽ गेल आ एहि स्थिति केँ तत्कालीन प्रगतिशील साहित्यकार अपन कृति मे समावेश करबाक प्रयास कएलनि । बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क **बलचनमा** एहि तथ्यक प्रमाण थिक ।

बलचनमाक सामाजिक आधार तकबाक क्रममे हमरा सभकेँ किछु पाछाँ जाय पड़त। हम सभ जनैत छी जे मिथिला मे 1793 ई० मे स्थायी बन्दोबस्त (Permanent Settlement)क व्यवस्था कयल गेल आ तकरे परिणाम छल जमींदारी प्रथा । स्थायी बन्दोबस्त केवल जमींदारी प्रथाक जन्म नहि देलक, कृषि जीवन सँ संबंधित किछु दूरगामी प्रभावक काज सेहो कएलक। तिरहुतक तत्कालीन कलेक्टर ठीके लिखने छथि: In making the zamindars, in act as well as in name, lords paramount of the soil, their object and helpless vassals, the raiyats, trained upto hereditary submission, will bear in silence and secret dread whatever their imposing tyranny may inflict."1 स्पष्ट अछि जे खेतिहर सभक जमींदारक द्वारा शोषण भयंकर रूप सँ भऽ रहल छल । भूस्वामी लोकनि खेत सँ होमएवला आयक 88% अपने लैत छलाह आ शेष खेतिहर लेल छोड़ि दैत छलथिन ।[2]

शोषणक ई प्रक्रिया लगानीक क्रमिक बृद्धिसँ आओर भयानक भऽ गेल । खेतिहर समुदाय सँ दरभंगा महाराज, मधुबनी ड्यौढ़ीक बाबूलोकनि तथा महाराजक किछु

बिचौलिया सभ द्वारा सेहो लगान वसूलल जाइत छल । कहबाक प्रयोजन नहि जे बिचौलिया सभ निश्चित रूप सँ उच्च जातिक होइत छलाह । यादव, धानुक, कोइरी, मल्लाह, आदि सभ निम्न जातिक लोक एहि शोषणक शिकार होइत छल । जे० एच० केर दरभंगाक सर्वेक्षण आ बन्दोबस्ती प्रतिवेदन (Survey and settlement Report) मे साफ लिखने छथि कि बाबू गुणेश्वर सिंह सन दोसर दमनकारी आ शोषक भूस्वामी उत्तर बिहार मे हमरा नहि भेटल ।[3] केर साहब अपन प्रतिवेदन मे शोषण प्रक्रियाक उल्लेख सेहो कएने छथि । अन्य भूस्वामी सभ खेतक लगान जतए चारि किस्त मे लैत छलाह, बाबू गुणेश्वर सिंह 14 आना वसूली सालक शुरुए मे कऽ लैत छलाह आ दू आना वसूली बाद मे करैत छलाह । जें कि अधिकांश रैयत पहिल किस्तक सभ टाका देबाक स्थिति मे नहि होइत छल तें ओकरा गामक महाजन लग जेबाक लेल बाध्य होमए पड़ैत छलैक आ तखन ओ कर्ज कऽ किस्त दैत छल । अन्न उपजला पर महाजन सभ बाबू साहेबक बहियाक संग किसानक ओहिठाम जाइत छल आ देल गेल टाकाक वसूली अन्नक माध्यम सँ करैत छल । अन्नक दाम बाजार भावसँ बहुत कम लगाओल जाइत छलैक तथा देल गेल कर्ज पर सूद जोड़ि कऽ हिसाब होइत छलैक । केर साहब अपन प्रतिवेदन मे राय गंगा प्रसाद नामक एक महाजनक उल्लेख सेहो कएने छथि ।[4]

खेत मजदूरक शोषण अनेक तरहें कएल जाइत छल । लगान तऽ कानूनी रूप मे लेब आवश्यक छल, शोषणक अभीष्ट पूर्ति कतेको गैर-कानूनी माध्यम सँ सेहो होइत छल। एहिमे सभसँ बेसी प्रचलित छल अबाव नामक प्रथा । एहि प्रथाक अन्तर्गत अनेक प्रकार सँ खेतिहर-मजदूरक शोषण होइत छलैक । एहि मे प्रमुख छल हारी आ बेगारी । हारी अबावक अन्तर्गत भूस्वामी खेतिहरक हर, बड़द अथवा ओकर श्रमक उपयोग बिना कोनो भुगतान कंने कऽ सकैत छलाह । तहिना ओहि मजदूर सभकें बेगारक रूप मे खटेबाक प्रथाकेँ बेगारी कहल जाइत छल । ऐहने अन्य तरीका सभ छल, खदारी, दस्तूर, रूसूम, चौधिरियत, इत्यादि ।[5] एहि सभ माध्यम सँ भूस्वामी अथवा जमींदार लोकनि कृषक मजदूरक शोषण करैत छलाह। खेतिहर किसान सभ पराश्रित छल आ चुपचाप एहि अन्याय कें सहैत छल । तिरहुतक तत्कालीन कलेक्टर खेतिहर मजदूर द्वारा बिना कोनो प्रतिवाद कें एहि सभ प्रकारक अत्याचार कें सहबाक कारणक उल्लेख कएने छथि ।[6] कारण जे हो' मिथिला मे कृषि मजदूरक शोषण चरम पर छल आ कृषि मजदूर लग मौन भाव सँ ओकरा स्वीकार करबाक अतिरिक्त दोसर कोनो उपाय नहि छलनि ।

एहिठाम एकटा आओर तथ्य ध्यान देबाक थिक । शोषणक एहि प्रक्रिया सँ उच्च जातिक अपेक्षा निम्न जातिक लोक बेसी प्रभावित छल । पहिल बात तँ ई छल

जे कर वसूलवाक कोनो निश्चित तरीका नहि छलैक । भूस्वामी लोकनि स्वेच्छा सँ कर निर्धारित करैत छलाह आ एकें प्रकारक भूमि लेल उच्च जातिक लोक सँ कम आ निम्न जातिक लोक सँ अधिक कर लैत छलाह । 'एक परगनाक तऽ कोन कथा, एक गामक एक्के बाध मे खेत रहलाक बादो उच्च आ नीच जातिक लोक सँ कर लेबा मे भिन्नता छल । बुकानन एहि प्रसंग मे लिखने छथि:- "The high castes, that is the most indolent are encouraged by paying a very low rent, while those who are industrious are reduced to beggary by enoromous exactions."[8]

मोटा-मोटी इएह छल मिथिलाक कृषि आधारित सामाजिक संरचना । स्वाभाविक अछि जे एहि सामाजिक व्यवस्था मे आर्थिक असंतुलन उत्पन्न हो आ तकर परिणामस्वरूप खेतिहर मजदूरक मोन मे एक प्रकारक असंतोष एवम आक्रोशक उदय हो । मुदा एकर एक परिणाम ईहो भेल जे किसान मे एक प्रकारक चेतना आयल । एतऽ ई बात कहब आवश्यक जे शोषणक प्रक्रिया जतेक तीव्र हेतैक, शक्तिक केन्द्रीकरण जतेक घनगर हेतैक ततबे तीव्र ओकर प्रतिक्रिया सेहो हेतैक, प्रतिरोधी चेतनाकेँ विकसित हेवाक मार्गो प्रशस्त हेतैक । उपनिवेशकाल मे सत्ता केन्द्रित छल ब्रिटिश सरकार, जमींदार आ ओकर अम्लाक हाथ मे तथा शोषणक शिकार होइत छलाह कृषक मजदूर, समाजक भूमिहीन आ निर्धन व्यक्ति । यात्रीजीक बलचनमा शोषक आ शोषितक एहि संबंध कें, ओकर स्थिति आ प्रतिरोध कें बहुत सफलतापूर्वक रेखांकित करैत अछि ।

मुदा, बलचनमा मैथिलीक पहिल रचना नहि थिक जाहि मे शोषणक मादे विचार कएल गेल हो । शोषक आ शोषितक स्थितिकेँ देखार करएवला एकटा प्रसिद्ध कथा अछि कांचीनाथ झा 'किरण' लिखित 'धर्मरत्नाकर' जकर प्रकाशन 1941 ई० मे भेल छल । एकर कथ्य कें संक्षेप मे प्रस्तुत करैत मोहन भारद्वाज लिखैत छथि, "जमींदारी शोषणक विरूद्ध उठैत आक्रोश कें ई कथा प्रखरता दैत अछि । उपनयन आ उपाधि टाकाक खेल थीक । धर्माचार आ मान-मर्यादा अर्थक अभिव्यक्ति थीक । अर्थपरक सामाजिक व्यवस्था आ ओकर कर्मकाण्डक तहकें खोलैत 1941 इसवीक ई कथा मैथिली कथा साहित्य मे ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि ।"[9]

स्पष्ट अछि जे सामन्ती समाज मे संपन्न आ विपन्न वर्गक संबंध विरोधमूलक होइत अछि । संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था संपन्न वर्गक हाथ मे रहैत अछि । तें सामाजिक मान्यता, रीति-नीति, आचार-विचार आदि विभिन्न स्तर पर संपन्न वर्गक प्रभुत्व तथा निर्बल लोकक असहायता देखार होइत अछि । एहि ठाम मोन पड़ैत अछि 1910 ई० मे तत्कालीन दरभंगा महाराज रामेश्वर सिंह द्वारा स्थापित मैथिल महासभाक उद्देश्य जाहि मे राज-भक्ति आ सदाचार पालन कें मुख्य स्थान देल गेल छल ।[10] साफ अछि

जे राज भक्तिक मान्यता राज्यक उत्पत्तिक दैवी सिद्धान्तक प्रचलनक द्योतक थिक जाहि मे राजा कें देवता तुल्य मानि कऽ भक्ति रखबाक उपदेश देल गेल अछि । एहि ठाम ईहो मोन पाड़बाक थिक जे मैथिल महासभाक सदस्य कें 'सभ्य' कहल जाइत छल आ केवल मैथिल ब्राह्मण तथा कर्ण-कायस्थक लेल एकर सदस्यता सुरक्षित छल । एकर अर्थ ई भेल जे एहि दुनू जाति सँ बाहरक लोक मैथिल महासभाक सदस्य हेबाक पात्रता नहि रखैत छल, कारण ओ सभ्य नहि छल अथवा असभ्य छल । एहि आधार पर समाजक विभाजन सामन्ती मानसिकता कें प्रदर्शित करैत अछि । एहि समाज मे निम्न जातिक व्यक्ति अनेक प्रकारक बंधन सँ ग्रस्त छल । एतेक धरि जे अपन दैनिक आवश्यकताक पूर्त्ति लेल ओ पोखरि खुनि कऽ पानिक व्यवस्था करैत छल तऽ सेहो राज द्वारा अधिकृत कऽ लेल जाइत छलैक । कोनो प्रकारक जलाशय ओ सभ बिना राजक अनुमति कें नहि खुनि सकैत छल आ जँ खुनितो छल तऽ ओकर लाभ ओकरा नहि भेटैत छलैक। जिला गजेटियर मे एहि प्रकारक कतेको उदाहरण देल गेल अछि ।[12]

कहबाक अभिप्राय ई जे गरीब लोकक आर्थिके शोषण नहि, सामाजिक शोषण सेहो होइत छल । जीवनक जतेक आयाम अछि-आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, दैहिक वा रागात्मक ओहि सभ बिन्दु पर गरीबहाक शोषण कएल जाइत छल । शोषणक एहि पराकाष्ठा कें आ संगहि ओकर प्रतिक्रिया मे होइत प्रतिरोधात्मक गतिविधि कें किरणजीक 'धर्मरत्नाकार' मे मुखर कएल गेल अछि । किन्तु रचनाकार 'धर्मरत्नाकार' मे रैयतक पराजय देखबैत छथि । भूस्वामी वर्ग लग ओकर किछु नहि चलैत छैक आ ओ मारल जाइत अछि । समाज आ सामाजिक गतिविधि पर जमींदारक नियंत्रण कें ई कथा स्वीकारैटा नहि करैत अछि, जमींदार कें धर्मरत्नाकरक उपाधि सँ सेहो सम्मानित कएल जाइत छैक-सेहो पण्डित लोकनिक द्वारा जे जमीन्दारक नियंत्रण आ शोषण कें धर्मक सोङर द' आर मजबूत करैत छलाह । बलचनमा मे मुदा से नहि होइत अछि । **बलचनमा** सामाजिक विकासक प्रक्रिया मे आगाँक अनुभव आ बोधक कथा कहैत अछि ।

यात्रीक **बलचनमा** एहि शताब्दीक चारिम आ पाँचम दशकक मिथिला मे संपन्न आ विपन्न वर्गक बीचक संघर्षक विभिन्न आयामक गाथा थिक । एहि उपन्यास मे सामन्ती जीवन पद्धतिक चित्रणक संगहि ओहि सँ मुक्तिक प्रयास कें सेहो देखार कएल गेल अछि । बलचनमा एकटा पैघ जमींदारक घरेलू नौकर छल । ई काज ओकरा चौदहे वर्षक आयु मे शुरु करए पड़लैक-कारण, जमींदारक निर्दयताक परिणामस्वरूप ओकर बापक मृत्यु भऽ गेलैक आ जमींदारकें बहियाक आवश्यकता पड़लनि । ओहि अवस्था मे बलचनमा जमींदारक दरबार मे प्रवेश करैत अछि । हुनक दमनात्मक कार्य-कलापक

भोक्ता होइत अछि । मुदा, बदलैत सामाजिक परिवेशक चलते ओकरा मे चेतना अबैत छैक । उपनिवेशवादक विरूद्ध लड़ैत कांग्रेसी नेताक प्रति ओकरा मोन मे आदर जगैत छैक । ओ गान्धीवादी विचारधारा आ नैतिकताक मापदंड सँ प्रभावित होइत अछि । कालान्तर मे ओकर संक्रमण समाजवादी विचारधारा दिसि होइत छैक आ ओ कांग्रेसक भीतर समाजवादी सिद्धांतक लोकक प्रति आकृष्ट होइत अछि। एहि समय मे बलचनमा किसान सभा सन संगठनक संग सेहो जुटैत अछि । जमींदारक बहिया सँ कांग्रेसक स्वयंसेवी बनब आ फेर कामरेड बनि जायब किसान आंदोलनक परिवर्त्तनशील भूमिकाक प्रतीक थीक । प्रसिद्ध समाजशास्त्री महेन्द्र नारायण कर्ण [13] एहि प्रसंग कें बहुत विस्तारपूर्वक लिखने छथि ।

मुदा, एकटा बात ध्यान देबाक ई थिक जे यात्रीजी बलचनमाक जीवनक विकास अपन सैद्धान्तिक विचारधाराक अनुसार तऽ करैत छथि, किन्तु अपन सिद्धान्तक आग्रह मे यथार्थ कें छोड़ि कऽ आगाँ नहि बढ़ैत छथि । बलचनमाक जीवन किसान आन्दोलनक गतिविधि मे होइत परिवर्त्तनक संग चलैत अछि । यात्री मार्क्सवादी विचारधाराक पक्षधर भइयो कऽ बलचनमाकें ओहि विचारधाराक विजेताक प्रतीक रूप मे प्रस्तुत नहि करैत छथि । कारण, यात्री कें मार्क्सवादी विचारधारा आ किसान आंदोलनक सीमा आ सामर्थ्यक ज्ञान छलनि, तें एकटा यथार्थवादी उपन्यासकारक रूप मे ओ बलचनमा कें सेहो ओहि सीमा आ सामर्थ्यक भीतरे रखैत छथि । ज्ञातव्य जे यात्रीजी स्वयं किसान आन्दोलन सँ जुड़ल छलाह । 1938 ई० क सारण जिलाक प्रसिद्ध आमबारी किसान सत्याग्रहक तेसर गुटक नेतृत्व ओ कएने छलाह। एकर पहिल गुटक नेतृत्वक राहुल सांकृत्यायन कएने छलाह । संगहि 1946-47 ई० मे यात्री दरभंगा जिला किसान सभाक अध्यक्ष सेहो छलाह ।[14]

यात्रीजी अपन उपन्यास **बलचनमा** मे समाजक विभाजन सुच्चा मार्क्सवादी दृष्टिकोण सँ करैत छथि । जाति आ धर्म सामाजिक विभाजनक आधार नहि बनैत अछि । भूस्वामी वर्ग मे छोटे बाबू आ फूल बाबू सदृश ब्राह्मण जातिक लोक छथि आ हुनका संग छथिन महपूरा गामक खान बहादुर जे मुसलमान छथि । दोसर दिस मजदूर वर्ग अछि जाहिमे छथि फूदन मिसर (ब्राह्मण) करीम बख्श (मुसलमान), आदि । एहि मार्क्सवादी दृष्टिकोणक समर्थन तखनो होइत अछि जखन हम देखैत छी जे तारानंद बाबू, बंभोल झा, तिरी अमात, रामखेलावन आ कपिलेशर झा आदि एक संग कम्यूनिस्ट पार्टीक समाचार पत्र **क्रान्ति** पढ़ैत छथि । एहि विभिन्न जातिक लोकक वर्गीय आधार एक छैक ।

शोषक आ शोषित वर्गक संघर्षशील संबंध कें बहुत विस्तार सँ एहि उपन्यास मे राखल गेल अछि । मिथिलांचल मे जमीनक मालिक किछु खास गोटे छलाह । हुनका चास आ वास दुनू प्रकारक जमीन पर अधिकार छलनि । भूस्वामीक ई वर्ग

जीवनक सभ प्रकारक सुखक उपभोग करैत छल । एहि मे ओकर सहायक होइत छलैक सामन्तवादी तथा उपनिवेशवादी माध्यम सभ । कोर्ट-कचहरी, प्रशासन तंत्र, पुलिस व्यवस्था आदि सभक साझीदारी भूस्वामीक ओहि वर्ग सँ छलैक । बलचनमा फूल बाबूक मादे कहैत हुनक दादा आ परदादा पर चलि जाइत अछि । दादा लगानी लगबैत छलखिन, परदादा जे बनैली राज मे तहसीलदार रहथि सेहो सएह करैत रहथिन । कहबाक तात्पर्य जे लगानी लगायब, महाजनी करब आ सूदक कमाइ खाएब तथा गरीबहाक खून चूसब हुनक खानदानी पेशा छलनि । बलचनमा सन जनबनिहार लग जे दू चारि धूर डीह रहैक तकरो निलामी करा लेल जाइत छलैक । बलचनमा साफ कहैत अछि जे अदालत हुनकर; हाकिम, थाना-दरोगा हुनकर । बलचनमा सन गरीबक लेल ई सभ किछु नहि रहैक; ओकरा लेल रहैक केवल गारि-सराप आ लात-जूता ।

सामाजिक शोषणक एहि प्रक्रिया मे जमींदारक अमलाक हाथ सेहो कम महत्त्वपूर्ण नहि छल । बलचनमा जखन राधा बाबूक जमींदार ससुरक अमलाक बात कहैत अछि तखन ज्ञात होइत अछि जे अमलो सभ शोषणक केहन-केहन कुकृत्य करैत छल । ओकरा सभकेँ जमींदार सँ दरमाहा कम भेटैत रहैक आ तें चोरी आ सीनाजोरी सँ टाकावला बनब आ मौज करब ओकर सभक जीवन-पद्धति भऽ गेल छलैक । यात्री एहि उपन्यास मे शोषणक एहि शान्तिमय कार्रवाई मे पंडित आ मौलवीक भूमिका केँ सेहो उजागर करैत छथि । एहि प्रसंग मे ओ घटना मोन रखबाक थिक जखन बलचनमा केँ बहिया बनेबाक लेल मालिक बजौने छलखिन । ओहिठाम पंडितजी सेहो बैसल छलाह । ओ अपन पंडिताइ झारैत कहने रहथिन कि जे बहिआ मालिक केँ प्रसन्न रखैत अछि ओकरा लेल स्वर्ग मे अमृतक धार बहैत छैक। एहि शरीरक उपयोग मालिकक सेवा मे होअए एहि सँ पैघ बात की भऽ सकैत अछि । ऐहन अनेक प्रसंग उपन्यास मे आयल अछि जे प्रमाणित करैत अछि जे भूस्वामी, पुजारी आ उपनिवेशवादी शासन-पद्धति मे आन्तरिक साँठ-गाँठ छलैक । एहि तीनूक सम्मिलित अभियानक परिणाम छल निर्धनक शोषण।

यात्रीजी जखन संपन्न आ विपन्नक दू वर्ग मे समाजकेँ विभाजित देखबैत छथि आ संपन्न वर्गक अन्तर्गत उपनिवेशवादी प्रशासक, जमींदार तथा धर्माचार्य केँ सम्मिलित रूप मे रखैत छथि तखन दोसर दिस ओ विपन्न वर्गक ध्रुवीकरण पर सेहो ध्यान दैत छथि । किसानक शोषण भऽ रहल छल मात्र एतवे कहि कऽ हुनका संतोष नहि होइत छनि । एकटा मार्क्सवादी सिद्धान्तकारक रूप मे ओ किसान शब्द केँ परिभाषित करैत छथि आ ओहिमे मध्यमवर्गीय खेतिहर, सीमान्त खेतिहर, भूमिहीन कृषि मजदूर, बटाइदार, काश्तकार, बढ़इ तथा मल्लाह तककेँ शामिल करैत छथि । पारंपरिक मार्क्सवादी दृष्टिकोण सँ भूमिहीन खेतिहर मजदूर केँ किसान नहि कहल जाइत छल । स्वामी सहजानन्द पहिल बेर एहि वर्गक लोककेँ किसानक कोटि मे अनलनि । तहिना मल्लाह केँ सेहो

किसान नहि मानल जाइत छल । प्रसिद्ध विचारक रेमण्ड फर्थ अपन पुस्तक **'द मलाय फिसरमैन: देयर पीजेन्ट इँकोनमी** मे मल्लाह केँ किसानक दर्जा देलनि । यात्रीजी स्वामी सहजानन्द तथा रेमण्ड फर्थक मान्यता केँ **बलचनमा** उपन्यास मे पुष्ट करैत छथि । किसान आंदोलन सँ घनिष्ठ रूपें संबंद्ध होएबाक ई परिणाम छल । जुगल कामत सन मल्लाह केँ किसानक श्रेणी मे आनि कऽ ओ निर्धनक संगोर करबाक अभियानकेँ बल प्रदान करैत छथि ।

एहि प्रकारें यात्रीजी **बलचनमा** उपन्यास मे मैथिल समाजक वर्गीय विभाजन, ओकर स्वरूप तथा ओहिमे सम्मिलित लोकक ध्रुवीकरण केँ स्पष्ट कयलाक बाद संपन्न वर्ग द्वारा विपन्न वर्गकेँ शोषणक विभिन्न आयामकेँ रेखांकित करैत छथि । मुदा, हुनक उद्देश्य एतबे नहि छनि । ओ ईहो देखबैत छथि जे शोषणक एहि स्थिति सँ समाजक एक वर्गकेँ असंतोष छलैक । असंतोषक परिणाम आक्रोश मे भेलैक आ आक्रोश सँ एकटा एहन चेतना उद्भूत भेल जे वर्ग-चेतनाक रूप मे महत्त्वपूर्ण बनल । यद्यपि स्थिति आ ओकर विकास जतेक सरलीकृत ढ़ंग सँ एहिठाम कहल गेल अछि तेना नहि होइत अछि, आ उपन्यासो मे तेना नहि भेल अछि मुदा ओकर अंतिम परिणति शोषणक प्रतिरोध मे ठाढ़ वर्गवादी चेतना मे भेल अछि ताहि मे सन्देह नहि ।[15]

मिथिलांचल मे, देशक आने भूभाग जकाँ, राजनीतिक चेतनाक विकास एकाएक नहि भेल । ओहि मे एकटा क्रम रहलैक अछि, ओकर एकटा सीढ़ी रहलैक अछि। तें सीढ़ीक पाया सभ पर सेहो यात्री ध्यान देलनि अछि । एहि मे सन्देह नहि जे संपूर्ण भारत मे, मिथिलांचल मे सेहो, राष्ट्रीय कांग्रेसक स्वतन्त्रता आन्दोलनक गतिविधि सँ आम लोकमे राष्ट्रीय चेतनाक विकास भेल । कांग्रेस, ओकर गतिविधि आ ओकर सिद्धान्तक प्रति आकर्षण होएब राजनीतिक चेतनाक विकासक पहिल सीढ़ी छल । बलचनमाक जीवनमे सेहो सैह भेलैक । ओ फूल बाबूक संपर्क मे आयल जे एकटा कांग्रेसी कार्यकर्त्ता छलाह । हुनका माध्यम सँ बलचनमा केँ उपनिवेशवादी शक्तिक विरूद्ध चलैत आन्दोलनक ज्ञान भेलैक । ओ महात्मा गान्धीक विचार सँ परिचित भेल। ओहि दिस ओकरा आकर्षण सेहो भेलैक । एहि ठाम यात्रीजी आम लोक पर गान्धीक प्रभाव केँ ओकर स्वाभाविक रूप मे रखलनि अछि । ई बात सत्य अछि जे गान्धीक असहयोग आन्दोलन, चरखा आन्दोलन, नमक सत्याग्रह आदिक प्रभाव आम लोक पर पड़ल छलैक, मुदा एहि सँ बेसी प्रभावकारी छल गान्धीजीक चामत्कारिक छवि जे गलंजरक माध्यम सँ प्रचार-प्रसार पाबि रहल छल । बलचनमा तें हुनका संबंध मे जे कहैत अछि से ध्यान देबाक योग्य अछि ।

''महात्माजीक नाँव सुनने तऽ हम अवस्से रही आ सुननो एना रही जे सरकार बहादुर सँ केओ लोहा लऽ सकैत अछि तऽ गान्धी महात्मा लऽ सकैत छथि, अंग्रेज

बहादुर के ओ नाक मे कौड़ी बान्हि देलखिन अछि । सरकार हुनका सँ हरान-हरान अछि । गाँधी के पकड़नाइ आ पानि मे आगि लगेनाई दुनू मुश्किल अछि । महात्माजीकेँ अफसर लोकनि जहलखाना मे राखि रैत छैन्हि, मुदा भैया दोसरे दिन हुनका दोसर ठाँव खराम पहीर कऽ टहलैत देखि सरकार बहादुर के पेटक पानि डोलऽ लगैत छैक। बम्बई मे पकड़ि कऽ बंद कैलकनि तऽ लोक महात्माजी के कलकत्ता मे देखलकैन। अहमदाबाद मे पकड़ल गेलाह तऽ मद्रास मे मीटिंग करैत पाओल गेलाह । मनियार ककाक मुँह सँ सुनने रही जे गाँधी महात्मा के पूनाक जेलर खिसिया कऽ कोल्हू मे जोति देलकनि आ दू मोन सरिसो पेरबाक लेल कहलकैन । जेलर सोचने होयत जे दुबर-पातर कमजोर आदमी छथि, कोल्हू मे कि बहता, माफीनामा लिखि कऽ बैस जेताह । मुदा भैया, मनियार कका कहलैनि जे गाँधी बाबाक हाथ लगिते देरी अपनहि दुनू मोन सरिसो करू तेल मे बदलि गेलैक । मनियार काका कहैत छलाह-कारी पहाड़ जकाँ दूटा बड़का बड़का बेताल गांधी महात्मा के दासो दास भऽकऽ हुनका संग चलैत छैन । ओहि बेताल लोकनिक ई खेल रहैक....एहि तरहक अजीब बात सँ भरल गाँधी महात्माक नाँव जखन हमरा जिला जबार मे फैललनि, तखन हमरा कान मे हुनकर नाँव पड़ल ।''[१६]

बलचनमाक लेल जेना गान्धीक संबंध मे पसरल ई अफवाह सभ महत्त्वपूर्ण छल तहिना ईहो बात ओकरा दृष्टिमे महत्त्व रखैत छल जे इलाकाक बाबू भैया लोकनि सोराजी बनि गेल छथि । चरखा कटैत छथि । नीचाँ मे सुतैत छथि । सामान्य लोक जकाँ रहैत छथि। बाबू भैया लोकनिक आ हुनक दिनचर्याक जे छवि ओकरा दिमाग मे छलैक ताहि सँ भेल विचलनक ई रूप सेहो ओकरा कांग्रेसक प्रति आकृष्ट केलकैक। मुदा हम सभ जनैत छी जे 1934-35 क आसपास बिहार मे किसान आन्दोलन जोर-शोर सँ चलि रहल छल । भूस्वामी आ खेतिहर मजदूरक बीच जमीन केँ लऽ कऽ संघर्ष शुरू भऽ गेल छल । किसान सभा जन-मजदूरक संग दऽ रहल छल । एकटा नव वातावरण बनि रहल छलैक । विपन्न लोकक मानसिकता बदलि रहल छलैक । ओकरा मे किसान आन्दोलनक प्रति, जन-मजदूरक अधिकारक प्रति चेतना जागि रहल छलैक।

बलचनमा केँ कांग्रेसी सभक माध्यम सँ बात बुझबाक अवगति भऽ गेल रहैक। तें ओ किसान आन्दोलनक गतिविधि केँ ध्यान सँ देखैत छल । किसान सभाक नेतृत्व मे बकाश्त भूमि सँ संबंधित आन्दोलन तेज भऽ गेल रहैक । एहि बीच मे एकटा घटना ऐहन भेलैक जे ओकर दृष्टिकोण केँ ठामहि बदलि देलकैक । छोटे मालिक ओकर बहिन रेबनीक संग बलात्कार करबाक प्रयास कंलथिन । ई बात ओकरा लेल असहय छलैक । से जखन ओ बहिन सँ भेल बलात्कारक प्रतिकारक क्रममे फूल बाबू लग जाइत अछि आ ओ सहायता करबा सँ हँटि जाइत छथिन तखन ओकर जे प्रतिक्रिया

भेलैक से ओकर भावी जीवनक मार्ग निर्धारण करैत अछि । ओ फूल बाबूक संबंध मे कहैत अछि-''सोराजी भऽ गेल छलाह तें की, छलाह तऽ आखिर बाबूए भैया ने ! गरीब-गुड़बाक दुःख ई लोकनि की बुझथिन । सच बुझऽ भाय तऽ हमरा मोन मे ई बात बैसि गेल जे जेना अंगरेज बहादुर सँ सोराज लेबाक हेतु बाबू भैया लोकनि एक भऽ रहल छथि, हल्ला गुल्ला आ झगड़ा-झंझट मचा रहल छथि, ओहिना जन-बनिहार, कुली-मजदुर आ बहिया खबास के अपना हकक लेल बाबू भैया सँ लड़ए पड़तैक ।''[17]

इएह ओ सोच थिक जे बलचनमा केँ कांग्रेसी सँ कामरेड बनबैत छैक । मुदा एहिठाम एकटा बिन्दु विचारणीय अछि । प्रश्न अछि जे 'कामरेड' बनबाक लेल आर्थिक कारण महत्त्वपूर्ण होइछ अथवा ओहिसँ भिन्न जातिगत वा अन्य सामाजिक कारण । प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो० हेतुकर झा गरीबक दैहिक शोषण केँ' ओकर इज्जति आ मान-मर्यादा केँ एहि परिवर्त्तनक महत्त्वपूर्ण घटक मानैत छथि ।[18] तखन बात मूलतः फेर समाजक जातीय संरचना बनाम आर्थिक संरचना पर आबि जाइत अछि । जातीय संरचना मे उच्च जातिक लोक निम्न जातिक लोकक, ओ महिला हो वा पुरूष, दैहिक शोषण बरोबरि सँ कऽ रहल अछि । निश्चित रूप सँ ई एकटा पैघ बात थिक । यात्रीजी सेहो बलचनमाक कांग्रेसी सँ कामरेड मे जे संक्रमण भेलैक तकर एकटा महत्त्वपूर्ण कारण ओकर बहिनक दैहिक शोषणक प्रयासकेँ देखौलनि अछि। किन्तु एहिठाम ईहो नहि बिसरबाक थिक जे एहि प्रकारक दैहिक शोषणक ज्ञान बलचनमाकेँ पहिनहुँ छलैक। ओकर जातिक अथवा ओकर माय-दादीक शोषण एहि प्रकारें भेल छलैक। से ओ जनैत छल । मुदा आखिर की बात छलैक जे बहिनक शोषणक बेर मे एकाएक ओ उत्तेजित भऽ गेल । ओकर दृष्टिकोण आ विचारधारा एकटा दोसर दिशा मे जएबाक लेल बाध्य भऽ गेलैक । निश्चित रूप सँ आर्थिक संरचनाक कारणें समाजक जे स्थिति छल अर्थात् उच्च जातिक धनी-मानी लोक आ हाकिम हुकमक जे एकटा गठबंधन छल ताहि सँ ओ परिचित भऽ गेल छल । दोसर दिस गरीब लोकक जे दयनीय दशा छलैक, ओकर जे शोषण भऽ रहल छलैक ताहू सँ ओ परिचित छल । शोषणक विरोध मे ठाढ़ होएबाक चाही आ बाबू भैयाक कार्यवाहीक प्रतिरोध करबाक चाही, सेहो चेतना ओकरा मे आबि गेल छलैक । यात्रीजी रेबनीक घटनाक उल्लेख एतेक भेलाक बाद करैत छथि । स्पष्ट अछि जे बलचनमाक कामरेड बनबाक तात्कालिक कारण रेबनी-प्रसंग भऽ सकैत अछि, मुदा रेबनी-प्रसंग पर ओहि तरहें उत्तेजित होयबाक कारण निश्चित रूप सँ आर्थिक शोषणक भयंकरता थिक । तें एहिठाम यात्रीजी मार्क्सवादी सिद्धान्तक मूलधारा सँ कनेको हँटैत नहि छथि ।

एहिठाम एकटा आओर तथ्य ध्यान देबाक थिक । बलचनमाकेँ कामरेड शब्दक परिचय पहिल बेर महपुरा गाम मे भेलैक । ओ कहैत अछि–''कामरेड–ई शब्द तऽ हम कहिओ सुननो नहि छलियैक । लाजक खातिर ओहि दिन ओकर मतलब बुझि नहि सकलहुँ, परंच दू दिनक बाद पता चलल जे कामरेडक मतलब छैक लड़ाईक साथी । एके मोर्चाक दू फौजी जवान एक दोसरके कामरेड कहि कऽ सोर करैत छैक। अपना हकक हेतु लड़ए वला हमरा गरीबक लेल कामरेड सँ बेसी कोनो लबड़ा नहि अछि ।''[19] कहबाक प्रयोजन नहि जे कामरेडक छवि आर्थिके पृष्टिभूमि मे चित्रित कएल गेल अछि । इएह छवि बलचनमाक दिमाग मे छैक आ तकरे ओ अनुसरण करैत अछि । ध्यान देबाक गप्प थिक जे महपूरा गामक सदुल्लाह खान बकाश्त जमीन पर कब्जा करऽ चाहैत छलाह । किछु ऐहन जमीन ओ पहिने हथिया चुकल छलाह, तें मोन बढ़ल छलनि । किन्तु, ओहि गामक आ कि ओहि इलाकाक किसान सभ एकर विरोध कएलक आ ओ सभ अपन समर्थन मे एकटा सभा आयोजित कएलक । ओहि सभा मे समाजवादी नेता राधाबाबू छलाह आ हुनका संग छलथिन पटना सँ स्वामीजी, गया सँ शर्माजी, मुजफ्फरपुर सँ मिश्राजी आदि-आदि । मोन पाड़बाक थिक जे ई सभ गोटे किसान सभाक तत्कालीन प्रसिद्ध नेता लोकनिक प्रतीक छलाह । ईहो उल्लेखनीय थीक जे बिहार किसान सभाक झुकाव कांग्रेसी मान्यता सँ हटि कऽ समाजवादी दृष्टिकोण दिस भऽ गेल छलैक । किसान सभाक गतिविधिक विस्तार मे नहि जा कऽ एतबे कहब पर्याप्त होयत जे महपूराक जमींदार आ मजदूरक ओहि संघर्ष मे जे नारा लगाओल गेल से दूटा दृष्टिकोणक सूचक छल । खान बहादुरक लोक नारा लगबैत छल–''महात्मा गांधी की जय ।'' भारत माता की जय !' दोसर दिस नारा लगैत छलैक– ''कमायवला खायत एकरा चलते जे किछु हो', जमीन ककर-जोतए-बोअए ओकर, अंगरेजी राज नाश हो ! जमींदारी प्रथा नाश हो ! किसान सभा जिन्दाबाद, लाल झंडा जिन्दाबाद, इन्किलाब-जिंदाबाद ।''[20] ई नारा सभ दूटा दृष्टिकोणक प्रतिनिधित्त्व करैत छल आ बलचनमा स्वाभाविक रूप सँ दोसर पक्षक लोक छल।

यात्रीजी महपूरा गाममे बकाश्त जमीनक जे लड़ाइ देखौलनि अछि तकर संबंध' हमरा जनैत, तिनकोनमा घटना सँ छैक । यात्रीजीक गाम तरौनी लग 1938-39 ई० मे जमींदार किसानक एकटा भयंकर संघर्ष भेल छल जे एहि उपन्यास मे महपूराक घटना बनि कऽ आयल अछि । अमरीकी महिला लेखिका बेंडी सिंगर तिनकोनमा घटनाक उल्लेख विस्तार सँ कयने छथि । हुनक कहब छनि जे ई आन्दोलन केवल बकाश्त भूमि सँ संबंधित नहि छल, एकर संबंध जमींदारी प्रथाक विरोध सँ छलैक ।[21] तिनकोनमाक जमींदार किसान संघर्ष मे किसान आंदोलनक ओएह रूप छल जे यात्रीजी महपूरा आंदोलन मे चित्रित कएने छथि । जातिविहीन वर्ग चेतना सँ संपन्न गरीब महिला-पुरुष जमींदारी शोषणक विरोध मे आगू बढ़ल छल आ ओकर नारा सेहो ओएह छलैक जे महपूरा मे किसान सभ लगबैत अछि । तिनकोनमा आन्दोलनक दूरगामी प्रभाव जे पड़ल होअए, ओकर तात्कालिक परिणाम कोनो तेहन नहि भेल । महपूरा अथवा आन गाम सभ मे जतऽ कतौ जमींदार-किसान संघर्ष भेल ताहि सभटाक परिणाम सेह भेलैक । बलचनमा पकड़ल आ पीटल जाइत अछि । ओकर हारि होइत छैक।

मुदा, एकटा बात अछि । यात्री उपन्यास मे बलचनमाक मृत्यु नहि देखबैत छथि। बलचनमा जाल मे फँसल अछि–अर्थात् मजदूर-किसान संघर्ष कुचक्र मे पड़ल अछि। ई एकटा तथ्यगत स्थिति थिक । ओहि समय मे संपूर्ण भारत मे जमींदार-किसान संघर्षक जे परिणति भऽ रहल छल तकरे ओ अपना उपन्यास मे प्रतिध्वनित कयलनि अछि। दूटा महत्त्वपूर्ण किसान आन्दोलन (यथा, तेलंगाना आ तेभागा आन्दोलन) ध्यान मे अबैत अछि। दुहु आन्दोलन किसान-मजदूरक संगठित आन्दोलन छल । परन्तु, जहिना तेभागा आन्दोलन (1946-47) अपन लक्ष्य प्राप्त करबा मे असफल भेल तहिना तेलंगाना आन्दोलन (1946-51) सरकारी तंत्रक प्रकोप सँ नहि बचि सकल ।

एहि पृष्ठभूमि मे यात्रीजी लेल ई उचित नहि छलनि जे ओ एकटा काल्पनिक संसार मे विचरण करितथि आ बलचनमा केँ जयमाल पहिरबितथि । किन्तु, बात एतहि समाप्त नहि होइत अछि । एक दृष्टिकोण सँ देखल जाय तऽ बलचनमाक हारि नहि होइत छैक । पकड़यबाक समय मे, अपन जीवनक अन्तिम काल मे ओ एतबे सोचैत अछि–''किसानक आजादी आकाश सँ उतरि कऽ नहि अएतैक । ओ परगट होएत नीचाँ सँ–जोतल धरतीक भुरभुरा ढ़ेप केँ फोड़ि कऽ...।''[22] स्पष्ट अछि जे यात्रीजी एहिठाम साम्यवादी आन्दोलनक भूमिगत दवाब केँ उजागर करैत छथि, एकरा अपन माटिक उपजाक रूप मे प्रस्तुत करैत छथि । ओ **बलचनमा** उपन्यासक प्रस्तुति, घटनाक्रम विन्यास, आ चरित्रक विकास एहि रूप मे देखौलनि अछि जे आंदोलन मिथिलाक माटि सँ जन्म लऽ रहल अछि । ओहिठामक सामाजिक आर्थिक स्थिति एहि आन्दोलनक कारण छैक । वस्तुगत आधारक निरूपण एहि रूप मे करब आ साम्यवादी मान्यताक विवेचनक एहि दिशा केँ इंगित करब यात्रीक एहि उपन्यासक उपलब्धि थिक ।

यात्रीक एहि उपन्यास केँ संपूर्णता मे देखला पर एकटा आओर तथ्य मुखर रूप सँ सामने अबैत अछि । साहित्यक माध्यम सँ इतिहासक रचना कोना भऽ सकैत अछि तकर प्रमाण थिक **बलचनमा** उपन्यास । ओहि कालक स्थिति आ मानसिकता केँ घटना आ ओकर परिणाम केँ यात्रीजी एकटा इतिहासकारक नजरि सँ देखलनि अछि आ ओकरा एकटा साहित्यकारक रूप मे प्रस्तुत कयलनि अछि । हुनक संपूर्ण साहित्य मिथिला कि भारतक आ कि संघर्षरत मनुक्खक इतिहास थिक ।



संदर्भ-ग्रन्थ

1) पी० सी० राय चौधुरी, **बिहार जिला गजेटियर, दरभंगा,** पटना,1964, पृ०-452
2) वएह, पृ०-453
3) विजय कुमार ठाकुर एवम् अशोक अंशुमान (सं०), **पीजेन्ट्स इन इंडियन हिस्ट्री I थ्योरेटिकल इश्यूज एण्ड स्ट्रक्चरल इंक्वारीज** मे गिरीश मिश्रक लेख 'सम आस्पेक्ट्स ऑफ चेंजिंग ऐग्रेरियन स्ट्रक्चर इन प्री इंडिपेन्डेंस बिहार' पटना,1996, पृ०-438
4) वएह, पृ०-438-39
5) मनोशी मित्रा, **ऐग्रेरियन सोशल स्ट्रक्चर: कन्टयूनिटी एण्ड चेंज इन बिहार** 1786-1820, नई दिल्ली, 1985 पृ०-227
6) वएह ।
7) वएह, पृ०-215-216
8) फ्रांसिस बुकानन, **एन एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रीक्ट ऑफ पूर्णिया इन** 1809-10 पटना, 1928 , पृ०-439 ।
9) बासुकीनाथ झा, मोहन भारद्वाज (सं०), **मैथिलीक प्रसिद्ध कथा,** पटना, 1984, पृ०-इ (संपादकीय टिप्पणी)
10) पंकज कुमार झा **'ऐटैम्पटेड होमोजेनिटी एण्ड रिजलटेंट फ्रेगमेन्टेशन द बैकग्राउन्ड एण्ड नेचर ऑफ मैथिल महासभा', इंडियन हिस्ट्री** कांग्रेसक 56 सत्र मे प्रस्तुत अभिलेख, कलकत्ता, 1995 ।
11) **वएह ।**
12) पी० सी० राय चौधरी, **वएह,** पृ०-452 ।
13) विजय कुमार ठाकुर, अशोक अंशुमान (सं०), **वएह,** मे महेन्द्र नारायण कर्णक लेख 'राइटिंग्स ऑन पीजेन्ट प्रोटेस्ट्स एण्ड एग्रेरियन रिलेशन्स इन इंडिया, ए ट्रेन्ड एनालसिस', पृ०-109 ।
14) विस्तृत विवरण लेल देखू', **रिर्पोट फ्रोम द फ्लेमिंग फील्ड्स ऑफ बिहार, ए सीपीआइ (एम. एल) डोकूमेंट,** कलकत्ता,1986, पृ०-19, पुनश्च, खगेन्द्र ठाकुर, **कविता का वर्त्तमान** इलाहाबाद, 1992, पृ०-73 ।

15) किसान आंदोलनक विषय मे विस्तृत जानकारीक लेल देखू, स्टीफन हेनिंग्घम, **पीजेन्ट मूवमेंट्स इन कोलोनियन इंडिया, नोर्थ बिहार** 1917-1942, कैनबरा, 1982, पुनश्च, कौशल किशोर शर्मा, प्रभाकर प्रसाद सिंह, रंजन कुमार (सं०) **पीजेन्ट स्ट्रगल्स इन बिहार** 1831-1992, **स्पौन्टेनिटी टू औरगेनाइजेशन** मे पी० कं० शुक्लाक लेख, 'इंडिगो पीजेन्ट प्रोटेस्ट इन नोर्थ बिहार, 1867-1916, पटना, 1994, पृ०-48-64 पुनश्च सुनील सेन, **पीजेन्ट मूवमेन्ट्स इन इंडिया मिड नाइनटिंथ एण्ड टवेन्टियथ सेंचुरी,** कलकत्ता,-1982 ।
16) यात्री **बलचनमा,** कलकत्ता, 1967, पृ०—73 ।
17) वएह, पृ०-81 ।
18) हेतुकर झा, (एह० एल०) सोशल स्ट्रक्चर एन्ड एलाइनमेंट्स ए केस स्टडी ऑफ **रूरल बिहार,** नई दिल्ली, 1985 ।
19) यात्री, **वएह,** पृ०-158-159 ।
20) **वएह,** पृ०-164-165 ।
21) बेन्डी सिंगर, **क्रिएटिंग हिस्ट्रीज,** ओरल नैरेटिभ्स एन्ड द पॉलिटिक्स ऑफ हिस्ट्री **मेकिंग,** दिल्ली,-1997 ।
22) यात्री, वएह, पृ०-188 ।

पंजाबी कविता

अनुवाद

देशक सुरक्षा

अवतार सिंह पाश

यदि देशक सुरक्षा (क अर्थ) इएह होइत छैक
कि एहि गरिमाहीन जीवन लेल
ई सर्त्त बनि जाय
जे आँखिक डिम्हा मे 'हँ' के अतिरिक्त
कोनो शब्द अश्लील हो
आ मन अगत्ती पलसभक समक्ष
दण्डवत झुकल रहय
तऽ हमरासभकेँ देशक सुरक्षा सँ खतरा थीक
हम तऽ देशकेँ बुझने रही
घर-सन पवित्र वस्तु
जाहि मे ककरो दम नहि घुटैत छैक

मनुक्ख बरिसैत मेघक गुञ्जार-सन गली सभमे बहैत अछि
गहूमक बालि-सन खेत सभमे झुमैत अछि
आ आकाशक विशालताकेँ अर्थ दैत अछि
हम तऽ देशकेँ बुझने रही आलिङ्गनक अनुभूतिक नाम
हम तऽ देशकेँ बुझने रही मेहनति-सन कोनो निस्सा
हम तऽ देशकेँ बुझने रही वलिदान-सन कोनो अनुरक्ति

मुदा यदि देश आत्माक बेगारक कोनो कर्मशाला थीक
यदि देश उल्लू बनबाक कोनो प्रयोगशाला थीक
तऽ हमरा सभकेँ ओकरासँ खतरा थीक
यदि शांति इएह होइत छैक
जे कर्जक पहाड़ी सभ पर ओङ्ढ़ाइत पाथर-सन
टुटैत रहय हमरा सभक अस्तित्व

कि दरमाहाक मुँह पर थुकैत रहय कीमति सभक बेलज्ज हँसी
कि अपने रक्त मे नहायब तीर्थक पुण्य हो
तऽ हमरा सभकेँ शान्तिसँ खतरा थीक !

यदि देशक सुरक्षा इएह होइत छैक
जे प्रत्येक हड़तालकेँ कुचलि कऽ
शांतिक रंग गाढ़ होयवाक छैक
कि शूरता सीमा पर मरबामे प्रतिफलित होयबाक छैक
कलाक फूल राजाक जंगलामे फुलयबाक छैक
वुद्धिकेँ 'हुकुम' के जुआ मे जोता कऽ
भूमिकेँ सिञ्चित करबाक छैक
मेहनतिकेँ राजमहलक द्वारक बाढ़नि बनबाक छैक
तऽ हमरा सभकेँ देशक सुरक्षा सँ खतरा थीक ।

समस्या उएह थीक

मलयाली कविता

—के० सच्चिदानन्दन

ओ सभ जे अखबार पढ़ैत छथि
कहैत छथि
आब हम सभ विना कोनो डर-भयकेँ
चलि फिरि सकैत छी
बजट आ फाइल सभक नीचाँ नुकायल
शैतानक दोमी ओ सभ नहि देखने छथि
समस्या उएह थीक

श्वेत शेरवानी डाटने लोक बजैत छथि
नव जमाना आबि गेलैक अछि
कविता आब प्रतिबंधित नहि होयत

ओ लोकनि अखन धरि
निरक्षर सभक आह नहि सुनने छथि
जिनका सभक कविताकेँ
गरा मोकिकऽ मारि देल गेलनि
समस्या उएह थीक

चश्मावला लोकसभ
जनतंत्रक विजय-उत्सव मना रहल छथि
पुजारी आ जमींदार
एक-दोसराक हाथ गहने चलि रहल छथि
पुलिस आ न्यायाधीशक बीच
जोरदार चोरा-नुकी चलि रहल अछि
इजारेदार महाजनसभकेँ
'डिनर' पर बजा रहल छथि
एकटा उन्निद्र बताहि माउगि
सड़क पर बौआइत अछि
'फर्श' पर शव आ माछीक झुण्ड
दुनू कान मे ठेपी लगा
लोकसभ मुँह फेरि लैत अछि
मुखौटा ठीक थीक
बढ़ियाँ बात
मुदा चेहराक की हो ?
अहाँक चेलासभकेँ हिस्सा भेटि गेल
ठीक बात थीक
मुदा जनताक की होयतैक ?
अहाँ लोकनि अपन लिखबाक आजादी पाबि लेल अछि
बढ़ियाँ बात
मुदा लोक सभकेँ अक्षर-परिचय के कराओत ?
अहाँ सभकेँ अपन हेड़ायल स्वतंत्रता भेटि गेल
बढ़ियाँ बात थीक
मुदा भुखायल
मरबा पर वृत्त बच्चा सभकेँ

रोटि कहिया धरि भेटतैक ?
समस्या उएह थीक
ऑकड़ा सभ अखनो झूठ बाजि रहल अछि
प्रेतसभ अखनो छद्म वेश मे घात लगौने अछि
जे प्रश्न पुछबाक हिम्मति करैत छथि
ओ लोकनि अखनो न्यायक प्रतीक्षा मे छथि
तथापि अहाँ सोचैत छी जे ब्राह्मणक न्यायालय
महारक न्याय नापि सकत ?
अहाँ सोचैत छी जे दिल्लीक धोखेबाज दरबार
क्षुधित संथाल सभ लेल क्रान्तिक कानून बनाओत ?
हरियाणाक किसान
कानपुरक मोचीसभ
वीरभूमिक आदिवासी
आ बिहारक खान मजूरसभ
अहाँकेँ जनतंत्र घुराकऽ देलक अछि
बदलामे
अहाँ ओकरा सभकेँ की देबय जा रहल छी ?
एक जोड़ी बड़द
नहि, ओ समस्त भूमि मँगैत अछि
सिलेटक एकटा टुकड़ी
नहि ओ सम्पूर्ण संस्कृति मँगैत अछि
अहाँ ओकरा सभकेँ लाभक अंश देबय चाहैत
मुदा पूजी कहाँ थीक ?
उमाड़ल गेल एक जोड़ी अश्रुपूरित नेत्र
अखनो हमरा सभकेँ देखि रहल अछि
कोड़ाक मारि सँ रक्त-रंजित पीठ
पहाड़ जकाँ हमरा सभक आगाँ अभरल अछि
एकटा अउँठा जे काटि लेल गेल अछि
अखनो 'ट्रिगर' टटोलि रहल अछि

महोदय
स्वतन्त्रता कोनो पंसारीक दोकान नहि थीक

जे कोनो 'महात्माजी' तकर उद्घाटन कयलनि
कोनो 'माताजी' तकरा बन्न कऽ देलनि
आ कोनो 'पिताजी' ओकरा फोलि देलनि
वर्गसँ ऊपर ई विशाल आसमानक संगीत थीक
एकटा मृत्यु जे हिमालय सँ भारी होइछ
एकटा जिनगी जे प्रशान्त महासागरो सँ गहींड़ होइछ
ई अहाँ कहियो नहि बूझब
इएह समस्या थीक
स्वतंत्रता
हँ, स्वतंत्रते समस्या थीक

तैयो हम

बंगला कविता

—विपुल चक्रवर्त्ती

हमर दुनू पैर काटि दे
तैयो हम चलबौ
अपन रस्ता पर

हमर दुनू हाथ काटि दे
तैयो हम बजयबौ
अपन धुनि

हमर दुनू आँखि बहार कऽ दे
तैयो हम देखबौ
अपन सपना

आगि चाही

—मुरारी मुखोपाध्याय

प्रेम मे चन्द्रमा नहि बन
बनि सकय तऽ सूर्य बनि कऽ आ
हम ओकरा सँ उत्ताप लऽकऽ
अन्हारक जंगल मे आगि लगा देब

प्रेम मे धार नहि बन
बनि सकय तऽ बाढ़ि बनि कऽ आ
हम ओहि आवेग केँ बढ़ा कऽ
निराशाक बान्ह तोड़ि देब

प्रेम मे फूल नहि बन
बनि सकय तऽ वज्र बनि कऽ आ
ओकर गड़गड़ाहट केँ छातीमे बसा
हम युद्धक खबरि सभ दिशा मे पसारब
प्रेम मे पंछी नहि बन
बनि सकय तऽ तूफान बनि कऽ आ
ओहि सामर्थ्यक बूता पर हम
पापक महला ढहा देब

चन्द्रमा नदी फूल तारा पंछीगणकेँ
किछु दिन बाद जा कऽ निहारब गऽ
अन्हार सँ अंतिम लड़ाइ अखन बाकी अछि
अखन चाही आगि
हमरा सभक एहि कुटिया मे

सभ कविताक रूपान्तरः कुलानन्द मिश्र

मैथिली प्रकाशन–1997

भीमनाथ झा

कविता आ अनुवादक वर्ष

दशकपूर्व मैथिली अकादमीक बन्दी सँ पुस्तक-प्रकाशनमे जे मन्दी आयल, तकर आइ पर्यन्त अन्त नहि भेल अछि । केन्द्रीय साहित्य अकादमीक प्रकाशन-सक्रियता अवश्य अभिनन्दनीय अछि, किन्तु ओकरा तँ बाइसटा भाषा छैक, बाइस तरहक पैबन्दी छैक । ताहूमे टटका कम, ओ बाइसेक फरमाइश पूर करबामे चूर रहैत अछि । रहल व्यक्तिगत प्रकाशन, से कने-मने पहिनहुँ होइत छल, एखनहु होइत अछि । मुदा, एकर समुचित प्रचार-प्रसार नहि भऽ पबैछ । मानि लियऽ, क्यो दिल्लीमे अपन पोथी छपौलनि । तकर जानकारी दरभंगावला, सहरसावला, राँचीवला, झुमरी तिलैयावलाकेँ कोना होउक ? कोनो उपाय नहि अछि । तें, एहि वर्ष, वा कोनो वर्ष, मैथिली मे कुल कतेक पोथी छपल अछि, से क्यो एक गोटा निश्चयपूर्वक नहि कहि सकैछ । ई तँ एक समस्या भेल । दोसर समस्या संहो अछि–पोथीक प्रकाशन-वर्ष लऽकऽ । हम देखलहुँ अछि, जून-जुलाइ धरि जे पोथी छपैत अछि, ताहि मे कतोक मे प्रकाशन-वर्ष पछिले सालक रहैत अछि । अर्थात् मैथिलीक कतिपय पोथी एखन प्रेसक कड़ाहे मे अछि, किछु तँ कड़ाहमे पड़बो नहि कयल अछि, तकरो प्रकाशन-वर्ष रहतैक 1997सैह, भने ओ जहिया कड़ाहसँ बाहर हो ! आब एखन, फरवरी 1998 मे तँ ओकर उल्लेख नहि कयल जा सकैछ । अगिला वर्ष, जहिया 1998 क प्रकाशनक चर्च कयल जायत, तहियो ओकर उल्लेख छुटि जयतैक, कारण ओहिमे तँ प्रकाशन-वर्ष रहतैक 1997।

एक ज्वलन्त उदाहरण । गत नौ नवम्बरकेँ पटनामे एक महत्त्वपूर्ण पोथीक लोकार्पण भेल–मैथिली कथाकोश । डॉ० मेघन प्रसादक ई विलक्षण शोधग्रन्थ थिकनि जाहिमे 1915 सँ 95 धरिक प्रत्येक कथा आ कथाकारक कोश तैयार कयल गेल अछि । छपिकऽ आयल अछि तँ ई नवम्बर '97 मे, किन्तु प्रकाशन-वर्ष छैक एहिपर 1996 । तैं, एकर चर्चा ने 1996 क प्रकाशनक क्रममे भेल होयत, ने '97 क प्रकाशनक क्रममे होयत।

किन्तु, हम एकर चर्च 1997 क प्रकाशनक क्रममे कऽ रहल छी । आ, एकर गुणवत्ता एवं महत्ताक कारणें सर्वप्रथम एकरे चर्च कऽ रहल छी ।

मैथिली कथाकोश दू खण्ड मे विभाजित अछि । पहिल खण्डक नाम थिक अनुसन्धान तथा दोसरक आलोचना । पहिल खण्ड तीस पृष्ठक वृहद भूमिकासँ शुरू भेल अछि, जाहिमे 1915 सँ 95 धरि मैथिलीमे प्रकाशित कथाक प्रसंग अनेक तथ्यक खुलासा कयल गेल अछि । मैथिलीक पहिल कथा कोन थिक, ताहि प्रसंग विभिन्न विद्वानक दृष्टिकोणक समीक्षा करैत अद्यावधि दुर्लभ कथा 'मोहिनी मोहन' केँ, जे जीवनाथ मिश्र प्रसिद्ध पुलकित मिश्र काव्यतीर्थक लिखल थिकनि आ जकर प्रकाशन 1315 साल (1907-8ई०) मे भेल छलैक, पहिल खण्डक अन्तमे पुनर्मुद्रित कऽ पाठकक समक्ष आनल गेल अछि ।

कोन वर्षमे कतेक कथा प्रकाशित भेल, एके शीर्षक आ से कोन-कोन सँ कतेक कथाकार आ से के-के कथा लिखलनि, कोन-कोन कथा कतेक बेर छपल अछि, कोन-कोन कथाकारक कतेक-कतेक कथा प्रकाशित छनि आदि अनेक दृष्टिकोण सँ विचार कयल गेल अछि । विचारक क्रममे कोशकारक ध्यान आनो बिन्दु पर जाइत छनि, यथा–मैथिली साहित्यक निर्माण मे तथाकथित उच्चवर्गक एकाधिकारक नारा उछालल जाइत अछि, किन्तु डॉ० प्रसाद, जे स्वयं ब्राह्मणेत्तर वर्गक थिकाह, अपन अनुसन्धानक क्रममे जे निष्कर्ष बहार कयलनि अछि, अवश्य कथे धरि हुनक निष्कर्ष सीमित छनि, तकर खुलासा, भूमिकामे, एहि शब्दमे करैत छथि–

"मैथिली भाषा-साहित्यपर तथाकथित उच्च जातिक भाषा होयबाक गम्भीर आरोप क्रमशः बढ़ैत जा रहल अछि । किन्तु मैथिली कथा-साहित्यक गम्भीर अध्ययन कयलाक पश्चात किछु एहन प्रामाणिक तथ्य सोझाँ अबैत अछि जे एहि आरोपकेँ पूर्णतः तँ नहि किन्तु अंशतः अवश्य खण्डित करैत अछि । मैथिली कथा-साहित्यक अनुसन्धानसँ ई प्रमाणित होइत अछि जे दर्जनो एहन तथाकथित गैर उच्चजातिक कथाकार छथि जे रचनारत देखल जाइत छथि आ जनिक कथा-रचना मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भऽ पाठकक सोझाँ आयल अछि । मैथिलीमे उच्च जातिसँ भिन्न किछु एहनो कथाकार छथि जे अपन कथा-संग्रहक संग मैथिली साहित्यक इतिहासमे अपन महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित करौने छथि । उपर्युक्त कोटिक कथाकार लोकनिमे सर्वाधिक लोकप्रिय ओ प्रतिनिधि कथाकार सुभाषचन्द्र यादवक संग-संग शशिकान्त, राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' राजाराम प्रसाद, योगेन्द्र प्रसाद साह 'नेपाली', जीवछ महतो, विन्देश्वर मण्डल, गंगा प्रसाद मण्डल, रामसेवक महथा प्रमुख छथि । एकर अतिरिक्त अन्य कथाकार

कऽ प्रकाशित करायब ओहि कवयित्रीक स्मृति केँ संजोगिकऽ रखबाक तथा आगत पीढ़ी केँ हुनक अवदान सँ अवगत करयबाक हेतुएँ स्वागतयोग्य प्रयास थिक । हुनक कवितामे जीवनक संघर्ष ओ वेदना, एकाकीपन ओ आत्ममन्थनक भावना सघनतासँ मुखर भेल अछि–

'दर्द' बजलासँ व्यथा कटैछ नहि
उपहासास्पद भऽ जाइछ
दर्द पीलासँ ओ मोती बनि जाइछ
आ हम अपन बहुमूल्य मोती अपने संग राखब

(पृ०–71)

सुस्मिता पाठक लगभग दू दशकसँ कथा-कविता लिखैत छथि तथा समकालीन लेखिकाक बीच पूर्ण परिचित-चर्चित छथि । धुरझाड़ कविता लिखनिहारि एहि कवयित्रीक चिर प्रतीक्षित पहिल संग्रह 'परिचिति' मैथिली काव्यप्रेमी पाठककेँ पर्याप्त आह्लादित कयलक । तीन खण्डमे विभक्त कुल छप्पन गोट कविता संगृहीत अछि–पहिल खण्डमे चौबीस तथा दोसर आ तेसर खण्डमे सोड़ह-सोड़ह । प्रेम, पीड़ा, परितापक सघन मार्मिक अभिव्यक्ति मे सुस्मिताक कविता बेसी सफल भेल अछि। अस्पष्टताक दोष सँ मुक्त, समुचित शब्दावली मे सुगुम्फित स्वानुभूतिसँ युक्त श्रीमती पाठकक कविता सहजता सँ मनकेँ मोहि लैत अछि । द्रष्टव्य निम्नांकित काव्यांश–

सपनाक की
ओकरा तँ आँखिमे
उतरबाक छैक
भोगबाक अछि हमरा
दृष्टिक विभीषिका

(पृष्ठ–61)

कवयित्रीक एक आर परिचिति चित्रकारक रूपमे सेहो छनि, से संग्रह मे प्रकाशित चारू चित्र घोषित करैत अछि ।

डॉ० रेवतीरमण लाल नेपालीय मैथिलीक जानल-मानल हस्ताक्षर छथि जनिक कथा आ साक्षात्कारक दू गोट संग्रह तँ पूर्वमे आबि गेल छल, एहि वर्ष 'काव्य-प्रवाह' नामक काव्य-संग्रह आयल अछि । विविध भावबोध, रसबोध तथा समकालीन बोध सँ युक्त एकतीसो कविता सुपाठ्य अछि आ किछु तँ बेश प्रभावित करैत अछि ।

डॉ० उमारमण झाक 'चारू आश्रम' मे ब्रह्मचर्य गृहस्थ वाणप्रस्थ एवं संन्यास अवस्थासँ सम्बद्ध छन्दोबद्ध पद्यचयक संचय अछि । बालसाहित्य सँ बृद्धसाहित्य धरि शृंगार हास्य करूण आदि अनेक रस समरस भऽ गेल अछि, संगहि कविताक माध्यमे एहिमे अक्षर शिक्षा लोकोक्ति लोकलक्षण एवं नीतिवचनक प्रवचन कयल गेल अछि । तहिना, विश्वनाथ झा 'विषपायी'क 'निशीथिनी' देखि पहिने त भ्रम भेल जे ई गद्य-पद्य-संग्रह थिक, किन्तु गओर कयलापर बुझलहुँ जे गद्यक अठतीस पृष्ठ तँ पोथीक नामक सार्थकतामे व्यय कयल गेल अछि । पद्यांशमे सेहो पैंतीस पृष्ठधरि निशीथिनीक राग सैह अलापल गेल अछि । जे हो, गद्य एवं पद्य दुनूक पाठ बेश मनोरंजक अछि, सामान्य बुद्धिभंजक अछि, अनेक बात दिमाग मे नहि अँटैत अछि, नजरि पाँतीपर छिटकैत अछि, शब्द-शब्द मे पद-पदमे गूढ़ दर्शन भरल अछि, जकर भाव-स्पर्शन हमरा लेल कठिन होइतो पुस्तकक भिन्न-आकर्षण अछि । दास सत्यनारायणक भाव-स्नेहमे छनायल 'विरल तरल तिलकोर'क स्वाद किछु गोटेकेँ जरूरे नीक लगतनि। भक्तीश्वरझा 'सारथी' एकहि संग काव्य आ नाटक दू विधाक पोथी लऽकऽ मैथिलीक प्राचीमे सिन्दूरी आभा छिटकौलनि अछि, जनिक 'झुकल गाछक हरियत पात' चौबीस गोट छोट-पैघ, गेय-पाठ्य, छन्द-स्वच्छन्द सतरंगी कविताक संग्रह थिक, जाहिमे किछु अनगढ़ताक अछैतो कविक भाव-आतुरता आकर्षित करैत अछि । हास्य-व्यंग्यक चित्रणमे कविक मन बेसी रमैत छनि,जे हिनक मूल प्रवृत्ति दिस इंगित करैत अछि । 97 मे एकटा आरो संग्रह 'नाम तँ थिक वैह' (भीमनाथ झा) आयल अछि । एहि मौलिक कृतिक अतिरिक्त तीन गोट संकलित-सम्पादित पोथी प्रकाशित भेल अछि । विद्यापतिक शिव-सम्बन्धी उपलब्ध पचासी गीतकेँ मोहन भारद्वाज 'विद्यापतिक शिवगीत' नामे छपौलनि अछि जाहिमे सभ गीतक स्रोत सेहो दऽ देल गेल अछि । एहि संग्रहक महत्त्व एहि लऽकऽ तँ अछिए जे विद्यापतिक शिवसम्बन्धी सकल गीत पाठककेँ एक ठाम भेटि जाइत छैक, से विशुद्ध रूपमे, एहू कारणे एकर महत्त्व बढ़ि जाइछ जे अनुसन्धाताकेँ मूल स्रोत बैसलठाँ भेटि जाइत छैक । सम्पादक पाठ-भेदपर सेहो विचार कयने छथि आ अपना जनैत शुद्ध पाठक निर्धारण सेहो कऽ देने छथि । तहिना, डॉ० योगानन्दझाक 'मैथिली शाक्त साहित्य' नामसँ भगवती गीतक विलक्षण संग्रह आयल अछि, जाहिमे विद्यापति सँ लऽ श्यामानन्द झा धरि, मध्यकालीन नेपाली कवि समेत, सत्तरि कविक एक सय एकासी गीत संकलित अछि । अधिक गीतक अन्तमे स्रोत सेहो देल अछि । उक्त दुनू संकलन सामान्य पाठक-पाठिका, गायक-गायिका आ विद्वान् गवेषकक हेतु समान महत्त्वक अछि ।

केदार कानन एवं चन्द्रशेखरक सम्पादन मे 'पंचायतीराग' नामें पंचायती राजपर आधारित गीतसभक संकलन कयल गेल अछि, जाहिमे परिचित-अपरिचित पन्द्रह गोट गीतकारक कुल चौबन गीत संकलित अछि। ई प्रायोजित संग्रह थिक जे खास उद्देश्यकेँ दृष्टिमे राखि कयल गेल अछि, आ ताहि दृष्टिएँ एकर महत्त्व तँ छैके, ओहुना लोकधुन पर आधारित गीत-संकलनक संख्यामे ई वृद्धि करैत अछि ततबे नहि, वर्तमान मे होइत द्रुत सामाजिक राजनीतिक परिवर्त्तनकेँ सेहो शब्दांकित कयने अछि। सम्पादन एकर बड़ सुन्दर भेल अछि।

'सगर राति दीप जरय'क त्रैमासिक नियमबद्ध आयोजनक फलस्वरूप एम्हर सात वर्ष सँ (पहिल आयोजन 21 जनवरी 1990 केँ मुजफ्फरपुर मे भेल छल) कथा-लेखनमे बेश गति आयल अछि–गुण आ संख्या, दुनू दृष्टिएँ। किन्तु, जे गति लेखनमे रहल अछि, ओ प्रकाशनमे नहि। कथासंग्रह अपेक्षासँ थोड़ अबैत अछि। एहू वर्ष हमर दृष्टिपथ पर केवल पाँच गोट संग्रह आयल अछि। एकर अतिरिक्त, 'कथादिशा'क महाविशेषांक अछि। यद्यपि ई पत्रिकाक विशेषांक थिक, किन्तु हम एकरा कथासंकलन मानिकऽ सैह चलैत छी।

सभसँ पहिने उल्लेख करऽ चाहब 'गणनायक'क। श्री साकेतानन्द सन् '62 सँ लिखैत छथि। जे लिखलनि से पढ़ल गेलनि, सराहल गेलनि। धुड़झाड़ नहि लिखलनि, मुदा लिखब बन्दो नहि कयलनि। हमरा लोकनिकेँ बराबरि खटकैत छल जे एहन सधल-सफल कथाकार कोनो संग्रह किएक ने दैत छथि। एहि अभावक पूर्ति एहि वर्ष आबिकऽ भेल अछि 'गणनायक'क रूपमे। साकेतानन्द सीटल लोक छथि, हिनक सभ काज सीटल-सम्हरल होइत अछि। लेखन सेहो ई सीटल करैत छथि। प्रस्तुत संग्रहो सीटल छनि। मूलतः छथि ई सीटल चित्रकार। हिनक क्लोजअप पातर-सँ-पातर रेहकेँ, रेसा-रेसाकेँ, छोट-सँ-छोट दाग केँ देखार करैत अछि। ई जनैत छथि जे कोन कोणसँ क्लिक कयने कोन मुद्राकेँ उभारल जा सकैछ। यैह सफाइ हिनक कथामे सेहो भेटैत अछि। ई संग्रह हिनक दसटा फोटोग्राफक अलबम थिक। एहिमे किछु प्राकृतिक चित्र सेहो अछि, मुदा जे विशेष रूपें आकृष्ट करैत अछि से थिक मानव-प्रकृतिक निकटचित्र। मानव-प्रकृतिक जे रहस्य अछि, जे वैविध्य अछि, जे विरोध अछि अथवा विरोधाभास अछि, ताहिमे सँ किछु बिन्दु पर लेखकक ध्यान केन्द्रित

भेलनि अछि, तकरा जीवन्त कऽ देलनि अछि। एहन वरिष्ठ लेखकक पहिल संग्रह थिक, ताहू कारणें एकरा वर्षक उपलब्धि मानल जयबाक चाही।

डॉ० तारानन्द वियोगीक टटका प्रकाशन थिक 'अतिक्रमण' (कथासंग्रह) तथा 'शिलालेख' (लघुकथासंग्रह)। डॉ० वियोगीक तेजस्वितासँ मैथिली-संसार सुपरिचित अछि, हिनक क्रान्तिकारी विचार सर्वजानित अछि, ध्वंस आ निर्माण जे सृष्टिक नियम थिकैक, तकर मर्मकेँ ई नीक जकाँ जानि लेने छथि आ ओकरा कथामे फलीभूत कऽ रहल छथि। भाषापर, शिल्पपर हिनक पूरा अधिकार छनि, कथाकेँ धारदार बनयबाक हिनकामे कौशल छनि तथा चोट करबाक हिनक भंगिमा आकर्षक छनि। अतिक्रमण करितहुँ छथि तँ कटु नहि होइत छथि। एही सोचक हिनक कथासभ छनि, जे नवीन कथा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपज थिक। लघुकथाशास्त्रक ई विशेषज्ञ भऽ सकैत छथि, छथि, किन्तु जे विशेषज्ञता ओकर व्याख्यामे झलकैत छनि, से लघुकथा लेखनमे सभ ठाम जँ हमरा नहियों भेटैत अछि तँ ताहिमे हम अपन पकड़केँ ढील मानैत छी। लघुकथाक संग्रह मैथिलीमे गनल-गुथल अछि, 'शिलालेख'क प्रकाशन एहू दृष्टिएँ स्वागतयोग्य थिक।

एही पीढ़ीक एक आर तेजस्वी लेखक थिकाह रमेश, जनिक एगारह गोट कथाक संग्रह 'समानान्तर' विवेच्य वर्षमे आयल अछि। रमेशक ई दोसर कथासंग्रह थिक, जाहिमे 1991 सँ 97 अवधिक लिखल कथा अछि। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक–एहि सभ क्षेत्रमे होइत द्रुत परिवर्तनक, एहि सभ क्षेत्रमे आयल विकृतिक, एहि सभ क्षेत्र मे व्याप्त कुंठा संत्रासक मानसिकताकें कथासभ बिकछयबाक प्रयास करैत अछि। प्रयोग करब रमेशक लुतुक छनि, से कथामे छनि। प्रयोगकेँ के कहत जे बेजाय थिक। मुदा, प्रयोग परिणाम नहि थिक, उपलब्धि नहि थिक। ई उपलब्धिक माध्यम थिक। रमेशो एहि बातकेँ बुझैत छथिहे। एहि संग्रहकेँ हम कथामे नव-नव प्रयोग मानैत छी, नव-नव उपलब्धि लेल आगाँक संग्रहक प्रतीक्षा करैत छी।

डॉ० राजाराम प्रसादक पहिल प्रकाशन 'कथा-परिधि'क रूपमे भेल अछि, जाहिमे कुल चौदह कथा संगृहीत अछि। राजाराम उदीयमान कथाकार छथि, जे परिपक्व मानसिकता रखैत छथि। हिनकामे अनुभवक वैविध्य छनि, संघर्षक चमक छनि, प्रगतिक ललक छनि, विकासक झलक छनि। भाषा हिनक मजा रहलनि अछि, नव-नव कथ्य बजा रहलनि अछि, किन्तु शिल्पगत सफाइ जे चाही, तकर किछु अभाव छनि। स्वागतयोग्य ई जे लेखनमे आगाँ बढ़बाक प्रबल भाव छनि।''चिन्हल जानल पात्रक चुनाव, गाम-परिसरक स्वभाव ओ संभावित घटनाक प्रभाव अपन अनुभवक आधार पर लेखक

निपुणतासँ कयलनि अछि । चलित भाषा, सुबोध शैली ओ समस्या सामयिकताक अनुकूल अछि ।'' आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क एहि उक्तिसँ हिनक कथाक स्वरूप फरिच्छ होइत अछि ।

पन्द्रह वर्ष पूर्वहिँ 'कथादिशा' (कथा मासिक)क प्रकाशन बन्द भऽ गेल छल। पन्द्रह वर्षक बाद ई छपल तँ कथामहा-विशेषांकक रूपमे । सावा तीन सय पृष्ठक ई अंक सुविख्यात लेखक श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' सँ लऽकऽ अज्ञात लेखिका रश्मि कुमार धरिक एकाबन गोट कथाकारक कथाकेँ समेटने अछि । हमर जानकारीमे एतेक कथाक, सेहो समकालीन कथाक, जीवित चारि पीढ़ीक रचनाकारक नवीनतम कथाक ई पहिल संग्रह थिक । आधुनिक मैथिली कथाक सम्पूर्ण सामर्थ्यकेँ, ओकर व्याप्तिकेँ, वैविध्यकेँ, ओकर सतरंगी आभाकेँ एक संग एक ठाम एहिमे देखल जा सकैछ । प्रभास कुमार चौधरी एवं गंगेश गुंजनक सम्पादनमे प्रकाशित ई पोथी (एकरा पोथिए कहब उचित होयत) समकालीन मैथिली कथाक मानक संकलनक रूपमे बहुत दिन धरि आदर पबैत रहत । मैथिली कथा साहित्यकेँ प्रभास कुमार चौधरीक ई ऐतिहासिक अमूल्य उपहार थिक ।

नाटकक प्रकाशन उत्साहजनक नहि रहल एहि वर्ष । मान्य नाटककार नहि छपलाह। नाटकक तीनटा पोथी देखबामे आयल अछि । पहिल पोथी थिक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क 'महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक' । अन्य नाटकमे अछि–सुरूज उगबासँ पहिने, पेटक खातिर एवं नेताजी आबि रहल छथि । चारू नाटकमे शीर्षक नाटक अछि साढ़े तीन पृष्ठक, पेटक खातिर नौ पृष्ठक, शेष दुनू एहि सँ दीर्घ । महिषासुर मुर्दाबादकेँ एकल नाटक कहल गेल अछि तथा पेटक खातिरकेँ सड़क नाटक । हमरा होइत अछि, नाटककार मंचे टाकेँ नजरिमे रखने छथि । तँ, पाठ्यरूपमे एकर प्रभावपर हुनक ध्यान नहि गेलनि अछि । हम जे ध्यान देल अछि, ताहिमे यैह बुझबामे आयल अछि । मंचक ज्ञान हमरा शून्य अछि । तें, ओहि विषयमे हम किछु नहि कहि सकैत छी । एकरा मंचित देखबाक सौभाग्यो नहि प्राप्त भेल अछि । ठीक यैह विचार हम चन्द्रेश-कृत 'कुकुरू....कू आ कसौटी' (एहि दुनू नाटकक एक संग्रह) पर रखैत छी। एहि दुनू गोटेक नाटकमे पात्र ततेक अधिक अछि संवाद ततेक छोट-छोट अछि, बातकेँ ततेक तीरल गेल अछि, जे हमर पकड़मे किछु खास अबैत नहि अछि ।

पकड़मे अबैत अछि भक्तीश्वरझा 'सारथी'क 'विहुँसैत इजोत' । गांधीजी स्वर्ग सँ अपन देश अबैत छथि, एहि ठामक पतन आ पापाचार देखि खिन्न होइत छथि, किन्तु नवतूरमे देशप्रेम आ दृढ़इच्छाशक्ति केँ देखि मन जुड़ा जाइत छनि । वर्तमान निराशाक

निशान्धकारमे आगत प्रभातक सिन्दूरी किरण, विहुँसैत इजोत, आस्था आ आशाक शुभ सूचना थिक । कथावस्तु एकर स्पष्ट अछि, चरित्रसभ चिन्हारे अछि, प्रभाव नीक छोड़ैत अछि ।

आलोच्य वर्ष मे साहित्य अकादमीसँ तीन साहित्यिक विभूतिपर विनिबन्ध (Monograph) प्रकाशित भेल । डॉ० वेदनाथ झाक सरस कवि ईशनाथझा पर, डॉ० सुरेश्वरझाक जयनारायण झा 'विनीत' पर तथा अंगरेजीमे डॉ० हेतुकर झाक डॉ० अमरनाथ झा पर । तीनू विभूतिक व्यक्तित्व-कृतित्वक पाठककेँ मोटामोटी नीक परिचय भेटैत छैक । हम एक बात सम्पूर्ण योजनाकेँ दृष्टिमे रखैत कहऽ चाहैत छी, उक्त तीनू पोथीकेँ केन्द्र मे राखि नहि, जे एहि योजनाक नाम 'भारतीय साहित्यक निर्माता' (Makers of Indian Literature) मे जे भाव छैक (शब्द Writer नहि छैक, Maker छैक । तकर पालन भेल सभ ठाम नहि पबैत छी । एहि पोथीक लेखक लोकनि सेहो तकरा पूर्ण गंभीरतासँ नहि लेलनि अछि । किछु गोटे चरित नायकपर लेख लिखने छथि तँ किछु गोटे शोधग्रन्थ तैयार कऽ देने छथि । जे-से, ई बात हम मोनोग्राफ प्रकाशनक पूरा सन्दर्भ मे कहलहुँ अछि, खाली एहि वर्षक प्रकाशनकेँ ध्यानमे राखि नहि ।

समीक्षाग्रन्थक प्रकाशन एहि वर्ष लगभग फोंक चल गेल अछि । गोपालजीझा 'गोपेश'क सम्पादनमे 'मैथिली साहित्य मे व्यंग्य', जे चेतना समिति पटनामे 1995 मे आयोजित सेमिनार पेपर्स थिक, छपल नहि रहैत तँ ओहो लगभगक गुंजाइश नहि रहैत। एकर छपबाक सूचना भेटल अछि, पोथी देखबाक सौभाग्य प्राप्त नहि भेल अछि ।

एकटा शास्त्रीय आ एकटा लौकिक संस्कार सँ सम्बद्ध पोथी छपल अछि । डॉ० उमारमणझाक 'शाक्तदर्शन एवं दशमहाविद्या' तीन सय पृष्ठक ग्रन्थ थिक, जाहिमे विषयक नीक जकाँ विश्लेषण अछि । श्रीमती मोहिनीझाक 'मिथिलाक संस्कार' मे जन्मसँ लऽ द्विरागमन धरिक प्रत्येक संस्कारक, ताहि अवसर पर गाओल जायवला गीत आ अरिपनक संग, सुन्दर विवरण देल गेल अछि । मिथिलाक अपन संस्कार, जे शहरी वातावरणमे क्रमशः लुप्त भेल जा रहल अछि, तकरा संचित कऽ प्रचारित करबाक लेखिकाक प्रयास अभिनन्दनीय अछि । नव पीढ़ीक मैथिलानी एकरा हैंडबुक बनाबथि, तकर प्रयोजन बुझि पड़ैत अछि ।

अनुवादक दृष्टिएँ विवेच्य वर्ष उर्वर रहल । साहित्य अकादमी छौ गोट मोट-मोट अनुवाद पोथी प्रकाशित कयलक, जाहिमे तीन उपन्यास, एक साहित्यक इतिहास,एक रवीन्द्र साहित्य तथा एक काव्य-संग्रह थिक । एकर अतिरिक्त, एकटा मोनोग्राफ सेहो। रवीन्द्रनाथक 'गोरा' (अनुवादक सुरेन्द्र झा 'सुमन' पृष्ठ–445) ताराशंकर

बन्द्योपाध्यायक 'आरोग्य निकेतन' (अनुवादक मुरारी मधुसूदन ठाकुर, पृष्ठ-391) एवं लक्ष्मीनन्दन बोराक असमिया उपन्यास 'पाताल भैरवी' (अनुवादक गोविन्द झा, पृष्ठ-308) तीनू विख्यात ग्रन्थ थिक, जाहिमे बादक दुनू साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ सम्मानित सेहो । 'रवीन्द्रनाथक बाल साहित्य'क अनुवाद डॉ० नचिकेता कयलनि अछि। राजस्थानी साहित्यक इतिहासक अनुवादक छथि हरेकृष्ण झा । श्रीकान्त वर्माक प्रसिद्ध हिन्दी काव्यसंग्रह 'मगध'क मैथिली रूपान्तरण केदार काननक कयल छनि। प्रमोद कुमार झा जाहि मोनोग्राफक अनुवाद कयलनि अछि, तकर नाम थिक 'राहुल सांकृत्यायन'। उच्च श्रेणीक अनुवाद आ उच्च श्रेणीक उत्पादनसँ युक्त उक्त पोथीसभक मैथिलीमे सार्थकता तखनहिं जखन हमरालोकनि मे पढ़बाक ललक हो ।

श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क विख्यात बंगला उपन्यास 'श्रीकान्त'क प्रथम पर्वक अनुवाद वर्षक प्रमुख उपलब्धि थिक । व्यासजीक अनुवादसिद्धता असंदिग्ध अछि। मेघदूतक मैथिलीयो अनुवाद अनेक अछि, तकर वर्तमान कड़ीक रूपमे पं० मतिनाथमिश्र 'मतंग'क काव्यानुवादकेँ देखल जा सकैछ । तहिना, राजेंद्र झा 'गीता-परिक्रमा' नामसँ गीताकेँ मैथिली गद्यमे उपलब्ध करौलनि अछि ।

मोटामोटी कहि सकैत छी जे सर्जनात्मक विधा, विशेषत: काव्यक फसिल वर्ष 1997 मे कोनो बेजाय नहि रहल, किन्तु आलोचना एकदम मरहन्ना भऽ गेल । एक फसिला सँ कतेक दिन निमहब ?



एहि अंकक रचनाकार

काञ्चीनाथ झा 'किरण' (स्वर्गीय) मैथिली प्रसिद्ध साहित्यकार आ आन्दोलनी चन्द्रग्रहण (उपन्यास), विजेता विद्यापति (नाटक), कथा-बिल (कथा-संग्रह) कतेक दिनक बाद, किरण कवितावली (कविता-संग्रह), पराशर (खण्डकाव्य) किरण निबन्धावली (निबन्ध-संग्रह) प्रकाशित । पराशर (खण्डकाव्य) लेल साहित्य-अकादमी पुरस्कार सँ सम्मानित जन्मस्थान-धर्मपुर; लोहनारोड, मधुबनी।

मोहन भारद्वाज-मैथिलीक चर्चित आलोचक-समीक्षक एवं सम्पादक/'अनवरत' नाम सँ निबन्ध संग्रह प्रकाशित/सम्पर्क- 5/25 आर. ब्लॉक, पटना ।

शैलेन्द्र कुमार झा--मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार आरोह-अवरोह 'कथा-संग्रह प्रकाशित/अर्थशास्त्रक विद्वान/दी इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला' पुस्तक प्रकाशित एवं प्रशंसित/वृत्ति-अध्यापन/सम्पर्क-राजहाता, काली बाड़ी, कटिहार ।

रमानन्द झा 'रमण'-मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक-सम्पादन/नवीन मैथिली कविता, मैथिली न'व कविता, मैथिली साहित्य ओ राजनीति, अखियासल नामक समीक्षा आलोचना पोथी प्रकाशित मैथिलीक पारम्भिक कथा, श्यामानन्द रचनावली, जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, पं. चेतनाथ झा कृत श्री जगन्नाथपुरी यात्रा पं. तेजनाथ झा कृत सुरराज विजय नाटक, रासबिहारीलाल दास कृत सुमति, जीवछ मिश्र कृत रामेश्वरक सम्पादन। मौलियरक दू नाटक (अनुवाद) एवं भेंट घांट (भेंटवार्त्ता) प्रकाशित । सम्पर्क : फ्लैट सं. 13, आर. बी. आई स्टाफ क्वार्टर, राजेन्द्र नगर, पटना-800016

विभूति आनन्द- मैथिलीक प्रसिद्ध कवि-कथाकार/नाटककार/सम्पादक/उपक्रम पुनर्नवा होइत ओ छौंड़ी (कविता-संग्रह) खापड़ि महक धान (कथा-संग्रह) गाम सुनगैत (उपन्यास) प्रकाशित । अनेक पत्र-पत्रिकाक सम्पादन । सम्पर्क- रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल (मधुबनी)

केदार कानन-मैथिलीक चर्चित कवि-कथाकार-सम्पादक अनुवादक आकार लैत शब्द (कविता-संग्रह) प्रकाशित । राजा राममोहन राय (विनिबन्ध) एवं मगध (श्री कान्तवर्माक कविता संग्रह)क अनुवाद । संकल्प ओ भारती मण्डन पत्रिकाक सम्पादन/सम्पर्क : किसुन कुटीर, सुपौल, सहरसा ।

रमण कुमार सिंह--मैथिलीक युवा कवि, अनुवादक/समीक्षक/सम्पर्क: ग्राम विसनपुर (लाउढ़), सुपौल ।

दिनकर कुमार--मैथिली-हिन्दी मे कविता लेखन/सृजनरत पत्रकार/ सम्पर्क: सुपर मार्केट, दिसपुर, गुवाहाटी-781006 (असम)

उषा किरण खान--मैथिलीक ख्याति लव्य कथाकार/उपन्यासकार हंवनि मे प्रकाशित हसीना मंजिल (उपन्यास) चर्चित प्रशंसित । अनुतरित प्रश्न, दुर्वाक्षत आदि पोथी प्रकाशित । हिन्दी मे संहो कथा-उपन्यासक लेखन मे प्रसिद्ध / सम्पर्क : बन्दर बगीचा, फ्रेंजर रोड, पटना ।

विभा रानी–मैथिलीक चर्चित कथाकार/अनुवादक/हेबनि मे खोह सँ निकसइत (कथा-संग्रह) प्रकाशित। चर्चित बन्द कमरे का कोरस (हिन्दी कहानी संग्रह) मिथिला की लोक कथायें (हिन्दी) पोथी चर्चित प्रशंसित । अनेक पोथीक अनुवाद । सम्पर्क : 504 /बी, लिलाक गार्डन, चारकोप कांरीवली (पश्चिम) मुम्बई–40006

रामदेव झा--मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार/आलोचक/मनुक संतान, धरती माता (कथा-संग्रह) प्रकाशित । पसिझैत पाथर (एकांकी संग्रह) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ सम्मानित । सम्प्रति साहित्य अकादमी, नई दिल्ली मे मैथिलीक प्रतिनिधि । सम्पर्क–कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा ।

कुमार गंगानन्द सिंह (स्वर्गीय)–मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार-उपन्यासकार बिहारक पूर्व शिक्षा-मंत्री, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक पूर्व कुलपति ।

पंकज कुमार झा–इतिहास सँ एम. ए., यू. जी. सी. क फेलोशिप, इतिहास मे विभिन्न शोध-पत्र । दृष्टि सम्पन्न इतिहास लेखकक रूप मे मैथिली मे विभिन्न निबंध प्रकाशित। सम्पर्क–क्वार्टर नं -3, रोड न०-2, आर. ब्लॉक पटना-1।

कुलानन्द मिश्र–मैथिलीक प्रसिद्ध कवि-समालोचक / ताबत एतबे (कविता-संग्रह) प्रकाशित हंवनि मे साहित्य अकादमी सँ काञ्चीनाथ झा 'किरण' (विनिवन्ध) प्रकाशित /सम्पादन ओ अनुवाद कार्य । सम्पर्क–794, शास्त्रीनगर,पटना।

भीमनाथ झा–मैथिलीक प्रसिद्ध कवि-समीक्षक/ख्यातिलब्ध प्राध्यापक/ त्रिधारा, वीणा की फुरैएकी ने, नाम त' थिक वैह (कविता-संग्रह) प्रकाशित । साहित्य अकादमी सँ विविधा (निबंध संग्रह) लेल पुरस्कृत / साहित्यालाप तथा कवि चूड़ामणि मधुपक काव्य-साधना पोथी संहो प्रकाशित । अनेक पत्रिका-स्मारिकाक सम्पादन सम्पर्क:– लक्ष्मी सागर, दरभंगा ।